

ॐ ज्ञानात्

HAPPY NEW YEAR 2025

अब सुनी नहीं - सोचो नहीं - स्वीकारो !

वर्ष: 48 अंक: 1 ♦ 28.2.2025 शुक्रवार (जनवरी-फरवरी)
महाप्रभु रथभिरायण प्रगति संवालन, सेवन और सक्रिय गुणात्मकाज का अद्वितीय करने वाली द्विसिंहिक सर्वांग परिषदा
साकार प्रगट बहु को जो पहचाने, वो परम को पाए



निःनामनानं ब्रह्मरूपं देहनामादिनक्षणाम् । विभाष्य तेन कलन्त्या श्रीनं अक्षितस्तु मर्ददा ॥

पू. अनिलभाई माणेक के नए घर में महापूजा...



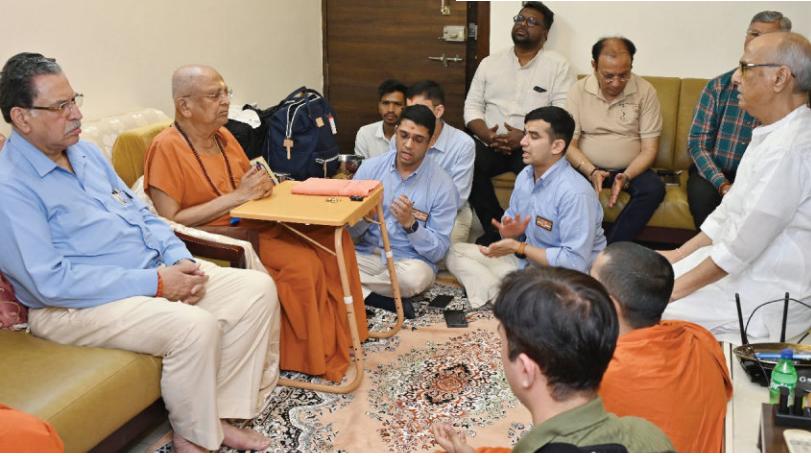
प.पू. वशीभाई के कार्यालय Meso Put. Ltd में यधरावनी...



निर्माणाधीन भवन की यहली संज़िल से मंदिर के प्रार्थना हॉल के प्रवेश द्वार का
प.पू. गुरुजी के वरद हस्तों उद्घाटन...



भक्तों के घर याद्वावनी...



पू. रमेशभाई त्रिवेदी



पू. डॉ. उपेन्द्रभाई व सुपुत्र पू. डॉ. योगिन यटेल को स्मृति भेंट दी....



पू. ओ.पी अग्रवालजी



पू. महेन्द्रभाई महेता - पू. भावेशभाई महेता



पू. तनवी

य.पू. भरतभाई के 71वें प्राक्ट्रयीत्सव की सभा...

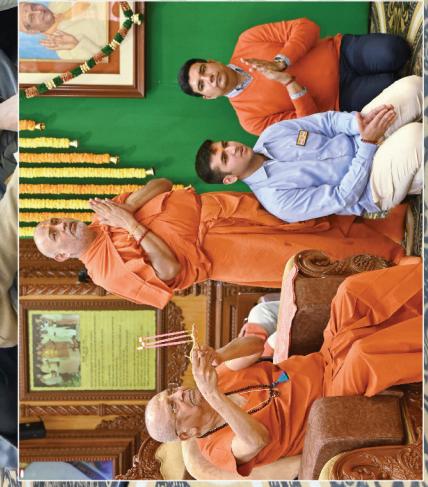
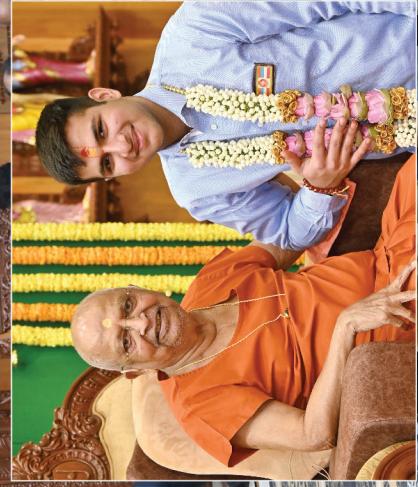


3 फरवरी— गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन थुंडे

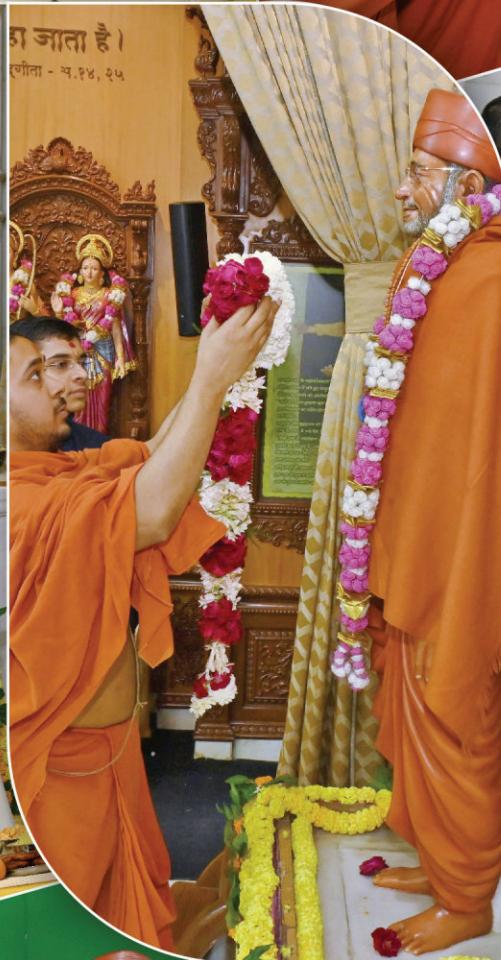
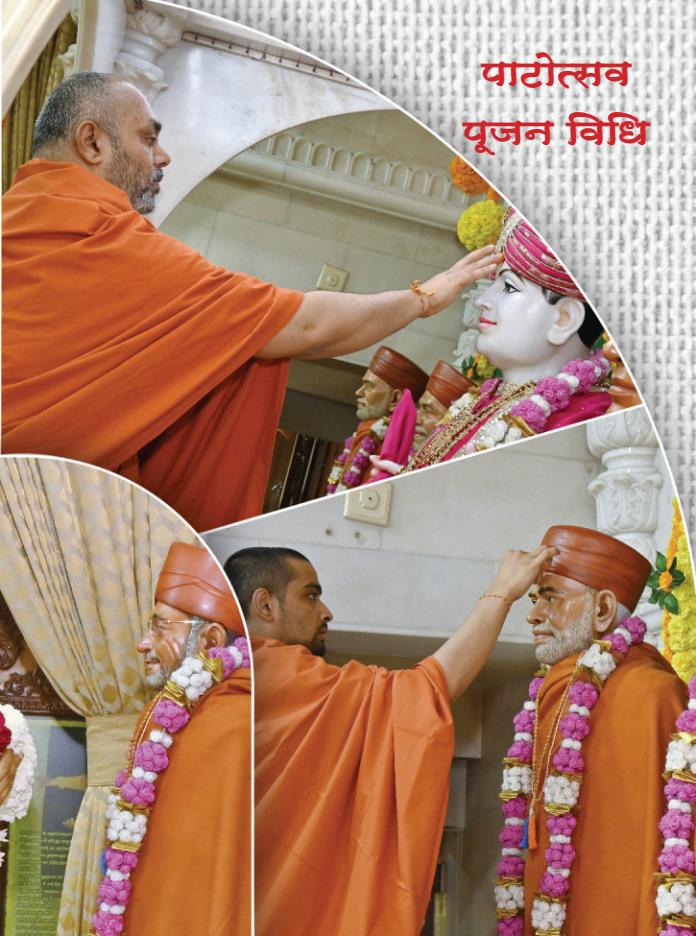
याटोत्सव निमित्त महापूजा...



प्रगट के संबंध वाले मुक्तों में हम दिव्यभाव रखें। लेकिन वो जो करते हैं वो सत्य है ये मानना कठिन हो जाता है। हम बोलेंगे कि इसके बदले इन्हें ये करना चाहिए था। हम ये नहीं कह पाएंगे कि इन्होंने जो कहा वो सत्य। आज के दिन काकाजी से प्रार्थना कि हमारा मन माने या न माने, पर आप हमारे मन को ऐसा tune up कर दो कि सहजता से वो मानें। इतना ही नहीं उसके मुताबिक हमारे जीवन का बताव भी हो...



पाटोत्सव
पूजन विधि



अन्नकूट



‘यरम पूज्य भरतभाई के प्राकट्य वर्ष’ निमित्त यरम पूज्य गुरुजी का मुंबई विचरण

गुरुहरि काकाजी महाराज ने समय - समय पर प.पू. गुरुजी को जो पत्र लिखे, उन्हें ‘ब्रह्मप्रवाह’ पुस्तक में संकलित किया है। दिनांक 22.2.86 के पत्र में उन्होंने प.पू. गुरुजी को लिखा है –

तुम अब केवल मूर्ति में ही रह कर सभी छोटी-बड़ी

शुभ-अशुभ या सत्य सभी क्रियाओं का आरंभ

प.पू. बापा की सतत स्मृति, ध्यान और दृढ़ चिंतन करके,

फिर प्रतीक्षा करके – जो प्रेरणा हो या अंतः प्रेरणा हो वैसे करना...

87 वर्ष की आयु में 14 नवंबर 2024 को pacemaker के operation के बाद अभी तीन मास ही हुए थे, पर प्रत्येक क्षण प्रभु की प्रेरणा से जीवन जीते प.पू. गुरुजी ने Doctors से सहमति लेकर, प.पू. भरतभाई के प्राकट्य पर्व निमित्त मुंबई जाने के लिए 25-26 जनवरी से रट लगाई। संतों, सेवकों, प.पू. दीदी-बहनों सहित करीब 25 मुक्तों को साथ लेकर **28 जनवरी** की दोपहर की flight से मुंबई के लिए रवाना हुए। सायं 6:30 बजे तक घाटकोपर में रहते प.पू. अनिलभाई माणेक के नए घर पर पहुँचे। यह कार्यक्रम बनाते समय प.पू. गुरुजी ने प.पू. वशीभाई, प.पू. अनिलभाई माणेक तथा प.पू. ओ.पी. अग्रवालजी के परिवार को व्यवरथा के लिए सूचित करवाया था। परंतु, प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई तथा अन्य सभी को surprise देने की भावना से उन्हें बताने के लिए मना किया था। अतः प.पू. अनिलभाई माणेक ने प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई तथा प.पू. वशीभाई को अपने नए घर पर धुन कराने हेतु आमंत्रित किया। ये सभी जब उनके घर आए और वहाँ प.पू. गुरुजी को विराजमान देखा, तो आश्चर्यचकित होकर भावविभोर हो गए।

पुरानी स्मृतियाँ करते हुए प.पू. गुरुजी ने अपना मुंबई आने का हेतु और प.पू. भरतभाई के माहात्म्य का निम्न प्रकार से दर्शन कराया –

दर्शन अमीन के एक प्रसंग ने मुझे यहाँ आने के लिए प्रेरित किया। काकाजी के एक साक्षात्कार दिन पर मैं उनके दर्शन करने जाने के लिए सोनावाला-ताड़देव की सीढ़ियाँ चढ़ रहा था। मेरे आगे दर्शन बहुत तेज़ी से जा रहा था। मैंने उससे पूछा – इतनी जल्दी-जल्दी तू किस लिए जा रहा है? उसने फट से कहा – काकाजी का साक्षात्कार दिन है, मुझे तो जाना ही पड़े।

इस प्रसंग की स्मृति ने मुझे यह सिखाया कि काकाजी के स्वरूप भरतभाई का जन्मदिन आ रहा है, तो मुझे पवर्झ जाना ही चाहिए। इसी भावना से मैं आज यहाँ उपस्थित हुआ हूँ।



गुणातीत स्थिति तथा गुरु पद पर आसीन होते हुए भी, प्रति क्षण एक साधक की अदा से जीते प.पू. गुरुजी की यह भावना सुन कर उपस्थित सभी को प.पू. भरतभाई क्या विभूति हैं, उसका एहसास हुआ। रात को सभी ने प्रसाद लिया और विश्राम में गए।

29 जनवरी को प.पू. गुरुजी पूरा दिन पू. अनिलभाई माणेक के घर पर ही विराजमान रहे। उनके बड़े सुपुत्र पू. मिलन - पुत्रवधू पू. भूमि की शादी की सालगिरह के उपलक्ष्य में सायं 6:30 बजे प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई तथा प.पू. वशीभाई के सान्निध्य में महापूजा का आयोजन था। दिव्यताभरे वातावरण में महापूजा एवं पूजन - हार विधि संपन्न हुई। गुणातीत स्वरूपों ने निम्न आशीष वर्षा करके धन्य किया —

प.पू. गुरुजी

आशीष देने की बात आई, तो वो पहले से मिल चुके हैं। इस आवास का नाम ही 'आत्मीय' है। भगवान के भक्तों में आत्मबुद्धि और प्रीति ही मोक्ष का असाधारण - विशेष कारण है। तो, ये आशीर्वाद के बाद कुछ कहने को शेष नहीं रहा। मेरी यही एक भावना है कि मिलन और मेहुल इस आशीष को बढ़ाते रहें। वो बढ़ाने का तरीका ये है कि मुंबई में रहते हो, तो वशीभाई, भरतभाई के साथ पक्की मैत्री की दृढ़ता करना। काकाजी कहते थे—मित्रता नहीं, मैत्री! 'मित्रता' मानसिक है, कभी भी मनमुटाव होने या किसी भी कारण टूट सकती है। जबकि 'मैत्री' कभी टूटती नहीं, कैसे भी संजोगों में बरकरार रहती है। तो, ऐसी मैत्री की दृढ़ता करके परिवार और समाज में अपने वर्तन, हावभाव और क्रिया-कलापों से आत्मीयता का आनंद प्राप्त करते रहें, यही इच्छा।

प.पू. दिनकर अंकल

ये अक्षरधाम की सभा हो रही है और जैसे वशीभाई कहते हैं तो चमत्कार हो गया कि तीन दिन पहले तो पता नहीं था कि गुरुजी यहाँ पधारेंगे और कल भरतभाई को *birthday* का *surprise* दे दिया। गुरुजी ने कल अच्छी बात बतायी थी कि एक बार काकाजी का 3 फरवरी का उत्सव ताड़देव में मना रहे थे। तब वे भी दिल्ली से आए थे। गुरुजी जब ताड़देव की 84 सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे, तब उनके आगे घनश्यामभाई अमीन का बड़ा बेटा दर्शन speed में चढ़ रहा था। गुरुजी ने सहज में बोला कि तू इतनी speed में क्यों जा रहा है। वो ज़ोर से बोला—**आज काकाजी का तीन फरवरी का function है, मुझे तो जाना ही चाहिए।** गुरुजी ने भी वैसा ही सोचा कि काकाजी स्वरूप भरतभाई का प्राकृत्य दिन है, मुझे तो मुंबई जाना ही है। गुरुजी जब यह बात



बता रहे थे, तब उनकी ये अदा मुझे बहुत याद रह गई... गुरुजी की तबीयत देखकर मुझे भी बहुत आनंद हो गया कि गुरुजी की उम्र reverse हो रही है, वे young होते जा रहे हैं। धन्यवाद है हमारे भाइयों-सेवकों को कि गुरुजी की बहुत अच्छी देखभाल करते हैं। वैसे तो गुरुजी उनकी रख रहे हैं; पर वो भी गुरुजी की रखते हैं, भाव से सेवा करते हैं। अनिल मासा के इस भव्य मंदिर का 'आत्मीय' नाम गुरुजी ने बहुत अच्छा रखा। हरिप्रसादस्वामीजी का यह *pet word* है। यह शब्द सुनकर खूब नए लोग भी स्वामीजी के पास दौड़ के आते थे कि आपने बहुत अच्छा आत्मीय समाज तैयार किया है। ऐसा आत्मीय मंदिर यहाँ बना, वो बहुत भाज्य की बात है। हमारे अनिल मासा का स्वभाव बहुत मीठा है। सबके साथ वो जुड़ जाते हैं। हमारे साहेबजी के सेवक अश्विनभाई या प्रेमस्वामीजी तो मासा की पहचान *dance* से करते हैं। वे ever young and energetic हैं और अगर ओ.पी. अग्रवालजी उनके साथ हो जाएं, तो कोई भी प्रसंग उमंग से भर जाता है। गुरुजी के बहुत लाड़ले हैं और उनका प्रेम व भक्तिभाव हमें बहुत आनंद कराता है। ऐसे ही सारा कुटुंब है। जब हमारे नक्षत्र को गुरुजी दीक्षा दे रहे थे, तो हमारे साथ नीरवजी (निमाई) भी अनायास जुड़ गए। पूर्व के कैसे मुक्त हैं कि अंदर से ऐसा भाव आ गया कि मुझे ऐसा ही जीवन जीना है। नक्षत्र भी बहुत प्यारा लड़का है, वो भी गुरुजी को राजी करने के लिए जीता है। उससे कइयों को प्रेरणा मिलती है। कितने ही नए बच्चे इन्हें देखकर जुड़ जाते हैं। मैं कल ही देख रहा था कि गुरुजी के सामने बैठ कर नक्षत्र उनके दर्शन कर रहा था, मगर मुझे तो नक्षत्र का दर्शन हो रहा था कि वो कितना बढ़िया दर्शन कर रहा है! गुरुजी के साथ उसकी कैसी प्रीति है? ऐसे छोटे बच्चे भी कितनी ऊँची समझदारी से जीते हैं, ये ही हमारे सत्संग की पहचान हैं। गुरुजी ने कितने अच्छे आशीर्वाद दिए कि माणेक परिवार यहाँ रहते हुए पवई मंदिर से मित्रता से नहीं मैत्रीभाव से जुड़ जाए, इससे वे राजी होंगे। पत्र संजीवनी पुस्तक के पहले पन्जे पर काकाजी ने 'मित्रता' और 'मैत्रीभाव' में क्या फ़र्क है, उसके बारे में बताया है। 'मित्रता' के अंदर मन रहता है और 'मैत्रीभाव' में मन से परे की बात है। मित्रता के अंदर कभी भी divorce हो सकता है, मगर मैत्रीभाव में नहीं। मैत्रीभाव में थोड़ा-सा भी फ़र्क पड़े तो divorce नहीं, सीधा मरण होता है। यह बहुत बड़ी बात काकाजी ने बताई है। गुरुजी ने वो आज आशीर्वाद लप्प में दी। आप सब वैसे भी भरतभाई-वशीभाई से जुड़े हुए हो ही, मगर आज गुरुजी के आशीर्वाद से और भी आत्मीयता-सुहृदभाव बढ़े और हम काकाजी, गुरुजी व सभी गुणातीत स्वरूपों को राजी करें यही हमारी साधना, अंतिम ध्येय और उपासना है। यह पक्की हो जाए यही प्रार्थना।

आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद सबने प्रसाद लिया और अपने गंतव्य स्थान पर गए।



88

30 जनवरी की सुबह प.पू. गुरुजी एवं सभी ने पू. अनिलभाई माणेक के घर नाश्ता किया। तत्पश्चात् लाल बाग area में स्थित प.पू. वशीभाई के office Meso Pvt Ltd गए। Meso के द्वार पर सुन्दर रंगोली बनाई थी। यहाँ के Director पू. केतनभाई शेठ ने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण करके आरती की और चंदन से पूजन करवा कर सबका स्वागत किया। प.पू. वशीभाई के cabin में विराजमान होने के बाद प.पू. गुरुजी ने धुन कराई और कहा— जैसे गणेश चतुर्थी के समय लाल बाग के गणेशजी राजा कहे जाते हैं, वैसे ही हमारे लाल बाग का राजा वशी है...

सच, गुरुहरि काकाजी महाराज को अखंड धार कर व्यावहारिक कार्य करते हुए प.पू. वशीभाई ने अपनी साधुता से office में भी सत्संग का अनोखा परिचय दिया है। दूसरी ओर इतने बड़े status पर office के कार्य में अत्यंत व्यस्त होने के बावजूद भी, भक्तों के कल्याण हेतु वे 24 घंटों में से 12 घंटे भजन करते हैं। गुरुहरि काकाजी एवं उनके भक्तों के प्रति उनकी भक्ति को शत्-शत् नमन हैं।

Meso Office में अल्पाहार लेने के पश्चात् मुंबई में प.पू. गुरुजी के प्रासादिक स्थानों का दर्शन करने के लिए रवाना हुए। Mahalaxmi Race Course, Haji Ali Dargah के रास्ते से गुज़रते हुए, Jai Hind College और K. C. College गये। इन दोनों Colleges में प.पू. गुरुजी ने पढ़ाई की थी। यहाँ से J.J. and Sons की दुकान पर गए। प.पू. गुरुजी यहाँ के बने चप्पल-जूते पहनते। फिर Bhatia Hospital का बाहर से दर्शन करने गए। इस प्रासादिक स्थल पर गुरुहरि योगीजी महाराज एवं गुरुहरि काकाजी महाराज ने देहत्याग किया था। यहाँ से प.पू. गुरुजी के पूर्वाश्रम के घर Mayekar Building, Lamington Road का दर्शन करते हुए, Deshmukh Lane, Opera House को पावन करते हुए ‘प्रकाश दुर्ग मंदिर’ पहुँच कर पियुष पिया। रात को प.पू. वशीभाई से जुड़ी पू. रसिका देशपांडे के पति पू. संकेत मोंगे के रेस्तरां ‘चाफेकर’ 395, Mangaldas House, Lamington Road गए। यहाँ धुन करने के बाद प्रसाद लेकर पू. अनिलभाई माणेक के घर घाटकोपर लौटे।

31 जनवरी को नाश्ता करने के बाद सभी पर्वई मंदिर में प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई के सान्निध्य में महापूजा का लाभ लेने गए। दोपहर 12 बजे के बाद प.पू. गुरुजी पधारे। प.पू. भरतभाई और प.पू. वशीभाई ने निर्माणाधीन भवन की पहली मंज़िल से मंदिर के प्रार्थना हॉल को जोड़ते द्वार को सर्वप्रथम प.पू. गुरुजी के वरद हस्तों से खुलवा कर उस प्रवेश द्वार का उद्घाटन करवाया। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी प्रार्थना हॉल में विराजमान हुए और महापूजा की सभा के समापन के बाद निम्न आशीर्वाद दिया—



वशीभाई ने बोला कि गुरुजी आशीर्वद दें। सच कहें, तो भरतभाई, वशीभाई, हरखचंद, राजू, अश्विन सब आशीर्वद लेकर ही बैठे हैं और तभी तो आज का ये नज़ारा हमें देखने को मिला है। इससे ऊपर तो कोई आशीर्वद में देने वाला नहीं, जो काकाजी ने दिया है। हम इनके पदचिह्नों पर चलते रहें। संयुक्त रूप से सारे गुणातीत समाज में अपना ये परवर्ष का centre सुहृदभाव, एकता और संयुक्त रूप से एकता का प्रतीक बना रहे। काकाजी को अमरत्व प्रदान करता हुआ कि काकाजी अमर हैं, इस भावना को प्रज्वलित रखते हुए परवर्ष का मंडल खिलता रहे—सबको प्रेरणा देता रहे यही सबको आशीर्वद हैं।

आशीर्वद देने के बाद प.पू. गुरुजी ने **Guruhari Kakaji Maharaj Social and Spritiual Welfare Centre** के **Model** का उद्घाटन किया। यहाँ दोपहर को प्रसाद लेने के पश्चात् गोरेंगांव में पू. रमेशभाई त्रिवेदी के घर गए। प.पू. गुरुजी ने यहाँ थोड़ी देर आराम किया।

सायं अल्पाहार करके सभी पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर अंधेरी गए। परवर्ष से पू. दिनकर अंकल भी वहाँ पधारे। पू. ओ.पी. अग्रवालजी जिस Society में रहते हैं, उसके Garden में छोटी सभा का आयोजन रखा था। धुन-भजन के बाद प.पू. दिनकर अंकल ने निम्न आशीर्वद दिया—

31 जनवरी, आज का दिन बहुत अच्छा है। जिन्होंने बोवासणवासी अक्षरपुरुषोत्तम संस्था की शुरूआत की, उन शास्त्रीजी महाराज का आज तारीख के मुताबिक्र प्राकट्य दिन है। तीन दिन बाद बरसंत पंचमी आएगी, तब उनका तिथि के मुताबिक्र प्राकट्य दिन है। माघ शुक्ल द्वितीया के अनुसार 1957 में आज के दिन योगी महाराज ने महंतस्वामीजी को पार्षदी दीक्षा दी थी। ऐसे पवित्र दिन तारीख के मुताबिक्र हमारे परवर्ष मंदिर के संत भरतभाई का प्राकट्य दिन है। इस निमित्त गुरुजी दिल्ली से करीब 30 भक्तों को लेकर दो दिन पहले आए... गुरुजी ने बहुत अच्छी बात बताई कि भरतभाई का काकाजी के साथ का जो संबंध है, उस संबंध से हमें काकाजी को राजी करना है। इतने बड़े होकर भी गुरुजी कितनी विनम्रता से भक्तों में ऐसा सुहृदभाव उदित करते हैं।

3 फरवरी 1952 को गोंडल मंदिर में बापा ने काकाजी को 72 घंटों की समाधि कराई थी। उसमें उन्होंने जैसे हम एक-दूसरे को देख रहे हैं-मिल रहे हैं, ऐसे स्वामिनारायण भगवान का दर्शन करवा कर साक्षात्कार करवाया था। वो हम हर साल मनाते हैं...

काकाजी गुजरात से हैं और पढ़ाई के लिए Mombasa (Africa) गए थे। वहाँ से United Kingdom जाकर London School of Economics में पढ़ने गए थे।



88

एक बार लंदन में किसी हरिभक्त ने काकाजी से पूछा—

सत्संग में आप ऐसे बड़े संत बन गए हो। तो, आपकी life में Happiest Day कौन-सा?

काकाजी बोले— जब मैं Africa से London गया, तो वो मेरा एक goal था कि अच्छे College में जाना है। तो मैं जो London School of Economics में गया, वो शायद मेरा Happiest Day हो सकता है?

तुरंत ही काकाजी बोले— नहीं। ऐसे तो कितने ही लोग जाते हैं। तो वो दिन अच्छा था, लेकिन Happiest की गिनती में नहीं आया।

फिर काकाजी ने बताया—मुझे अफ्रीका में हर महीने 5 हजार रुपये वेतन की बड़ी अच्छी नौकरी मिल रही थी। पढ़ाई करके मैं भारत लौटा, तो गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि तुम वापिस मत जाओ। तुम भारत में ही रुक जाओ और व्यापार करो। मेरा आशीर्वाद है कि आपका व्यापार बहुत सफल होगा। तो फिर मैं भारत में रुक गया। तीन साल तक नौकरी करके fertilizer के export-import का experience लेकर अपना business शुरू किया। शास्त्रीजी महाराज की कृपा से पहले ही साल में करीब 14 लाख रुपये का फायदा हुआ। तो क्या वो मेरा Happiest Day था?

शास्त्रीजी महाराज का आशीर्वाद मिला वो ठीक है, मगर व्यापार के हिसाब से वो भी Happiest Day नहीं गिना जा सकता। व्यापार के लिए L.C. खुलवाने के लिए मैंने अपने जीजाजी से 51 हजार रुपये उधार लिए। शास्त्रीजी महाराज मुंबई आए हुए थे। वे तो अंतर्यामी रूप से जानते थे कि bank में मेरे 51 हजार रुपये रखे हैं। तो, शास्त्रीजी महाराज बोले कि गढ़ा में मंदिर बन रहा है, उसमें पैसों की बहुत कमी है। आप मुझे कुछ donation दो। काकाजी ने कहा—हम 15 हजार देते हैं। शास्त्रीजी महाराज बोले—आंकड़ा बदल दो, 15 को 51 कर दो। Bank Account में इतने ही थे। पर मैंने और कांतिकाका ने दिल से दे दिया। जब पैसे दे दिए, तो शास्त्रीजी महाराज इतने राजी हो गए कि बोले—दाढ़ु अब तू माँग, तुझे क्या चाहिए? देखो, बड़े पुरुष सामने से बोल रहे हैं कि तू माँग, तुझे क्या चाहिए? कई हरिभक्तों ने कहा कि अब तो आप दो टन सोना माँग लो या तो कुछ बड़ा व्यापार माँग लो। पर मैंने कहा कि मैं whole sale का व्यापारी हूँ, retail का नहीं। ये सब छोटी चीजें हैं। मुझे दो दिन सोचने का टाइम दो। दो दिन बाद मैंने शास्त्रीजी महाराज से कहा कि आपके गुरु भगतजी महाराज खूब राजी हुए थे, तो भादरोऽगाँव में चंदन अर्चा करके भगतजी महाराज ने आपको अपने गले से लगाया था। वैसे ही आप यदि मुझ पर राजी हुए हो, तो मैं आपको चंदन अर्चा करलँ और आप मुझे गले लगाओ।



तो, मुंबई में गुलजारीलाल नंदा के बंगले पर ये इंतज़ाम किया। चंदन के लेप का बड़ा पतीला बनाया गया और शास्त्रीजी महाराज के शरीर पर चंदन लगाने के बाद गले लगे। फिर शास्त्रीजी महाराज बोले कि ये जो हम गले लगे हैं, वो तो धुल जाएगा। शास्त्रीजी महाराज कभी किसी को भी अपना पांव धोने को नहीं देते थे। लेकिन तब सामने से वे बोले कि मेरे पैरों पर चंदन लगाओ और मैं अपने पाँव आपकी छाती पर रखता हूँ। यूँ बहुत बड़ी प्रसन्नता बतायी और ये जो प्रसंग हुआ, वो मेरा *first happiest day* है।

2. शास्त्रीजी महाराज जब प्रगट थे, तब उन्होंने नंदाजी को पूछा था कि *Government* में आप कौन-सी position पर हो? 1947 में *India Independent* होने के बाद *election* नहीं हुआ था। सो, *selection* से नंदाजी को *Home Minister* बनाया गया था। उससे पहले वो *Railway Minister* थे, तो उन्होंने शास्त्रीजी महाराज से कहा कि मैं *Railway Minister* हूँ। शास्त्रीजी महाराज ने पूछा कि इससे ऊपर कौन-सी position होती है? उन्होंने बताया—*Home Minister*. फिर से पूछा कि इससे ऊपर क्या होती है? वे बोले—*Prime Minister*। फिर पूछा—इससे ऊपर? तब नंदाजी बोले—इससे ऊपर कोई नहीं, यही है। तो शास्त्रीजी महाराज बोले—मैं आपको आशीर्वाद देता हूँ, आप *Prime Minister* बनोगे। कितनी बड़ी बात? एक सामान्य हरिमक्त होने पर भी शास्त्रीजी महाराज ने नंदाजी को ऐसा आशीर्वाद दिया। आस-पास में जो लोग बैठे थे, वो यह सुन कर हँसने लगे। क्योंकि नंदाजी यानी *pure* हरिश्चंद्र, सत्यवादी। उनकी नाक पर मक्खी बैठी हो, तो वो भी उड़ा न सके, इतने नम्र स्वभाव के तो *Prime Minister* के लायक कैसे बने? तो शास्त्रीजी महाराज बोले—आप सब ये नंदाजी पर नहीं हँसते, मुझ पर हँसते हो। **तुम मेरी भगवान के साथ के संबंध की महिमा नहीं समझते हो,** इसलिए हँसते हो। मैंने अक्षरपुण्ड्रोत्तम महाराज रखे हुए हैं और मैं जो बोलूँ वो होता है। जो होता है वो मैं नहीं बोलता हूँ; मगर मैं जो बोलूँ वो होता है यह फ़र्क है। *Card readers* और *astrologers* बताते हैं कि ऐसे-ऐसे होने वाला है। लेकिन, यहाँ तो शास्त्रीजी महाराज खुद बोले कि मैं जो बोलूँ, वो होता है। फिर वे बोले—एक बार नहीं, जाओ दो बार बनेंगे। ऐसे आशीर्वाद देने के बाद 10 मई 1951 को शास्त्रीजी महाराज स्वधाम सिधारे और योगीजी महाराज गद्दी पर आए। 3-4 महीने बाद ही गुजरात में चुनाव होने वाले थे और गुलजारीलाल नंदा जहाँ से प्रत्याशी बने थे, वहाँ उन्हें कोई पहचानता भी नहीं थी। लेकिन, शास्त्रीजी महाराज के सारे समाज में योगीजी महाराज ने काकाजी को चुना कि वो जीत दिलवाएँगे। काकाजी तो मुंबई में बहुत बड़े व्यापार में व्यस्त थे। उस समय एक बड़ी स्टीमर यूरोप से आई थी। एक लाख टन *fertilizer* को जल्दी



88

से *upload* करना है, वर्ना Demurrage चढ़ता। नवंबर 1951 में योगीजी महाराज

ने काकाजी को गोंडल बुलाया और बोले कि शास्त्रीजी महाराज ने नंदाजी को आशीर्वाद दिए हैं कि ये दो बार Prime Minister बनेंगे। इसका मतलब ये नहीं कि हम बैठे रहें। शास्त्रीजी महाराज को राजी करने के लिए हमें चुनाव का कार्य में जुट जाना है ताकि वे जीत जाएँ। काकाजी बोले—ज़रूर, मैं एक हफ्ते चुनाव के लिए सारी guidance दे दूँगा। बापा बोले—एक हफ्ते में कुछ नहीं होता। फिर काकाजी बोले कितने समय तक? बापा बोले—26 जनवरी 1952 सब पूरा न हो जाए तब तक। काकाजी ने जी जान लगा और वे जीत गए। जीत के बाद काकाजी, नंदाजी को लेकर बड़ौदा, अटलादरा के मंदिर में गए। यहाँ पर शास्त्रीजी महाराज के प्राकृत्योत्सव की तैयारियाँ चल रही थीं, तब बापा से नंदाजी को आशीर्वाद दिलवाया। इडर पहाड़ी प्रदेश है। तो, काकाजी को देख कर बापा खूब राजी हुए और बोले कि आपने इडरिया गढ़ जीता है। लेकिन, अब मैं आपको प्रकृति-पुरुष, माया से पर का गढ़ यानी अक्षरधाम में विराजमान स्वामिनारायण भगवान का दर्शन करवाऊँगा। बापा काकाजी को अपने साथ गोंडल ले गए और वहाँ 72 घंटे की समाधि करने के बाद 3 फरवरी को काकाजी ने देखा-समझा कि बापा सामान्य साधु नहीं है, भगवान के स्वरूप हैं। इतने powerful होते हुए भी low-profile रहते हैं, सारे समाज को ऐसी समझदारी दी। काकाजी कहते हैं कि ये मेरा दूसरा *happiest day* है।

1961 में बापा ने 51 पढ़े-लिखे संत बनाये जिसमें गुरुजी भी थे। उसके बाद काकाजी कहते हैं कि 1952 में जो उन्हें समाधि हुई थी, एक दर्शन यह भी हुआ था कि बहनों के लिए भी कुछ होना चाहिए। हमारे सत्संग में बहनें भी साधु हो सकें ऐसी *situation, facility, arrangement* होना चाहिए। बहनों के लिए ऐसा जो समाज तैयार किया, तो संस्था में से कई लोगों को वो अच्छा नहीं लगा और 28 मई 1966 को काकाजी को संस्था में से अलग कर दिया गया। उनके साथ पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, गुरुजी व 39 संत संस्था से निकल कर काकाजी के साथ में आए और हमारा गुणातीत समाज बना। ये जो हुआ उसके लिए काकाजी ने कहा कि बापा को हम पर कितना विश्वास होगा कि हम ये काम करने के लिए संस्था से चाहे अलग भी हो जाएँ, तो भी उनको हम गौण नहीं करेंगे। उनका गुणगान ही गायेंगे, बापा को इतना विश्वास पैदा हुआ। इस हिसाब से ये तीसरा *happiest day*.

अक्सर देखा गया है कि कोई भी गुरु या संस्था शिष्य का इस तरह से तिरस्कार करेगा, तो शिष्य भी गुरु की ऐसी कोई महिमा नहीं गाएगा। लेकिन, काकाजी की ये समझदारी कितनी elevated है।



फिर काकाजी ने कहा कि गुणातीत समाज में हमारे बड़े-बड़े गुणातीत सत्पुरुष हैं— पप्पाजी, स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामी, साहेब, गुरुजी हैं, तो एक level की leadership बनी। मगर उसके बाद में उनके भी शिष्य ऐसे गुणातीतभाव को पा सकें, ऐसे काकाजी के शिष्य **भरतभाई** भी उनके ऐसे लाडले बन गए। वो ताड़देव में रह कर पढ़ाई और सेवा करते थे। एक बार वहाँ चंद्रकांतभाई देसाई नामक भक्त बैठे थे। काकाजी ने यकायक भरतभाई से पूछा कि आपको साधु बनना है या शादी करनी है? भरतभाई तो दो हाथ जोड़कर बस खड़े रहे। फिर काकाजी बोले— आप सबको शांति की गोलियाँ दोगे। आज तक *Medical Science* में कोई शांति की गोलियाँ नहीं बेचता, वो तो ऐसे संत ही बेचते हैं। तो आप ऐसी बहुत ऊँची समझदारी वाले हो। तब चंद्रकांतभाई बोले कि ऐसा ही करने वाले हैं, तो फिर शादी की बात क्यों करते हो? साधु ही बनाओ, यह सुन कर काकाजी बोले कि जब एक हरिभक्त ने कहा है, तो शादी करने के लिए अब आपके लिए कोई लड़की पैदा ही नहीं हुई है और आप साधु! कितना बड़ा आशीर्वाद मिल गया! उसके बाद काकाजी ने भरतभाई के बारे ये बात बताई कि **भरतभाई** जैसे जो तैयार हो गए हैं, वो हमारा चौथा *happiest day*. ऐसे हमारे भरतभाई का आज प्रागट्य दिन...

कांदिवली में हमारे महेंद्र बापु रहते थे और उसी area में भरतभाई और वशीभाई भी रहते थे। ये दोनों साथ में पढ़ाई करते थे। ये दोनों काकाजी के जोग में बापु के संपर्क से आए। बापु कांदिवली में सत्संग करते थे, उसमें ये दोनों आते थे। 1973 में काकाजी अमेरिका गए, तब भरतभाई और वशीभाई ने सोचा कि तीन महीने के लिए काकाजी विदेश गए हैं। उन्होंने हमें स्वरूपयोग करना बताया है, तो ऐसा हम दोनों ताड़देव में रह कर एक साथ उसकी *practice* करें। तीन महीने बाद जब काकाजी लौटे और उन्हें बताया कि हमने ऐसे स्वरूपयोग किया। तो, काकाजी उन पर बड़े राजी हुए और बोले—अब आप यहीं रहो, घर मत जाओ। ये दोनों फिर ताड़देव में रह कर ही पढ़े और भाई-भाई की तरह रहते हैं। **दोनों की nature - प्रकृति अलग है,** मगर दोनों साथ मिलकर काकाजी का कार्य कर रहे हैं। वशीभाई तो इंजीनियर बनने वाले थे, लेकिन काकाजी ने कहा कि आप *commerce* पढ़ कर chartered accountant बनो। आज वशीभाई C.A. बनकर इतनी बड़ी job के साथ सेवाएं कर रहे हैं। वशीभाई गुरुजी के बड़े लाडले हैं। जब भी कुछ दिल्ली में प्रोग्राम होता है, तो वे पहले वशीभाई को फ़ोन करते हैं कि तुम आ जाओ दिल्ली और वशीभाई भी कितना ही काम हो, वो छोड़ कर दिल्ली पहुँच जाते हैं...

अंत में प.पू. गुरुजी ने निम्न आशीर्वाद दिया—

काकाजी ने जो ज्ञाहमत उठाई, बापा को राजी किया और जो कमाया, उसका दर्शन आज हम यहाँ देख रहे हैं। ये सारा समाज जो बैठा है, विदेश में भी जो सारा समाज पवर्झ से जुड़ा है, वो सारा काकाजी के आशीर्वाद की देन है। ये बात हम न भूलें और इस समाज के अंदर रह कर, इस समाज की हम सेवा करते रहें। समाज की बढ़ोतरी कराने का बुद्धियोग हमारा कभी हटे नहीं, बढ़ता रहे। फलस्वरूप हम अक्षररूप होकर भगवान की सेवा में जीतेजी रहें। ये निशान हल हो जाए, ऐसे दिनकर अंकल प्रार्थना करें, आशीर्वाद दें और सारे समाज की प्रगति को आगे जाने के लिए प्रेरणा देते रहें यही प्रार्थना।

सभा के पश्चात् प्रसाद लेकर पू. अनिलभाई माणेक के घर घाटकोपर लौटे।

1 फरवरी सुबह नाश्ते के बाद प.पू. गुरुजी मुक्तों के साथ पू. अनिलभाई माणेक के मित्र पू. महेन्द्रभाई महेता व उनके सुपुत्र पू. भावेशभाई महेता - पू. मेघना के घर पधरावनी के लिए जाने निकले, तब रास्ते में पू. मेहुलभाई माणेक के मित्र पू. पारस छेड़ा की दुकान 'JK Dal Mill' और पू. दमी मारी की भांजी पू. रचना - पू. रैनक की दुकान 'गर्म चाय' पर होते हुए गए। पू. महेन्द्रभाई महेता के यहाँ धुन - भजन तथा प्रसाद लेने के बाद पू. सोहिणी बहन की पोती पू. तन्वी के घर गए। यहाँ धुन करके आइसक्रीम का प्रसाद लेकर पू. अनिल माणेक के घर लौटे।

प.पू. गुरुजी एवं संतों के अतिरिक्त अन्य सभी सायं 6:30 बजे प.पू. भरतभाई के प्राक्ट्योत्सव स्थल पर पहुँचे। Vintage car में विराजमान होकर प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई ने सभा मंडप में प्रवेश किया। मंच की पृष्ठभूमि पर भगवान स्वामिनारायण की मूर्ति के साथ मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदखामीजी की silhouette (cutout) के अंदर प.पू. भरतभाई का चित्र लगाया था। उसी के साथ गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और गुरुहरि योगीजी महाराज के चित्र अंकित थे। इसी के नीचे गुरुहरि पप्पाजी और संतभगवंत साहेबजी की चित्र प्रतिमा लगाई थी। बीचोंबीच Guruhari Kakaji Maharaj Social and Spiritual Welfare Centre के Model का चित्र लगाया था, जिसके नीचे गुरुहरि काकाजी महाराज द्वारा दिए निम्न four point programme लिखे थे—

1. सुबह - शाम भजन
2. कथावार्ता
3. प्रायश्चित रूप प्रार्थना
4. एक सत्कर्म



मूर्ति के दाहिनी तरफ पर्वई मंदिर की प्रतिकृति लगाई थी और उसके नीचे ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी एवं ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामीजी की चित्र प्रतिमा लगाई थी। सबसे ऊपर प.पू. भरतभाई के प्रति भाव व्यक्त करते हुए सबसे ऊपर लिखा था—

चैतन्य शिल्पना सौमिल शिल्पी तुं...

मंच पर स्वरूपों के विराजमान होने के पश्चात् सत्यंग के छोटे बच्चों ने ‘एक गुरु का साथ हमको तीन लोक से प्यारा है...’ भजन पर भक्तिनृत्य प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् पू. हितेनभाई ने उत्सव के विषय पर आधारित ‘चैतन्य शिल्पना सौमिल शिल्पी तू...’ गुजराती भजन गाकर भक्ति अदा की। भजन के तुरंत बाद ही प.पू. गुरुजी पधारे, तो पू. हितेनभाई ने ‘एरी सखी मंगल गाओ री, धरती अंबर सजाओ री...’ स्वागत गीत से और प.पू. भरतभाई ने हार अर्पण करके उनका अभिनंदन किया।

सभा की मंगल शुरुआत करते हुए पू. मननदासजी ने स्वागत व माहात्म्य दर्शन कराया। संभाजीनगर के पू. नरेश मूलेजी, मुंबई के पू. हेमंतभाई मर्चट, शिकागो के पू. वंदनभाई पटेल, दिल्ली के पू. राकेशभाई शाह ने महिमागान किया और मुंबई - हीरानंदानी समूह के सह - संस्थापक व प्रबंध निदेशक श्री निरंजन हीरानंदानीजी ने उद्बोधन किया। तत्पश्चात् गुणातीत स्वरूपों ने प्राकट्य पर्व की मंगल बेला पर निम्न आशीर्दान दिया—

प.पू. वशीभाई

...पौषी पूर्णिमा-गुणातीतानंदस्वामी के दीक्षा दिन पर साहेब ने अनुपम मिशन - मोगरी में कहा था— जो भी इधर आये हैं, उन्हें हजार महाकुंभ स्नान का फल मिलेगा। मैं आज दावे से कहता हूँ— आप सब लंदन, पेरिस, अमेरिका, दिल्ली दूर-दूर से आए हो, तो आप यकीन से मानना कि गुरुजी, दिनकरभाई, भरतभाई की हाजिरी में तुमको महाकुंभ का महापुण्य मिल रहा है... बड़े पुरुषों को उम्र नहीं होती, *they are beyond age.* कई दिनों से भरतभाई के गुणाकृवाद कर रहे हैं। **काकाजी कहते थे— Taste of food is in eating, taste of medicine is in curing and the taste of spirituality is in transformation,** हम ऐसे सत्युषष के पास हैं जो **transformation** करते हैं... वरनामृत के हर पञ्चे पर संत का माहात्म्य लिखा है। करोड़ों धन्यवाद हैं काकाजी को कि 1952 में उन्हें साक्षात्कार हुआ, तो उन्होंने बापा की पहचान करवाई। इससे आगे पप्पाजी, स्वामीजी, महंतस्वामीजी सबकी पहचान करवाई। इससे आगे गुरुजी, दिनकरभाई, भरतभाई की पहचान करवा कर हमें भेंट दे दिए... काकाजी ने जैसे कहा कि **भरतभाई जैसे तैयार हो गए वो मेरा Happiest Day है।** तो हम दिल से आज संकल्प करें।



88

कि हमें देख कर भरतभाई बोले— वाह, you are very good, तू मेरा happiest day है। हम इस कदर तैयार हो जायें। हठ, मान, ईर्ष्या के स्वभाव छोड़ कर सरलता, साधुता, दासत्व के गुण develop करें। In the joy of others, lies our own ये भावना develop करें। सत्संग, office, घर या कहीं भी हों, लेकिन एक harmony से सोचें कि how I can be helpful to others. जबरदस्त change आ रहा है not only power shift in economic terms but America and Europe is feeling, that we are missing something and they are now moving towards spirituality. महाकुंभ उसका साक्षात् example है, more foreigners have visited than ever. So many airlines have come. That shows कि महावीर स्वामी, बुद्ध भगवान, स्वामिनारायण भगवान ने जो संत प्रणाली पृथ्वी पर दी है, वो सबसे बढ़िया है। तो आज प्रार्थना है— हे भरतभाई, आज आपका प्रागट्य दिन है, तो आप जैसे दिव्य गुण हम में आएँ कि हमें देख कर हर कोई सोचें, कैसे होंगे काकाजी। गुरुजी की कही ये line हमें सिद्ध हो जाए और हम ऐसे जियें, ऐसे आशीर्वाद देना।

य.पू. भरतभाई

सब भक्तों का दर्शन हुआ उससे बड़ा आनंद हुआ। सबसे बड़ा आनंद तो हमारे गुरुजी पधारे और सबको जो आनंद कराया वो सबसे ज्यादा खुशी है... केवल काकाजी की प्रेरणा और आदेश से गुरुजी surprise में यहाँ आए हों, ऐसा दिखाई दे रहा है। गुरुजी ने बताया कि एक बार 3 फरवरी को काकाजी के साक्षात्कार का उत्सव ताड़देव में मना रहे थे। गुरुजी भी दिल्ली से आए थे। घनश्यामभाई का बड़ा पुत्र दर्शन तब छोटा था, वह गुरुजी से आगे ताड़देव की 84 सीढ़ियाँ चढ़ रहा था। गुरुजी ने सहज में पूछा कि तू यहाँ क्यों ऊपर जा रहा है, तेरा घर तो नीचे है। वो ज़ोर से बोला कि आज 3 फरवरी का काकाजी का function है, मुझे तो जाना ही है। मैं न जाऊँ ऐसा हो सकता है? तो, गुरुजी बोले कि मुझे वो याद आया, तो मैंने सोचा कि भरतभाई का birthday है और मैं न जाऊँ ऐसा हो सकता है? इसलिए मैं surprise में आ गया। थोड़े दिन पहले मैं Indian Idol देख रहा था। उसमें Judge बोल रहे थे कि 20-25 हज़ार लोगों में से हम 15 चुनते हैं और उनमें से last में एक winner होता है। मगर हमें इतनी खुशी होती है कि हमने जो सिलेक्शन किया है, उसने कभी भी हमें belittle नहीं किया। उसने 80-90 episodes में इतनी अच्छी performance दी होती है कि हमें उस पर गर्व होता है और हमें लगता है कि हमारा selection बहुत बढ़िया है। इसी तरह से काकाजी ने हमें select किया।



जब गुरुजी, दिनकरभाई, वशीभाई जैसे संत बोलते हैं, तो हमें अंदर ऐसा होता है कि वाह काकाजी! आपने सब *selection* किया और घड़ाई की है। सब कुछ आपने किया और नाम हमारा हो रहा है। मैं काकाजी को जितना धन्यवाद दूँ उतना कम है। हम में कुछ नहीं था, लेकिन काकाजी के संपर्क में आए और उन्होंने हम में क्या देखा वो तो उन्हें ही पता। मगर उन्होंने कहा कि आप हमारे हो और हमें भी ऐसा लगा कि मैं उनका हूँ... आज गुरुजी आए हैं, मुझे अंदर से एकदम ये हो रहा है कि गुरुजी आप नहीं आए हैं, आपके द्वारा काकाजी आए हैं और वे हमें ऐसे आशीर्वाद देने आए हैं कि बेटा, तुम आगे बढ़ो...

वचनामृत गढ़ा मध्य 50 में खामिनारायण भगवान ने रहस्य की बात कही है कि सत्पुरुष के वचन का पालन करो, वो ही आत्मसत्तालय वर्तन किया माना जाए। हर एक की कुछ विशिष्टता होती है, वो रहस्य है। गुरुजी को राजी करना है, तो कैसे करें? उनका *core competence* क्या है, वो समझना चाहिए। ये *core competence* और सुहृदभाव की बात से एक बात याद आती है कि हमारी पढ़ाई में खरगोश और कछुए की दौड़ की कहानी पढ़ते थे। कछुआ बेचारा धीरे-धीरे चलता और खरगोश एकदम फास्ट चलकर आगे चला गया। पर, उसने देखा कछुआ तो दिखता भी नहीं है-बहुत दूर है, तो वो एक पेड़ के नीचे सो गया। वो सोता रहा और कछुआ धीरे-धीरे चलकर जीत गया। खरगोश को चोट लगी कि मैं इतना *fast* दौड़ने वाला हूँ और ये जीत गया। वो समय से सूत्र निकला कि *slow and steady wins the race*. पर यह बात यहाँ खत्म नहीं हुई, खरगोश ने बोला कि मैं जाग्रत हो गया हूँ, अब हारूँगा नहीं। इसलिए कछुए को दूसरी बार दौड़ लगाने के लिए कहा। कछुआ तो धीरे-धीरे चलने वाला था और उसके पास मना करने का कोई अवसर ही नहीं था। इस बार खरगोश जीत गया और कछुआ हार गया। तब ऐसी बात हुई कि *fast and steady wins the race*. फिर तीसरी बार कछुआ बोला कि ये *competition* ठीक नहीं है, *core competence* होना चाहिए। मेरे में जो अच्छाई है, वो तो आपने गिनी ही नहीं। अपनी अच्छाई के साथ ही मेरे साथ *competition* किया है, वो नहीं चलेगा। फिर सोचा कि क्या करें? तो कछुआ बोला—हम *competition* ऐसा करें कि हमारा निशान नदी के पार जाने का रखें। खरगोश बोला ठीक है और वो *fast* दौड़कर नदी के किनारे पर आ गया, लेकिन उसके पार कैसे जाना वो समझ नहीं आता था। कछुआ धीरे-धीरे आकर नदी किनारे आया। खरगोश बेचारा खड़ा रहा और कछुआ पानी में तैर कर दूसरे किनारे पर चला गया। So, that is *core competence*. दोनों ने मिल कर सोचा कि कछुआ पानी



88

में बहुत fast जाता है और खरगोश ज़मीन पर, तो joint venture करें। खरगोश ने कहा कि जब मैं ज़मीन पर दौड़ूँ, तब तू मेरी पीठ पर बैठ जाना और जब तू पानी में जाएगा, तो मैं तेरी पीठ पर बैठूँगा। तो दोनों की winning situation हो गई। Winning strategy—ये हैं सुहृदभाव! ऐसे सुहृदभाव से हम अगर जीवन जियें, तो कोई भी समस्या आने वाली नहीं है, वो पक्का है। तो ऐसा सुहृदभाव हमारे अंदर हमेशा बना रहे, ये प्रार्थना करते हैं। काकाजी के संपर्क में आए, उन्होंने ऐसे बहुत अनुभव कराए, अपने साथ में रख कर बहुत trainning दी कि कैसे भगवान में रहना, हम ये भूलें नहीं।

एक गाँव में गधे के ऊपर शोभा यात्रा निकली। गधे के ऊपर भगवान की मूर्तियाँ बिठायी थीं, क्योंकि घोड़ा मिला नहीं। शोभा यात्रा चली जहाँ भी उसे रोकते हैं, वहाँ सब उसे हार पहना कर पूजन करते हैं और बहुत सम्मान करते हैं। इस तरह आगे जाते-जाते मंदिर आ गया। तो, सब मूर्तियाँ उठा कर अंदर लेकर गए। बाद में गधा तो अकेला छड़ा रहा। उसे लगा कि अभी मेरा कोई सम्मान करेगा। पर उसे ये पता नहीं था कि भई! ये तेरा सम्मान नहीं था, वो तो मूर्तियाँ तेरे ऊपर रखी थीं, उनका सम्मान हो रहा था। फिर जब वो हट नहीं रहा है, तो लोगों ने डंडा लगा कर उसे भगाया। इसलिए काकाजी हमेशा कहते थे कि मूर्ति भूलो नहीं और भगवान को आगे रख कर सब करो। तो, आज गुरुजी से ये प्रार्थना करते हैं कि हम मूर्ति भूलें नहीं... काकाजी जिस गुणातीतभाव की बात करते थे, उसमें अखंड-अखंड, चौबीस घंटे रहें... गुरुजी और दिनकर दादा के आशीर्वाद सच्चे हृदय से हम अपने जीवन में उतारें।

प.पू. दिनकर अंकल

...आज सभी माझ्योंने मिलकर बहुत अच्छा सूत्र दिया है, ये काकाजी का सूत्र है। हरिप्रसादस्वामीजी की guidance अनुसार दासस्वामी ने काकाजी के लिए 'चैतन्यशिल्पना सौमिल शिल्पी तुं योगीनो वारसदार' भजन बनाया था। मननदास ने बहुत अच्छी बात बताई कि शिल्पकार जब नकाशी कर रहा हो, तब वो पत्थर या लकड़ हिलना नहीं चाहिए, वर्ना काम बिगड़ जाएगा। पर, ये जो चैतन्यशिल्पी हैं, वे चैतन्यों को हिला कर रिथर करते हैं। उनके संपर्क में जो आए, वैसा उसे घड़ते हैं। काकाजी तो चैतन्यशिल्प को ही नहीं, लेकिन सामान्य जीव को भी घड़ दें ऐसे थे। काकाजी सारे ब्रह्मांड में पहुँच गए। हमारा भी भाष्य था कि काकाजी हमारे लिए अमेरिका में पथारे थे। यूरोप में भी पथारे थे और सब अच्छे-अच्छे हरिभक्तों को चुना था।



ऐसे ही हमारे भरतभाई भी चैतन्यों को घड़ रहे हैं। चैतन्य कैसा भी हो, अगर भरतभाई की 'हाँ में हाँ' करने वाला होगा, तो उसका काम हो जाए। लेकिन 'हाँ में हाँ' कहना बहुत कठिन है। मोरारी बापू ने एक बार बात की थी कि गीता में 700 श्लोक हैं और एक श्लोक में धर्म-क्षेत्र, कुल-क्षेत्र जैसे करीब दस शब्द आते हैं। तो कुल 7000 शब्द हुए। लेकिन पूरी गीता का सार एक शब्द में कैसे मिले? तो मोरारी बापू कहते हैं कि कृष्ण ने अर्जुन को 'हाँ' बोलना सिखाया बस वही। एक 'हाँ' में सारी गीता का सार आ गया और अर्जुन ने अंत में कहा है—‘करिष्ये वचनं तव’ अर्थात् आप जो कहोगे वो मैं करूँगा।

आज संकेतजी ने बताया कि हेमंतभाई मर्चेट ने कविता के रूप में भरतभाई के लिए साधु के चौसठ लक्षण-उनके जीवन के गुण लिखे हैं। उसमें से एक भी गुण लेकर हम जायें, तो आज भरतभाई का प्रागट्य दिन सही अर्थ में हमने मनाया और वो हमारे साथ हर रोज़ रहेगा...

भरतभाई का एक बहुत अच्छा गुण यह है कि अभी उनका प्रवचन शुरू हुआ, तो उन्होंने सबसे पहले दो मिनट के लिए धुन की ओर करवाई। ये धुन बहुत बड़ी बात है। मैं college में पढ़ता था, तब मेरे एक गुरुजी थे। उन्हें बापूजी कृपाचार्यस्वामी कहते थे। हम उनके दर्शन करने जाते थे, तो वे भी बहुत धुन करवाते थे और कहते थे कि आज तक के इतिहास में जो कुछ चमत्कार हुए हैं और आज जो हो रहे हैं और भविष्य में भी जो होंगे, वो सब धुन से होते हैं। कितनी बड़ी बात कि धुन हर चमत्कार का पूरा base है। तो, आज भरतभाई के प्रागट्य दिन पर हम कुछ ऐसा लेकर जायें कि हम किसी ना किसी तरह से धुन करते रहें। काकाजी जब स्वधाम सिधारे तो भरतभाई ने काकाजी के चरणों में प्रार्थना की थी कि काकाजी आपको सबसे बड़ी चीज़ 'धुन' परांद है। तो, मैं आपके लिए हर रोज़ स्वामिनारायण मंत्र की धुन करूँगा। आज हम देखते हैं कि हर रोज़ सुबह महापूजा का कार्यक्रम होता है, तो जितनी हो सके भरतभाई उतनी धुन करवाते हैं और वो धुन से ही हर काम होता है। तो हम भी ये प्रयोग शुरू करें। अपने जीवन में धुन अपनायें। एक विचार आता है कि भई, मेरे पास धुन करने का टाइम नहीं है। तो, हम कहते हैं कि आप जो भी काम कर रहे हो, वो करते रहो लेकिन उसके साथ धुन को add करो। जैसे मैं बहनों से कहता हूँ कि आप घर में सब्जी बना रहे हो, तो स्वामिनारायण-स्वामिनारायण करते हुए सब्जी काटो। आपका काम रुक नहीं जाएगा और साथ में धुन हो जाएगी। इस प्रकार जो सब्जी बनाई, वो फिर प्रसाद बन जाती है। आप जिसे भी खिलाओगे, वो प्रसाद के रूप में बहुत बड़ा परिवर्तन लाएगी। ये धुन हमें daily life में करनी है। अच्छा समय मिले और हम



88

शांति से बैठकर धुन करें, वो तो बहुत अच्छी बात है। मगर जिसके पास समय नहीं है, उसके लिए भी ये धुन बहुत काम करेगी।

अपने यहाँ हर्ष सुथार एक लड़का है। उनके घर हम कुछ साल पहले गए थे। उनके पिता समीरभाई और माँ ने कहा कि ये पढ़ाई अच्छी नहीं करता, तो *result* अच्छा नहीं आता। मैंने बताया कि उसे धुन करने के लिए कहो। वे बोले कि अक्षरविहारीस्वामीजी ने उसे धुन करने के लिए माला दी थी, लेकिन वो माला भी मंदिर में रख दी है वो धुन नहीं करता। तो, मैंने हर्ष से कहा कि आपको पढ़ाई के लिए समय नहीं मिलता हो और खेलने वगैरह में समय चला जाता है, तो मैं एक चीज़ बताता हूँ। आप सुबह जब स्कूल जाने के लिए घर से निकलो, तो स्वामिनारायण एक, स्वामिनारायण दो, ऐसे एक-एक कदम उठाओ। स्कूल की बस तक जाते हुए ऐसे गिनते जाओ और मुझे बताना कितने कदम होते हैं। दूसरे दिन उसने मुझे बताया। मैंने कहा कि हर रोज़ धुन करते हुए इतने कदम बढ़ाना। आज वो लड़का एक साथ दो college में graduate हो रहा है और उसे *tension* भी नहीं है। वर्ना कई बच्चों को बहुत *tension* होता है और exam से पहले पढ़ाई में काफी *depress* हो जाते हैं। उसके लिए दवाई लेनी पड़ती है। तो, **धुन की technique की हम किसी भी तरह से practice करें।** मैं भी शिकागो में 1973 के बाद जब काकाजी के संपर्क में आया था, तो उनके आशीर्वाद से manager बन गया। मेरी कोई capacity तो दिखती नहीं थी, लेकिन काकाजी ने कुछ देखा होगा... **धुन से बहुत फायदे होते हैं, लेकिन हमें उसकी practice करनी पड़ती है।** तो, हम सब एक मिनट धुन करते हैं और जब भी मौक़ा मिले ऐसे धुन करते रहना। भरतभाई के प्रागट्य दिन पर उन्हें राजी करने के लिए हम ये बहुत बड़ा साधन कर रहे हैं...

अभी धुन करते हुए मुझे धुन का एक और *powerful example* याद आया। कई सालों पहले गुरुजी जो माला फिराते थे, वो माला एक भक्त ने उनसे माँगी कि आप जो माला फिराते हो, वो मुझे दे दो। गुरुजी ने तो सरलता से माला दे दी। फिर रात को दो-ढाई बजे उस भक्त को माला में से आवाज़ आती थी—उठो! धुन करो। तो वो सोचे कि रात को दो बजे ये क्या हो रहा है? तो, उन्होंने धुन करनी शुल्की की। फिर गुरुजी से पूछा कि रात को 2 बजे मुझे ऐसे आवाज़ आती है? गुरुजी बोले—**मैं रात को 2 बजे उठ के धुन करता हूँ ये वही माला है,** इसलिए आपको जगा रही है। वो भक्त आज साधु बन गए हैं। ऐसे गुरुजी के आशीर्वाद हमें मिले और हम सब पर-भरतभाई बहुत राजी रहें, यही प्रार्थना।



प.पू. गुरुजी

आशीर्वाद देने की बात आई, तो मुझे स्वामी की एक बात याद आई। एक सेवक को किसी ने कहा कि ये गुणातीतानंदरवामी बहुत बड़े संत हैं। उनके आशीष मिलें तो अपने स्वभाव, प्रकृति सब टल जाएँ और हम सुखी हो जायें। तो, वो स्वामी के पास गया और दण्डवत् किया। पैर छूकर बोला— स्वामी आशीर्वाद दो। स्वामी बोले कि हम भगवान का भजन करें, उनकी मरज़ी में जीयें, तो भगवान आशीष देंगे ही, मांगने नहीं पड़ते। लेकिन, उसने जबरदस्ती स्वामी का हाथ खींचकर अपने सिर पर रखवाया। हाथ पकड़ कर रखा और बोला— स्वामी, बोलो आशीर्वाद। स्वामी बोले— मैं अपने हाथ संकरे के लिए इस तरह कई बार रखता हूँ, पर अंगारे कभी ठंडे नहीं हो जाते। वैसे तू जबरदस्ती हाथ रखवाये, उससे स्वभाव, प्रकृति टल जाएँ और हम शांत, सरल बन जाएँ ऐसा नहीं होता। वो तो स्वामी की आझ्ञा में जितना बरतेंगे, उनके स्वभाव टलेंगे, उनना आनंद आयेगा और उनकी शांति होगी। तो आज के दिन यही कहना है कि भरतभाई-वशीभाई मुंबई के लिए काकाजी के वारिस हैं। इनकी मरज़ी, आझ्ञा और खुशी में हम जितना जीते रहेंगे, उनना बिना कहे काकाजी के आशीष हम पर बरसेंगे, बरसेंगे, बरसेंगे। आज के दिन यही प्रार्थना कि हमें ऐसा बुद्धियोग मिले कि भरतभाई-वशीभाई की मरज़ी में ही हम रहें और आशीर्वाद के भोगी बन कर औरों को भी वो आनंद देते हो जायें।

उत्सव के अंत में ध्वनि मुद्रण द्वारा गुरुहरि काकाजी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया और फिर मुक्तों ने हार, कार्ड एवं स्मृति भेंट द्वारा प.पू. भरतभाई के प्रति अपना भाव व्यक्त किया। सभा के बाद प्रसाद लेकर सभी ने अपने गंतव्य स्थान के लिए प्रस्थान किया। 2 फरवरी की दोपहर की flight से प. पू. गुरुजी एवं साथ गए भक्त दिल्ली के लिए रवाना होकर सायं मंदिर पहुंचे।

अगले दिन – 3 फरवरी की सुबह कल्पवृक्ष हॉल में गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार एवं मंदिर के पाटोत्सव निमित्त प.पू. गुरुजी की निशा में पू. मैत्रीशीलस्वामी ने महापूजा की। संतों-सेवकों ने श्री ठाकुरजी का पूजन करके हार अर्पण किया। पू. रवि गुप्ताजी (विमल इलेक्ट्रीकल्स) ने सभी की ओर से गुरुहरि काकाजी महाराज स्वरूप प.पू. गुरुजी को हार अर्पण किया। तत्पश्चात् पू. राकेशभाई ने 3 फरवरी का महत्व बताया और फिर सेवक पू. विश्वास के साथ गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार का दर्शन कराता गुजराती भजन— ‘साक्षात्कारे सहजानंदने पामी आव्या...’ प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् ध्वनि मुद्रण द्वारा गुरुहरि काकाजी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त किया और फिर प.पू. गुरुजी ने भी निम्न आशीष दी—



88

आशीर्वाद तो काकाजी ने अपने आशीर्वचन में हमें दे ही दिए। परंतु मैंने जो चीज़ कही कि प्रगट के संबंध वाले मुक्तों में हम दिव्यभाव रखें। वो भी हम रखते हैं, लेकिन वो जो करते हैं वो सत्य है ये मानना कठिन हो जाता है। हम बोलेंगे कि इसके बदले इन्हें ये करना चाहिए था। हम ये नहीं कह पाएंगे कि इन्होंने जो कहा वो सत्य। ये मानना बड़ा मुश्किल है। आज के दिन काकाजी से प्रार्थना कि हमारा मन माने या न माने, पर आप हमारे मन को ऐसा tune up कर दो कि सहजता से वो मानें। इतना ही नहीं उसके मुताबिक हमारे जीवन का बर्ताव भी हो। वो तभी होगा जब हम दिल की सच्चाई से इसको सत्य मानेंगे। काकाजी के पास ये आशीर्वाद की खास प्रार्थना। मुझे विश्वास है कि काकाजी हम पर ये आशीर्वाद बरसायेंगे ही। इस आशीर्वाद को आत्मसात् करके हम जीवन में क्रियान्वित-activate करें। पूरा गुणातीत समाज बिना किसी भेदभाव के जिए कि ये अपना, ये अपने सेंटर का, ये तो मिशन का है, ज्योत का है, योगी डिवाइन सोसाइटी का नहीं है और योगी डिवाइन सोसाइटी में भी दिल्ली का नहीं है, बॉम्बे का है, हरिधाम का है। ऐसी भेददृष्टि बिलकुल निकल जाए। गुणातीत समाज एक और अखंड है। अखंड इसलिए कि अलग-अलग खंडों में जैसे दुनिया बंटी हुई है, ऐसे गुणातीत समाज बंटा हुआ नहीं है। इसलिए मैं बार-बार कहता हूँ कि गुणातीत समाज एक और अखंड है। ये भावना हमारी हमेशा बरकरार रहे। कहीं भी इस पर सेंध न लगे। जैसे लोहे को पिघालने के बाद फिर से बनाते हैं, तो वह पूरा अखंड एक piece बन कर loadstone जैसा ही लगता है। मानो लोहे का समूह का पर्वत बन गया। इसी तरह हमारे भीतर ऐसी एकता और अखंडता का एहसास हमें हो कि सारा गुणातीत समाज जो एक है, उसके हम सदस्य हैं। हम जो सदस्य हैं, उन्हें समाज में एकता से ही, तनिक भी-लकीर भी भेदभाव रखे बिना रसबस-ओतप्रोत हो जाना है। ऐसी ये दोनों भावना हमारे जीवन में साकार हो जाएँ, ऐसी काकाजी, पप्पाजी, रवामीजी, साहेब और सभी परोक्ष और प्रगट स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना। तदोपरांत पाठोत्सव निमित्त श्री ठाकुरजी को अन्नकूट-भोग लगाने के बाद, सेवक पूँ नीरवदास ने अपने कुटुंबी जनों के प्रति निर्लेपता रख कर भगवान भजने का जो निर्णय लिया, उसका वर्णन तथा प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प.पू. गुरुजी ने उसे नया नाम ‘निमाई’ देकर अपनी प्रसादी का हार पहनाया। अंत में प.पू. गुरुजी सहित सभी संतों एवं सेवकों ने आरती करके उत्सव पूर्ण किया। सभी महाप्रसाद लेकर धन्य हुए।

चलो, सत्संगस्थपी कांच के महल में...



13 जनवरी— प.पू. दीदी के प्राकट्य दिन निमित्त बहनों की सभा...



- ❖ सिर पे हाथ रखते हो तो हिम्मत मिलती है,
दीदी आपकी सेरेछाया से ही हमें जन्नत मिलती है...
- ❖ *She is from Gunatit origin. She is not like us.*
- ❖ गुरुजी और दीदी का आशीर्वाद हमारे जीवन में अद्वितीय शक्ति प्रदान करता है...
- ❖ दीदी! आपके वचनों में हैं जो मिठास, हर मन को देती सुकून की आस...
- ❖ दीदी बहुत सारे रोल निभाती हैं, वो एक friend, guide, mentor, divine mother हैं...

माँ जैसा प्रेम निराला सब पर छलका ही डाला
भक्तों पे सब कुछ कुर्बान...





જગ આખામાં શોધી રહ્યો એ આનંદ તારી યાસ છે....

ન ધનમાં, ન મન ન તરંગમાં
ન સાધન ન સંસાધનમાં
ન ગુણ-દોષ દ્વંદ્વમાં
આનંદ એ તો નિર્મલ નિરંજન
નિત્ય અનુયમ દિવ્ય ધરમ
ગુરુ શરણમાં, ગુરુ વચનમાં
આનંદ સેવા - સુમિરનમાં
સ્વામિનારાયણ જય મનમાં...



अक्षरज्योति की दीदी जान, आयसे बहनों की यहचान...





88

जिनसे है उत्तर भारत की बहनों की पहचान ऐसी आनंदी दीदी को 64वें प्राकट्य पर्व पर करबद्ध प्रणाम

गुरुहरि काकाजी महाराज एवं प.पू. गुरुजी ने भगवान् स्वामिनारायण के समय की बलिष्ठ चैतना वाली प.पू. आनंदी दीदी को परख कर, उत्तर भारत की बहनों के चैतन्य के विकास का कार्यभार उन्हें सौंपा। करीब 45 साल से प.पू. दीदी रात-दिन देखे बिना और अपनी देह की परवाह किए बिना, मुक्तों को व्यावहारिक-आध्यात्मिक सूझा देकर, उन्हें स्वरूपों से जोड़ने का एक मात्र उद्यम कर रही हैं।

अपनी साधुता से सभी गुणातीत स्वरूपों को राजी करके, गुरुहरि काकाजी एवं प.पू. गुरुजी की शोभा बढ़ाती प.पू. आनंदी दीदी का प्राकट्य पर्व 13 जनवरी-लोहड़ी के दिन होता है। सौभाग्य से इस बार पौष पूर्णिमा भी इसी दिन थी। स्वामिनारायण संप्रदाय में श्री अक्षपुरुषोत्तम उपासना के आश्रितों के लिए यह दिन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भगवान् स्वामिनारायण ने 'डभाण' गाँव में 15 दिन का बहुत बड़ा यज्ञ किया और उसके अंतिम दिन पौष शुक्ल पूर्णिमा पर 20 जनवरी 1810 को श्री मूलजी शर्मा को भागवती दीक्षा देकर 'गुणातीतानंदस्वामी' नाम दिया। दीक्षा के समय भगवान् स्वामिनारायण ने जो कहा था, वह आचार्य श्री रघुवीरजी महाराज ने श्री 'हरिलीला कल्पतरु' के 7वें सकन्द के 17वें श्लोक में लिखा है—

मूलजीशर्मणे दीक्षां ददानस्य प्रजायते। भूयान्मेऽत्र समानन्दो यतो धामक्षरं स मे॥

मूलजीशर्मणो नाम रम्यमस्माद् दिनादतः। गुणातीतानन्दरूपं विश्वरुद्धातं भविष्यति॥

भगवान् स्वामिनारायण ने यह कहा कि—

मूलजी शर्मा को मैं दीक्षा दे रहा हूँ, मुझे बहुत आनंद हो रहा है क्योंकि ये मेरा अक्षरधाम है। और... भविष्य में गुणातीतानंदस्वामी समग्र विश्व में विरुद्धात होंगे।

इतना ही नहीं, 1868 की 'धुलेन्डी' के अवसर पर भगवान् स्वामिनारायण ने सारंगपुर में रासोत्सव के समय सद्गुरु मुक्तानंदस्वामीजी एवं सद्गुरु आनंदानंदस्वामीजी से पूछा—

बड़े-बड़े अवतार जिनका ध्यान-जिन्हें प्रणाम करते हैं, ऐसे सद्गुरु कौन हैं?

दोनों ने भगवान् स्वामिनारायण को उत्तर दिया— प्रभु, ऐसे सद्गुरु तो आप हैं।

तब भगवान् स्वामिनारायण ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के वक्षस्थल डांडिये से स्पर्श करते हुए कहा— मैं तो सद्गुरु से भी परे हूँ। ऐसे सद्गुरु तो गुणातीतानंदस्वामी हैं, जो अक्षरधाम के अवतार हैं।



पौषी पूर्णिमा के ऐसे ही शुभ दिन पर 26 जनवरी 1967 को गुरुहरि योगीजी महाराज के अंतर के प्रसन्नता पात्र संतभगवंत साहेबजी को गुरुहरि काकाजी महाराज, गुरुहरि पण्डित महाराज एवं प.पू. सोनाबा ने अष्ट सखाओं सहित 'कर्मयोगी साधु' - व्रतधारी साधक की दीक्षा दी थी। और... गुरु गुणातीत के साधम्य को पाये संतभगवंत साहेबजी की निशा में कई मुमुक्षु भगवान भजने के मार्ग पर अग्रसर हुए। इसलिए 'अनुपम मिशन' में कई वर्षों से पौषी पूर्णिमा निमित्त शिविर होती हैं और उसी दौरान नए मुक्तों को साधक की दीक्षा दी जाती है। 2020 में तो 10 जनवरी - पौषी पूर्णिमा के दिन यहाँ के शिखरबद्ध मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा हुई थी। अतः तब से पाठोत्सव भी किया जाता है।

कई साल से प.पू. दीदी के प्राकट्य दिन पर प.पू. दिनकर अंकल सबको आशीर्वाद देने के लिए दिल्ली अचूक पथारते हैं। पर, अपने वर्तन से sincerity - punctuality का महत्त्व समझाने वाले प.पू. दिनकर अंकल ने इस बार flight की ticket book कराने से पहले अक्तुबर में सेवक की अदा से प.पू. दीदी को फोन पर पूछा—

इस बार 13 जनवरी को पौषी पूर्णिमा है। तब अनुपम मिशन में दीक्षा विधि और पाठोत्सव का कार्यक्रम है। तो, मैं आपके जन्मदिन पर वहाँ आऊँ या मोगरी जाऊँ? दूसरी बात—इस बार मार्च महीने में भारत में नहीं हूँ, तो गुरुजी के प्रागट्य पर्व पर नहीं आ पाऊँगा। तो क्या करूँ? प.पू. दिनकर अंकल की वाणी सुन कर गद्गद कंठ से प.पू. दीदी ने प्रार्थना की—

दादा, आप तो हर साल मुझे आशीर्वाद देने आते ही हैं, तो इस बार आप अनुपम मिशन ज़रूर जाएँ और मार्च में नहीं आ पाएँगे, तो 13 दिसंबर को गुरुजी के त्रैमासिक प्रागट्य पर्व पर दर्शन देने के लिए आएँ।

देखा जाए तो प.पू. दिनकर अंकल को यूँ पूछने की आवश्यकता थी ही नहीं, वे केवल न आने का संदेश दे सकते थे। लेकिन, उन्होंने अपने इस gesture से एक व्यावहारिक सूझा दी कि यदि हम सामने वाले व्यक्ति की तकलीफ को अपना मानेंगे, तो कभी भी communication gap के कारण परेशीनियाँ नहीं होंगी और... आध्यात्मिक दृष्टि से यह दर्शन कराया कि भले ही कितनी भी ऊँची कक्षा पर पहुँच जाओ या भगवान के स्वरूप बन कर पूजे जाओ, पर सेवकभाव से जीना ही गुरु गुणातीत की रीति है। सो, भले ही प.पू. दिनकर दादा 13 जनवरी को स्थूल रूप से नहीं आ पाए, लेकिन उनके दिव्य आशीष तो हम सब पर बरस ही रहे थे...

सायं 5:30 बजे श्री ठाकुरजी की आरती से प.पू. दीदी के 64वें प्राकट्य पर्व का शुभारंभ किया। भगवान ख्यातिनाम ने भगवा रंग की बहुत ही सुंदर पोशाक धारण की थी। उन्हें एवं



88

गुणातीत स्वरूपों को सुनहरे रंग के हार अर्पण किए थे। पूरे सिंहासन को लाल, भगवा और क्रीम रंग के कृत्रिम फूलों से सुशोभित किया था। प.पू. दीदी के सोफे की पृष्ठभूमि पर महल की आकृति को शीशों से सजाया था, जिस पर भजन की निम्न पंक्ति लिखी थी—

‘चलो सत्संग रूपी काँच के महल में...’

सभा का मंगल प्रारंभ करते हुए ‘ओम् स्वामिनारायणाय...’ सामूहिक धुन प्रस्तुत करने के बाद, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के दीक्षा दिन निमित्त ‘एक पोषी पूनमनो दिन उज्यो...’ गुजराती भजन गाकर पू. गौरी दीदी, पू. नेहा अग्रवाल, पू. ऋतु यादव, पू. तुलसी दीदी, पू. बंसरी दीदी ने भक्ति अदा की। पू. कश्यपी अवस्थी, पू. डॉ. पंकज रियाज़जी, पू. विक्कीजी, पू. ऋषभ गोयलजी तथा सेवक पू. नक्षत्र ने वाद्य यंत्र बजा कर वातावरण को दिव्यता से भर दिया।

भगवान् स्वामिनारायण के आश्रितों को सभी सत्पुरुषों ने समय-समय पर प्रभु के अस्तित्व का जो एहसास कराया है, वह मुक्तों के अंतर में इदम् रहता है। प्रासंगिक उद्बोधन द्वारा मुक्तों को अपने भाव प्रकट करने का अवसर मिलता है। करीब 40 वर्ष से दिल्ली में गुजरात एपार्टमेन्ट्स के अक्षरनिवासी पू. अनुभाई महेता का पूरा परिवार प.पू. गुरुजी से इतनी घनिष्ठता से जुड़ा है कि प.पू. गुरुजी के वचन से 1995 में उन्होंने अपने छोटे सुपुत्र पू. परेशभाई का विवाह मुंबई के पू. रमेशभाई महेता की सुपुत्री पू. बीजल से मंदिर में सादगी से करवा कर समाज के लिए एक आदर्श स्थापित किया। प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी से पूर्व की मुमुक्षु पू. बीजल भाभी भी ऐसी जुड़ गईं कि अपने जीवन के केव्वल में प्रभु व संत को रख कर सभी कार्य करने की शैली अपनाई। प्राकट्य पर्व के अवसर पर प.पू. दीदी के प्रति अपना भाव अर्पण करते हुए सर्वप्रथम उन्होंने उद्बोधन किया—

...किसी भी कार्य के लिए यदि प.पू. दीदी से बात करनी हो या मिलना हो, तो वे तुरंत हमें बुला लेती हैं या फोन पर बात करती हैं। दीदी हमेशा किसी भी समय हमारे लिए उपलब्ध रहती हैं। हमारे जीवन में ऐसे कई प्रसंग आए हैं, जब पूरा गुणातीत समाज एकजुट होकर हमारे साथ ऊँझा रहा, चाहे परिस्थिति कैसी भी रही हो... काकाजी के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि गुरुजी और दीदी का स्वास्थ्य निरामय रहे और उनके आशीर्वाद और निशा में हम सब मिलजुल कर आनंदित रहें...

तत्पश्चात् जहाँ गुरुहरि काकाजी महाराज एवं प.पू. गुरुजी ने पंजाब में स्वामिनारायण सत्संग के बीज बोए, ऐसी प्रासादिक भूमि सबद्वी कलां के पू. चेतन भार्गवजी की धर्मपत्नी पू. अंकिता भाभी ने स्वानुभव बताते हुए अंतर से धन्यवाद किया—



...गुरुजी और दीदी का आशीर्वाद हमारे जीवन में अद्वितीय शक्ति प्रदान करता है। उनकी धुन की शक्ति हमारे जीवन को प्रेरित करती है और धुन करने का बल देती है। अपने आशीर्वाद से वे भक्तों और उनके परिवारों को रक्षा करच प्रदान करते हैं। वे हमारा हाथ थाम कर हमें जीवन की कठिनाइयों से पार लगाते हैं... हमें ये गुणातीत परिवार मिला है। हमारे बच्चे यही कहते हैं कि छुट्टियों में हमें मंदिर ही जाना है। बच्चों को गुरुजी और दीदी से ऐसा लगाव है कि वे इनके पास आना पसंद करते हैं, टेलीविज़न में भी सत्संग के कार्यक्रम ही देखना पसंद करते हैं। इस उम्र में उनका ध्यान इस ओर है, तो वह गुरुजी व दीदी की कृपा है...

प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि मुक्तों के सकारात्मक वर्तन से ही अन्यों को सत्संग होता है और वे प्रभु-संत से जुड़ते हैं। तब प्रभु-संत से जोड़ने वाला वह मुक्त पुण्य एकत्र करता है। वर्षों से ब्रह्मरूप हरिप्रसादस्वामीजी-सोखड़ा मंदिर से जुड़े पू. प्रमोदजी (अवस्थी मामा)-पू. बीनाजी का परिवार सर्वदेशीयता से पूरे गुणातीत समाज की सेवा करता है। उनकी सुपुत्री डॉ. पू. कश्यपी दीदी National Council of Educational Research and Training (NCERT) में Professor हैं। सत्संग के प्रति उनका रुझान और आध्यात्मिक जीवनशैली देख कर, उनके संपर्क में आते students प्रभावित होते हैं और उन्हें मंदिर दर्शन करने आने की उत्सुकता होती है। दो साल पहले उनके पास trainning के लिए आई हिमाचल प्रदेश की पू. निशा शर्माजी ने जब प.पू. आनंदी दीदी का दर्शन किया, तो उनकी चुंबकीय व्यक्तित्व की ओर खिंचती चली गई और प्राकट्य पर्व निमित्त खास दिल्ली आई। उन्होंने निम्न कविता के रूप में प.पू. दीदी के प्रति अपना भाव व्यक्त किया—

आनंदी दीदी—‘भक्ति का दिव्य स्वरूप’

दीदी! आपने हर दर्द को सहा, जीवन को ईश्वर के चरणों में घड़ा
त्याग की महिमा का ऐसा स्वरूप, हर हृदय को दिया एक नया रूप
आपकी आँखों में झलकता स्नेह, जैसे ईश्वर का अनुपम संदेश
आपके चरनों में है जो मिठास, हर मन को देती सुकून की आस
आपका धैर्य-आपकी साधना, जग के लिए अनमोल प्रेरणा
सच और भक्ति की राह दिखाई, संसार में नई रोशनी फैलाई
जब आप प्रवचन करती हो दीदी, हर शब्द मानो अमृत के जैसा
मन को छूकर अंतर में बस जाये, आशा का दीप हर दिल में जगाये
आपके त्याग ने सिखाया है हमें, ईश्वर का मार्ग सदा अपनाएँ हम



હર સાંસ મેં ભવિત્તિ-હર પલ મેં સેવા, આપને જીવન દિયા એક નયા મેવા દીદી! આપ સાધ્યી નહીં એક પ્રેરણા હો, હમ સબકી ભવિત્તિ કી ચેતના હો આપકે ચરણોં મેં નતમસ્તક હમ, આપકે પ્રેમ સે હી જીવન કા સાર મિલા આપકે જીવન કી પવિત્ર ગાથા, હમેં દેતી હૈ સચ્ચે ધર્મ કી પરિભાષા સ્વામિનારાયણ કે નામ કો જીવિત રખા, હમ સબ કે જીવન મેં પ્રકાશ ભરના કશ્યપી દીદી કા આભાર પ્રકટ કરું, ઉનકે માદ્યમ સે મેં આપસે જુડી હું ભવિત્તિ એસા અદ્ભુત અનુભવ સદા રહેગા, મેરે હૃદય મેં અનુગ્રહ... દો સાલ પહલે મેં ગુરુજી ઔર દીદી કી સેવા-ચરણોં મેં આઈ હું મેં અપને આપકો બુન્દું સૌભાગ્યશાલી સમજીતી હું ઔર મેરે પાસ શબ્દ નહીં કિ કશ્યપી દીદી ને યહોઁ સે જોડ કર મુઝે કહોઁ સે કહોઁ પહુંચા દિયા હૈ... પ્રાર્થના કરતી હું કિ દો સાલ પહલે દીદી ને મુઝે જેસે અપને ગલે સે લગાયા, તો બસ મુઝે કમ્ભી છોડુના નહીં... તદોપરાંત નિમ્ન પ્રકાર સે પૃષ્ઠભૂમિ કા વર્ણન કરતે હુએ પૂ. બંસરી દીદી ને પ્રાર્થના કી— આજ કી પૃષ્ઠભૂમિ પર હમ સબ શીશે કે મહલ કા દર્શન કર રહે હોએ ઓર મન હી મન સોચ રહે હોંગે કિ મલા યે ક્યા થીમ હૈ, ઇસાથે ક્યા સમજીના હૈ? પ.પૂ. દાસખામીજી ઔર પ.પૂ. હંસા દીદી દ્વારા બનાએ મજનોં કો સુન કર આજ ભી પ.પૂ. ગુરુજી કે ચેહરે પર અલગ-સી ચમક આ જાતી હૈ। વે કહતે હોએ કિ સાધના માર્ગ સે જો ખુદ ગુજરે હુએ હોએ, ઉનકે દ્વારા બનાએ યે મજન આજ ભી સાધકોં કો પ્રેરણ દેતે હોએ ગુરુહરિ યોગીજી મહારાજ કો પ્રાર્થના લપ એક ગુજરાતી મજન હૈ— ‘ચાલો સત્સંગલુપી કાંચના મહેલમાં રે... કદી તૂટે નહીં, કદી ફૂટે નહીં...’ પ.પૂ. ગુરુજી અકસર કહતે હોએ— સત્સંગ યાનિ સત્યુલષ! ઇસ પંચિત કા અર્થ યહ હૈ કિ— હમ યદિ ગુણાતીત સ્વરૂપ સે વિપકે રહોંગે, તો જીવન કે જ્વાર-ભાટે હમેં ડગમગા નહીં પાછોંગે! પૂરે મજન કા સાર યહ હૈ કિ સત્સંગ એક દર્પણ હૈ। ઉસમેં જબ હમ અપને આપ કો દેખતે હોએ, તબ હમારા પ્રતિબિંબ દિખાઈ દેતા હૈ। ઇસી પ્રકાર, હમેં સાથી-મુક્તોં કે જો પ્રકૃતિ-સ્વભાવ દિખતે હોએ, વો દરઅસલ હમારે હી મીતર જો હોએ, ઉનકી પ્રતિછાયા મુક્તોં મેં દિખતી હૈ।



या

कटाक्ष से मजाकिया उपाधि देकर प्रारब्ध क्यों खड़े करें?

हठ, मान, ईर्ष्या के चर्गुंल में फंस कर एक-दूसरे से होड़ या तुलनाएँ क्यों करें?

थोड़ा जाग्रत बनेंगे, तो हो गए अविवेक के पछतावे से दुःखी होकर क्यों रोते हैं?

सही मायने में तो हम सभी प्रभु के हाथों की कठपुतलियाँ हैं,

और... अंतर में विराजमान विभु ही हम सबके नियंत्रक हैं।

मुक्तों के प्रकृति-स्वभाव देखने के बजाय उनमें प्रगट प्रभु-संत को ही निहारेंगे,

तो समझना कि हमारे भीतर भी वे ही बिराजे हैं, उनकी प्रतिष्ठाया अब हमें मुक्तों में दिख रही है।

आज प.पू. दीदी के 64वें प्राकट्य दिन पर सभी स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना करते हैं कि हम भले कैसे भी हैं, लेकिन आपके हैं।

आपने कृपा करके अपने शीश महल में-दिव्य समाज में प्रवेश दे दिया है,

तो आपके ऐसे शाश्वत सुरक्षा कवच से हम कभी भी बाहर निकलने का प्रयास न करें

और... आपसे मिले ब्रह्मानंद में निमग्न रहें।

प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि गुरुहरि काकाजी की यह देन है कि दिल्ली मंदिर के संपर्क में जो भी नए मुक्त आते हैं, उनका पूरा परिवार सत्संग से जुड़ जाता है। उन परिवारों के बच्चों में भी संस्कार सिंचन होने से प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी को अपने परिवार का मुखिया मान कर अनोखे संबंध से जुड़ते हैं। इसलिए जगरांव की पू. प्रीति ककड़जी की दोनों बेटियाँ—पू. हर्षिता और पू. झलक ने कार्ड बना कर प.पू. दीदी को अर्पित किया। पू. झलक ने तो मासूमियत से अपने जीवन में प.पू. दीदी के महत्व को बयां किया—

माँ बच्चों के लिए पूरी दुनिया होती है। हमारे जीवन की सबसे खास और खूबसूरत व्यक्ति होती है। माँ होती है तो हमारा हर दिन खास होता है। एक माँ अपने बच्चों के लिए बहुत संघर्ष करती है और अपने रहते अपने बच्चों पर कोई भी आँच नहीं आने देती। सो, मेरी और आप सबकी 'माँ'—'गुरु माँ' दीदी आप हो। आप हमारी सबसे अच्छी दोस्त, गुरु और रक्षक हो। आप हमेशा स्वरथ रहो, हमारे साथ रहो—यही हम सबकी प्रार्थना है।

सिर पे हाथ रखते हो तो हिम्मत मिलती है,

दीदी आपकी सेरेषाया से ही हमें जन्नत मिलती है...

गुरुहरि पप्पाजी महाराज हमेशा कहते— मैं तो जोगी का प्रकाश हूँ... उन्होंने यह सिर्फ कहा ही नहीं, बल्कि अपना अस्तित्व मिटा कर पल-पल उनकी मरज़ी में वर्त कर साधकों को उस

मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। ऐसे गुणातीत स्वरूपों के जीवन से प्रेरित प.पू. दीदी भी स्वयं को गुरुहरि काकाजी व प.पू. गुरुजी का प्रकाश मान कर मुक्तों की सेवा में तत्पर हैं। ऐसा भाव प्रकट करता भजन ‘प्रकाश हूँ, काकाजी-गुरुजी का प्रकाश हूँ...’ पू. नेहा अग्रवालजी ने पू. झलक की प्रार्थना के बाद प्रस्तुत किया।

तत्पश्चात् भगवान् स्वामिनारायण एवं उनके अखंड धारक संतों की शुद्ध परंपरा द्वारा क्या प्राप्ति हुई है तथा वे देहातीत होकर किस प्रकार आश्रितों को अक्षरधाम का सुख देने के लिए निरंतर तत्पर हैं, उसका मंथन करते हुए अक्षरज्योति की साधक पू. डॉ. अर्ची दीदी ने माहात्म्यगान किया—

...गुणातीतानंदस्वामीजी को पौषी पूर्णिमा के दिन जो दीक्षा मिली, वह आध्यात्मिक इतिहास में बहुत बड़ी बात है। क्योंकि हमें जो प्रगट का संबंध मिला है, वो यदि न मिला होता तो हमारा जीवन कैसा होता? चाहे सांख्य दर्शन हो या कोई भी Philosophy हो, सबका निचोड़ यही आता है कि भगवान का निश्चय भगवान् स्वयं करते हैं। आज हमें प्रगट स्वरूपों के रूप में भगवान मिले हैं, जो हमें स्वयं निश्चय कराते हैं, तो ये मौका हमें छूकना नहीं चाहिए। वर्ता हम भले ही मूर्तियों के दर्शन करते हैं, पर हमें हर बात पर टोकने वाले, हमें सही-गलत के बारे में बताने वाले जो प्रगट संत मिले हैं, वो एक प्राप्ति कही जाए...

जगत के पास जो नहीं है, वो हमें मिल गया! दीदी का प्रागट्य दिन है, तो में काकाजी-गुरुजी को दिल से, इंद्रियों-अंतकरण और प्राणों से धन्यवाद देती हूँ कि उन्होंने मुझे-हम सबको अपनाया और दीदी जैसी चैतन्य माँ दे दी... प्रभु का माँ के रूप जो स्वरूप है, उनका ममत्व है, उसे दीदी के रूप में महसूस करते हैं।

पौषी पूर्णिमा और दीदी का प्राकट्य दिन भी है। गुणातीतानंदस्वामीजी के स्मृति प्रसंग निहारें तो उन्होंने अपने स्वरूप को छिपा कर संतों, भक्तों की अतिशय सेवा की। वैसा दर्शन हम सबको दीदी के जीवन से सहज ही होता है। मुक्तों की सेवा-उनका महिमागान करने के लिए दीदी को कोई परिश्रम नहीं करना पड़ता। वो ऐसे गुणों की स्वामिनी हैं। *She is from Gunatit origin. She is not like us.* हमें जो प्रगट संत मिले हैं, वे हम से बहुत अलग हैं...

प.पू. दीदी ने हमेशा अपने दर्द को ऐसे लिया है कि *pain is inevitable but suffering is optional, so she chose not to suffer.* शारीरिक दर्द को उन्होंने *suffering* नहीं समझा। उसको उन्होंने प्रभु का प्रसाद माना और कोई भी *complain* नहीं की। एक साधक की अदा से प.पू. दीदी की पीड़ा देह नहीं होती, बल्कि मुक्तों की सेवा नहीं कर पाने की होती है।



वे हमेशा कहती हैं कि देह तो देह का काम करेगा, पर हमें अपना काम करना है...

स्वरूपों ने जो हम पर कृपा की, उसके लिए आभारी हैं और प्रार्थना करते हैं कि हम हमेशा उनके दिशा-निर्देशों का पालन करें और उनके आशीर्वाद से हमारा जीवन उत्कृष्ट हो...

तत्पश्चात् महिमाभरी दृष्टि से केवल प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी के प्रति ही नहीं, बल्कि दिल्ली मंदिर से जुड़े मुक्तों के सकारात्मक वर्तन का दर्शन करते हुए पू. हेतल ठक्कर ने प्रार्थना की – ...गुरुजी-दीदी ने जो समाज तैयार किया है और मेरे लिए इतना कुछ किया है, उसे देख कर मैं सोचने के लिए मजबूर होती हूँ कि क्या मैं इसके लायक हूँ? दीदी या बहनों से जुड़ने के लिए मैंने जो *baby steps* लिए हैं, वो दिन-प्रतिदिन पक्के ही होते चले जाएँ मेरे लिए अध्यात्म की बातें-किताबें तो बड़ी बात है। पर, अगर मैं इतने *baby steps* लेती रहूँ, तो *that is like half the battle as one.* मैं *win-win situation* में रहूँगीं, *if my connection is always strong.* तो ये *connection* छूटे नहीं और हमेशा सेवा का मौका देते रहना...

प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी मुक्तों के जीवन में किसी ना किसी रूप में ऐसे बसे हैं कि हरेक को वे अपने लगते हैं और उनके अपनत्व की हूँफ से सेवा के लिए तत्पर रहते हैं। ऐसे ही पू. निशिथजी-पू. डॉली धवनजी की छोटी बेटी पू. डॉ. सुंगंधा भी अपनी काबलियत से सत्संग की सेवा करती हैं। बचपन से लेकर अब तक के जीवन में प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी के साथ हुए अनुभवों को बताते हुए उन्होंने मंदिर का भी महत्व बताया –

...मंदिर से हमें बहुत कुछ मिला है, *it is like a social security system and extended family.* हमें जो इतना बड़ा परिवार और मुक्तों का साथ दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। दीदी बहुत सारे रोल निभाती हैं, वो एक *friend, guide, mentor, divine mother* हैं... आप उनसे कोई भी *confidential* बात *share* कर सकते हो... दीदी से यही प्रार्थना कि अपनी बुद्धि शून्य करके जो गुरुजी और आप कहें वही हमें करना है। दीदी हमेशा कहती हैं कि हमारा आचरण ऐसा हो कि समाज हमें गर्व से देखे और हमारे कार्य व विचार इस बात को प्रतिबिम्बित करें कि हम किस दिव्य समाज का हिस्सा हैं। हम भी अग्नि जैसे बनें, ताकि जिसको भी छुएं, उस पर अपनी सकारात्मक छाप छोड़ें। हम गुणातीत समाज के गुणों को आगे फैलाएं। आप अपनी छत्रछाया हम पर बनाए रखें। आप हमें मार्गदर्शन देते रहें और उस रास्ते पर हम चलते रहें...

तत्पश्चात् प.पू. दीदी के प्रति सबका प्रेम-भावना अर्पित करते हुए पू. नित्या दीदी एवं पू. ऋतु यादव ने नया भजन – ‘माँ जैसा प्रेम निराला, सब पर छलका ही डाला...' प्रस्तुत करके

કુછ બહનોં ઔર ભાભિયોં કો ઇતના ઉત્સાહિત કિયા કિ વે આનંદ વ્યક્ત કરતે હુએ
પ.પૂ. દીદી કે સમક્ષ ઝૂમને લગે।

પ.પૂ. ગુરુજી પ્રતિ વર્ષ પ.પૂ. દીદી કી ડાચરી પર આશીર્વાદ લિખ્ય કર દેતે હોએ, તો મજન કે
બાદ પૂ. બંસરી દીદી ને ઉસકા પઠન કિયા –

આનંદી... આજ 13 જનવરી તેરે જન્મદિન પર સ્વામાધિક હૈ કિ તૂ આશા રખેગી કિ ગુરુજી કુછ
આશીર્વાદ લિખ્ય કર દેં। પર, કાકાજી કી નિશા મેં અબ તો તૂ હી ઐસી બન ગઈ હૈ કિ અન્ય બહનોં
કો તૂ આશીર્વાદ દે। તો, ઇસસે ઊપર મેં તુઝે ક્યા લિખ્યું? સો, જો આશીર્વાદ તૂને પાએ હોએ, વો અન્ય
બહનોં ઔર કટોરિયોં કો બાંટના। વિશ્વાસ રખના કિ ઇસસે તુઝે હુઈ પ્રાપ્તિ મેં કોઈ કમી નહીં
હોગી। બલિક યું આશીર્વાદ બાંટને પર વે Multiply હોતે હોએ તું તું આનંદ કી અનૂભૂતિ તૂ કરતી રહે,
યાહી ચાહના હૈ।

તેરે ગુરુજી કે જય સ્વામિનારાયણ, જય ભારત!

સાથ હી પૂ. ઓ.પી. અગ્રવાલજી દ્વારા પ્રાર્થના કરને પર, પ.પૂ. ગુરુજી ને સુબહ પૂજા કરને કે બાદ
પ.પૂ. દીદી કો પ્રાકટ્ય દિન નિમિત્ત જો આશીર્વાદ દિએ, ઉસકા ભી નિમ્ન પઠન કિયા –

ગુણાતીત સ્વરૂપોં ને સારે સમાજ કો દીદી કી જો ભેંટ દી, વો બેમિસાલ હૈ। વહ ક્યોં? તો, દીદી
હમેં ભગવત્સ્વરૂપ સંત કી પહુંચાન-સમજા દેતી હોએં। વર્ણ એસે સંત કોઈ ભી ચરિત્ર કરેં, તબ હમ
માયિકમાવ-મનુષ્યમાવ કે અંદર ઉલજ્ઞ જાએંણો। દીદી કા સંગ હોણા, તો વે હમેં ઉસસે ઉબાર લેંગી
ઔર સાથું એસા ક્યોં કરતે હોએં, ઉનકી ચૈતન્યલક્ષી માવના ક્યા હૈ, ઉસકી સમજા દેંગી। તો, હમેં
રોજ પ્રાર્થના યહી કરની કિ દીદી વર્ષો તક સમાજ કે સાથ દિલ્લી મેં રહ કર હર એક કો
માર્ગદર્શન દેં, બલ દેં ઔર પ્રાર્થના સે શક્તિ દેં।

ઇસી પ્રકાર, વલ્લભ વિદ્યાનગર-ગુણાતીત જ્યોત સે પ.પૂ. હંસા દીદી ને પ.પૂ. દીદી કે લિએ
ગુજરાતી મેં જો આશીર્વાદ લિખ કર ભેજો થે, ઉસકા નિમ્ન પઠન કિયા –

પ્રિય ને પૂજ્ય આનંદી દીદી

તમારા પ્રાગટ્ય દિનના માવનીતરતા જય સ્વામિનારાયણ!

ગુરુહરિ કાકાજી મહારાજના સંપૂર્ણ સમર્પિત લાડીલા એવા ગુરુજી મહારાજના પૂર્ણ વિશ્વાસુ, બીજ
શરતી શરણું સ્વીકારનાર એમનો અંતરનો રાજીપો મેણવનાર તમે અનંત ચૈતન્યોના આધાર બનીને
નીરામય દેહે 100 શરદ ઉજવો, એવી ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણને પ્રાર્થના તથા ગુરુહરિ પણ્યાજી
મહારાજ, ગુરુહરિ કાકાજી મહારાજ, ચૈતન્યજનની સોનાગાને વિનંતી એજ હંસા દીદી તથા J.T.D.
(પ.પૂ. જ્યોતિ બહન, પ.પૂ. તારા બહન, પ.પૂ. દેવી બહન)ના જય સ્વામિનારાયણ!



स्वरूपों के आशीर्वाद का लाभ लेने के बाद प.पू. दीदी ने आशीष देते हुए सबको सूचन - मार्गदर्शन दिया—

आज पोषी पूर्णिमा मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी का दीक्षा दिन! महाराज मानवस्वरूप में स्वयं धरती पर आए और गुणातीतानंदस्वामी को साथ लाकर शुद्ध गुणातीत परंपरा धरती पर अखंडित रखी कि जब तक पृथ्वी का तल रहेगा, मैं अपने संतों द्वारा प्रगट रहूँगा। हमने महाराज को तो देखा नहीं है, लेकिन उन्हें धारे-प्रगटाये हुए, काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, गुरुजी, दिनकर दादा, भरतभाई, वशीभाई द्वारा आज वही महाराज काम कर रहे हैं। हम धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति वर्गेरह क्या कर पाएँगे? लेकिन गुणातीतानंदस्वामी ने साधना आसान करते हुए बताया कि प्रभुधारक संत के साथ जुड़ जाओगे, उनसे चिपक जाओगे—attachment कर लोगे, तो धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति सब अपने आप आ जाएँगे। हम भाग्यशाली इसलिए हैं कि इतनी बड़ी दुनिया में काकाजी ने दिल्ली में हमें ऐसे संत गुरुजी के रूप में भेंट दिए। आज हम जो भी संकल्प करेंगे, वो महाराज पूरा करेंगे। क्योंकि स्वामी के दीक्षा दिन पर वे बहुत खुश होंगे।

आज लोहड़ी भी है, जो पंजाब में बहुत अच्छी तरह मनायी जाती है, यहाँ दिल्ली में भी मनाते हैं। संत को केंद्र में रखते हुए सबके घर में सुख, शांति, आनंद और समृद्धि आए—यही प्रार्थना। सभी सेवकों ने खूब मेहनत करके ये जो शीशे का महल बनाया है, इसका अर्थ खूब गहरा है। मैं भी उसका अर्थ समझते हुए अभी तक विचार ही कर रही हूँ। इतनी मेहनत के लिए सभी सेवकों को खूब धन्यवाद...

सत्संग में मुझे 44 साल हो गए। आप सबको मैं अपना परिवार ही मानती हूँ, तो दिल की बात share करती हूँ कि जब भी मेरा जन्मदिन आने वाला होता है, तो मैं अंतर्दृष्टि करने लगती हूँ कि कितने साल गुज़रते जा रहे हैं... पिछले सालों पर नज़र डालूँ तो मैंने—
गुरुजी को कितना दिव्य माना?

दिल की सच्चाई से कितना percent उनकी होकर रह पाई?

उनकी क्रियाएं सचमुच भगवान का स्वरूप मान कर निहारती हूँ?

वे परम हितकारी स्वरूप हैं, ऐसा मान पाती हूँ?

तो, आज पोषी पूर्णिमा के दिन काकाजी-गुरुजी के चरणों में खास प्रार्थना करनी है कि समय बहुत निकल गया, अब सब में आपका स्वरूप जैसा है वैसा तत्व से पहचान पाएँ।

बीते समय को याद करूँ तो सभी गुणातीत स्वरूपों ने मुझे बहुत लाड़ प्यार दिया है।



88

काकाजी-गुरुजी ने तो मेरे चैतन्य के लिए जितना परिश्रम किया है, वो बताने के लिए बहुत समय चाहिए।

- * 1985 में सुहृदस्वामीजी को दीक्षा देने के लिए काकाजी, पण्डाजी, स्वामीजी, दिल्ली आए थे। उसके बाद काकाजी दो दिन के लिए महेन्द्र बापु, मुझे, सिमता दीदी और दो-तीन हरिभक्तों को लेकर हरिद्वार-ऋषिकेश गए थे। वहाँ शाम तक पहुँच कर हम स्वामिनारायण मंदिर में रहे। अगले दिन सुबह पूजा-धुन करने के बाद **काकाजी** किसी से मिलने गए। उन्होंने बापु से बोला कि आनंदी और सिमता को ऋषिकेश में घुमाने ले जाओ, मैं वहीं तुम्हें मिलता हूँ। दोपहर का समय हो गया, हमें बहुत भूख लगी थी और तब तक काकाजी आए नहीं। हम लोग उनके बारे में सोच ही रहे थे कि सामने देखा कि इतनी धूप-गर्मी में काकाजी अपने दोनों हाथों में हमारे लिए खाने की थालियाँ लेकर आ रहे थे। अब भी वो *scene* याद करती हूँ तो मन में होता है कि हमने उनके लिए क्या किया? और उन्होंने हमारे लिए! ये तो स्थूल बात है कि हमें भूख लगी और वे खाना ले आए।
- * इससे भी ज्यादा आज जो मैं बोल पाती हूँ, वह उनकी कृपा है। मैंने पहले भी ये बात बताई है कि 1983 में डॉक्टर ने मुझे कह दिया था कि आपके *sound box* पर गांठें हो गई हैं, आप दिन में 15 वाक्यों से ज्यादा नहीं बोल पाओगी। यदि *operation* कराओगे, तब भी ये गाँठे दोबारा हो जाएँगी। यह सुन कर मैं बहुत रोई कि सत्संग की सेवा नहीं कर पाऊँगी। फिर **काकाजी** दिल्ली आये और उन्हें ये बात पता चली तो मेरा *nick name* बोल कर कहा—गुड़ी क्यों रोता है? फिर गले पर हाथ फेर कर कहा— कोई गाँठे नहीं हैं, तुमसे तो सत्संग की बहुत सेवा लेनी है और... मेरे आँसू पोंछे। फिर बोले—*Septilin* आयुर्वेदिक *syrup* पीना और रोज़ नमक के गरारे करना। आज के दिन तक उनकी कृपा से ही मैं बोल पा रही हूँ। मैं मानती हूँ कि आगे ले जाने के लिए ही प्रभु ने मेरे लिए बीमारी का *chart* रखा होगा। जब जो भी बीमारी आई, उसके लिए मैं तो यही मानती हूँ कि प्रभु की झच्छा के बिना तो हमारे जीवन में कुछ हो नहीं सकता।
- * 1994 में वैष्णो देवी में घोड़े से गिरने के कारण मुझे लंबे अरसे तक *Tail bone* में दर्द रहा। दिसंबर 1997 में **पण्डाजी** दिल्ली आये थे। उन्हें जब यह पता चला, तो वे मुझे अपने साथ ले गए और अमदावाद में इलाज कराया। इसी तरह 1989 में जब *Heart* की तकलीफ आई थी, तब **स्वामीजी** ने अपने संपर्क में आए मुंबई के डॉक्टर नीतू मांडके से खुद बात की कि दिल्ली में हमारी एक बेटी को दिल की कुछ तकलीफ है, तो आप ज़रा देख लो। **साहेबजी**



को एक बार पता चला कि आंनदी को back में कुछ दिक्कत आई है, तो लंदन से वे एक belt लेकर आए और courier से भिजवाईं।

* गुरुजी की बात कर्ण तो 1977-78 में 17 साल की उम्र में उनके संपर्क में आई। एक बार पंजाबी संस्कृति के बैसाखी पर्व की कुछ बात चल रही थी। तो, गुरुजी ने सेवक द्वारा मुझसे पुछ गया कि इस दिन क्या करते हैं? मैंने कहलवाया—कुछ नहीं, पापा बच्चों को नए कपड़े-पैसे देते हैं और अच्छा खाना खाकर आनंद करते हैं। उस दिन गुरुजी ने सेवक से एक कवर में कुछ पैसे डलवा कर, उस पर 'गुडडी' लिख कर सेवक से मुझे भिजवाए। उसके बाद से आज तक हर साल बैसाखी पर वे अचूक मुझे कवर भिजवाते हैं, चाहे मैं कहीं भी हूँ। 12 अप्रैल 1989 को angiography के लिए मैं जब मुंबई जा रही थी, तब स्वाति दीदी मेरे साथ थीं। अगले दिन 13 अप्रैल की सुबह ट्रेन में जब सोकर उठी, तो गुरुजी का भिजवाया हुआ कवर स्वाति दीदी ने मुझे दिया। उन्होंने बताया कि गुरुजी ने कहलवाया था कि गुडडी को ये ट्रेन में दे देना। अभी भी मानो health के कारण मंदिर न आ पाऊँ, तो अद्वरज्योति भिजवा देते हैं।

एक बार गुरुजी सहज ही सबको पूछता रहे थे कि किसे क्या पसंद है? फिर जिसे जो पसंद हो, वो एक डायरी में लिख लेते थे। मानो किसी बच्चे को खीरा-टमाटर पसंद हो, उसके आने पर उसे वह देते। 1978-79 में मैंने सहज ही एक बार कहलवाया कि हम जब स्कूल जाते, तो father जेब में चिलगोजे भर देते। तब की कहीं हुई बात आज तक याद रख कर वे कहीं भी चिलगोजे देखते हैं, अचूक मुझे भिजवाते हैं। थोड़े दिन पहले सुमन भाभी और शशि भाभी के घर गए थे, तो वहाँ पर चिलगोजे देख कर उन्होंने मुझे भिजवाए। हमारी इतनी छोटी बात का ध्यान रखते हैं, तो हमारे वैतन्य का कितना ध्यान रखेंगे! फिर भी काकाजी के कहे अनुसार प्रसंग पर हम उन्हें पूर्ण रूप से नहीं मान पाते।

गुरुजी ने हरेक को कितना लाड़-प्यार और स्मृतियाँ दी हैं। हमारे लिए वे खूब सरते बने हैं। हमें उनका कैसा भरोसा होना चाहिए उसका उदाहरण देती हूँ—

* सारंगपुर में मंदिर बन रहा था, तो बड़े पत्थर रस्सों से बांध कर ऊपर चढ़ा रहे थे। डेढ़ सौ मन के एक पत्थर को मोटे रस्सों से शिखर पर चढ़ाने लगे, तो बीच में 6 रस्से टूट गए। एक ही रस्से से पत्थर लटकने लगा। तब नीचे खड़े सब घबरा गए कि इसके गिरने से नीचे रखे नक्काशी करे पत्थर भी टूट जाएँगे। तुरंत ही शास्त्रीजी महाराज को बुला कर लाए। वे हाथ में ली एक डंडी से निर्देश करते हुए बोले ये नहीं गिरेगा। इससे भी आगे शरीर से काफ़ी मोटे



88

सोमा भक्त को कहा कि तुम पत्थर पर कूद कर टूटे हुए रस्सों को बाँधो। सब सोचने लगे कि सोमा भक्त के कूदने से तो वह एक रस्सा भी टूट जाएगा। पर, शाल्कीजी महाराज जैसे संत का विश्वास और निष्ठा के बल पर सोमा भक्त उस पत्थर पर कूदे और बाकी के छः रस्से बाँध दिए। शाल्कीजी महाराज खुद उस पत्थर के नीचे खड़े रहे कि अगर पत्थर गिरे भी तो सबसे पहले उन पर गिरे, दूसरे किसी को कुछ न हो। ऐसे संजोगों में हमारे दिमाण में साधु की क्रियाएँ नहीं बैठेंगी, तब लगेगा कि ऐसा कैसे कर सकेंगे? इसी प्रकार, गुरुजी कभी कोई अटपटी आझ्ञा करते हैं, तब हम सीमित बुद्धि के कारण स्वीकार नहीं कर पाते। पर, इतना तो मान ही सकते हैं कि गुरुजी जो कुछ कह रहे होंगे, वह हमारे परम हित में होगा। इतने सालों से गुरुजी की निशा में रहते हैं, तब भी उन्हें पूर्ण रूप से नहीं मान पाते।

- * कुछ दिन पहले हंसा दीदी के प्रवचन में एक बात सुनी। हर एक के लिए अंतर्दृष्टि करने योग्य है। साधना की शुरुआत में मन के विचारों का बवंडर परेशान करता ही रहता है। **मन उसी फिराक में रहता है कि कब जीव को माया में घेर लूँ और प्रभु स्वरूप संत से दूर कर दूँ।** हंसा दीदी ने शुरुआती दिनों का प्रसंग बताया कि ताड़देव में एक बार पप्पाजी के पास वे अपने कुछ विचारों के बारे में बात करने गईं। तब **पप्पाजी बोले—Mind कुछ न कुछ तुकका फेंकता ही रहता है।** वहीं एक गिलास रखा था, तो पप्पाजी ने उसे उठाया। उस पर उनकी पाँचों ऊँगलियाँ छप गईं। उसे दिखाते हुए वे बोले—ये क्या हैं? दीदी बोलीं— ऊँगलियों का print छप गया। पप्पाजी ने हँसते हुए उस गिलास को तौलिए से पोंछ दिया और पूछा—अब कैसा दिख रहा है? दीदी बोलीं— अब छाप नहीं है। तब पप्पाजी बोले— बस ऐसा ही है, हमारी चेतना पर जो भी दाग पड़े होंगे, उसे समर्थ संत ऐसे ही साफ़ कर देंगे। कितने साधारण उदाहरण से पप्पाजी ने समझा दिया। हम भी ऐसी चिंता करते रहते हैं कि कब होगा, कैसे होगा, होगा कि नहीं? ऐसे विचारों से हमारा मन कितने ही स्पंदन फेंकता रहता है। बल्कि अंदर ऐसा भरोसा करें कि कुछ नहीं होगा। ऐसे संत हमेशा हमें सहाय करने के लिए बैठे ही हैं। मैं कई बार सोचती हूँ कि ऐसा क्यों होता होगा कि गुरुजी ने अपना इतना दर्शन-अनुभव कराया; हमारे जीवन के हर सुख दुःख में वे खड़े रहे, फिर भी उनका भरोसा क्यों नहीं होता? तब काकाजी की कही बात याद आती है कि cable में leakage है। इसीलिए उसमें करंट पास नहीं हो रहा। हम में महिमा की कसर और अपेक्षाओं के कारण यह सब है। महिमा नमक की तरह है। जैसे सब्जी में सब मसाले और अच्छा धी डाला हो, लेकिन नमक



न हो तो स्वाद नहीं आयेगा। ऐसे ही हम में महिमा की खूब कमी है। मैं अपने बारे में भी सोचती हूँ कि मेरी गाड़ी कहाँ अटक जाती है?

- * 17 दिसंबर को साहेबजी हरिद्वार से दिल्ली मंदिर आए थे, तो 18 को Airport जाने से पहले दोपहर को चिदाकाश हॉल में बैठे थे। 19 दिसंबर को नक्षु का अठारहवाँ जन्मदिन था, तो उसने उनसे आशीर्वाद मांगे। तब उन्होंने 60 साल पहले का बापा के साथ का प्रसंग बताया—‘मैं बापा के साथ कहीं जा रहा था। मैं दूसरी गाड़ी में था, तो बापा ने अपनी गाड़ी रुकवा के मुझे अपनी गाड़ी में बिठाया। बड़ोदा के आगे एक जगह पर मुझे कलावा बांधा और कहा कि इसे हमेशा अपनी जेब में रखना।’

साहेब ने जेब में से अपना badge निकाल कर उसमें रखा कलावा हमें दिखाया। मैं सोचती हूँ कि इन लोगों ने बापा को कितनी महिमा की दृष्टि से निहारा होगा। इतने साल में कितनी बार विदेश गए होंगे, इतना विचरण किया। कहीं भी कपड़े बदलते हुए *misplace* हो सकता था। मेरे दिमाग में तुरंत विचार आया कि गुरुजी ने तो मुझे कितनी बार अपने हाथ का कलावा दिया। पर, मैं उसकी इतनी महिमा समझी या दर्शन कर पाई कि ये साक्षात् भगवान का दिया हुआ प्रसादी का कलावा है। एक बार तो पूरे अनुष्ठान शिबिर दौरान जो कलावा गुरुजी ने बांधे रखा, वो उन्होंने मुझे भिजवाया। तो, ये महिमा की कसर है।

- * शनिवार या 7 तारीख को भजन संध्या होती है, वो किसके लिए? गुरुजी इस उम्र में किसके लिए यहाँ बैठते हैं? हम सब के लिए... हम शनिवार की महिमा समझते हैं? भजन संध्या की समझते हैं? उन्हें क्या स्वार्थ है, ये सब तो हमारे लिए है। हर 7 तारीख को भाभियों को 21 परांठे लाने के लिए कहते हैं। क्या हम उस भावना से बनाते हैं कि ओहो! ठाकुरजी को आज हमारे बनाये हुए परांठों का भोग लगेगा। सुहृदस्वामीजी पूरे साल कितनी महिमा से गर्म-गरम खाना सबको खिलाते हैं, ये महिमा कहीं जाए। तो, हम सभा में उस भाव से समय पर आएं कि ओहो, गुरुजी इंतज़ार कर रहे होंगे कि आज सब इकट्ठे होंगे।

- * हमारे सत्संग में इतना अच्छा है कि हम कहीं चूक जाते हैं, तो महाराज जाग्रत करते हैं—सूझा देते हैं। पिछले साल अनुष्ठान शिबिर में ‘भक्तों का भागवत’ में 28-30 साल के सौरभ शाह ने कहा कि अगर हम अपनी आमदनी का 10% नेकी से मंदिर के लिए निकालें, तो इतनी बरकत होगी कि हम आश्चर्य में रह जाएँगे। उसने अपना अनुभव बताया कि मैंने जब-जब निकाला है, तो फ़ायदा ही हुआ है। हम सबने वो बात सुनी, पर दिल की सच्चाई से जीवन में कितनी उतारी? गुरुजी एक बार बोले थे कि अगर सब लोग मंदिर के लिए 10% निकालें,



88

तो मंदिर का खर्च आराम से चले। मैं सौरभ की बात सुन कर खुश हो गई कि उसे इस बात का अभी से ख्याल पड़ गया। मंदिर हमारा - आप सबका है। हम आपके हैं और गुरुजी आपके हैं।

* कई बार भक्तों की भावना देख कर दिल गदगद होता है। सालों पहले दिल्ली से अमदाबाद गए पुराने भक्त अक्षरनिवासी हरिशभाई महेता की पत्नी दर्शना भाभी वहाँ रहती हैं। उनकी तीनों बेटियों की शादी हो गई है। गुरुजी से उन्हें बहुत लगाव है। पिछले साल नवंबर में गुजरात गए थे, तो उन्होंने मुझे लिफाफा देते हुए कहा कि गुरुजी के लिए ये मेरी सेवा। उनके घर की *condition* के हिसाब से कवर देख कर उसमें पैसे थोड़े ज्यादा लगे। मैंने उन्हें पूछा भी, क्योंकि मुझे लगा कि कहीं गलती से न आ गया हो। वे बोलीं— नहीं, मैं घर के खर्च में से 500-500 रुपये मंदिर के लिए बचाती हूँ, तो ये 18 हजार हैं। यह सुन कर मेरी आँखों में पानी आ गया। उन्हें तीनों बेटियों के घर का भी व्यवहार देखना पड़ता होगा और ऐसी कोई आमदनी नहीं है, तो कैसे करती होंगी? तो, कई चीज़ों भक्तों से सीखने के लिए गुण ग्राहक दृष्टि रखनी चाहिए।

हम जानते हैं कि वच्छराजभाई ने कई सालों तक मंदिर की सेवा की। उनका बेटा अभिषेक भी यहाँ सेवा में है। पिछले 4-5 साल से वच्छराजभाई की तबीयत ठीक नहीं है। वे होश में नहीं हैं, सिर्फ साँसे चल रही हैं। लेकिन उनकी पत्नी शारदा भाभी ने एक भी दिन शिकायत नहीं की कि हमारी सेवा का ये फल? ऐसी चीज़ें ज़रूर सीखनी चाहिए। वे चाहतीं तो गुरुजी को कहलवा सकती थीं कि आपकी सेवा में अपना लड़का दे दिया, पति ने भी आपकी इतनी सेवा की, तो उसका ये फल मिला?

इसी प्रकार, मधु जीजी के बेटे नितिन को छोटी उम्र में *brain stroke* आया, लेकिन मधु जीजी ने यही सोचा कि कर्ता-हर्ता काकाजी हैं और इतना *negative episode* बनने के बाद भी घर पर 3-4 घंटे तो भजन करती हैं। ऐसे प्रसंगों से सीखें कि जीवन में कोई प्रसंग बने तो प्रभु का बल लेने जैसा है।

अंकिता भार्गव ने धुन की महिमा बताई। उदयपुर में लीला और सौम्या खेल रहे थे और वहीं आत्मन् Drone चला रहा था। Drone कहीं इधर-उधर गिर गया तो आत्मन् रोने लगा। लीला और सौम्या धुन करने लगी— हे गुरुजी, Drone ला दो, मझ्या रो रहा है। उन्हें ऐसा विश्वास कि धुन करने से Drone मिल जाएगा और फिर मिल भी गया। दोनों ने



काकाजी-गुरुजी को *Thank you* कहा। तो, ऐसा संस्कार सिंचन घरों में होना चाहिए, इसके लिए हम खूब जाग्रत बनें।

- * अर्चा ने अबकी बार दीवाली पर गुरुजी के दिए आशीर्वाद की बात की, पिछले साल भी सभा में उन्होंने यही कहा था कि साधु के साथ रहते हैं, फिर भी हमारे मायिकभाव के विचार टलते नहीं हैं, सो महिमा की तो कसर है। पर, **मायिकभाव यानि क्या?**

गुरुजी का सबसे प्यार-मोहब्बत का रिश्ता है। इटेडा से प्रमोद और भीम एक दिन रात को मंदिर आए, तो मजाक में गुरुजी ने उनसे कहा कि मैं अभी इटेडा चलता हूँ, कितनी भेंट दोगे? रात के 12 बजे गाड़ी निकालने के लिए कहा। इटेडा जाने में करीब एक घंटा लगता है, तो सबकी प्रार्थना सुन कर गुरुजी नहीं गए। लेकिन उन दोनों ने कहा—गुरुजी, भेंट कल यहीं ले आयेंगे। गुरुजी बोले कि मुझे बता देना कि कितने बजे आओगे, उस वक्त में जगा रहूँगा। सोचने वाले किसी भी ढंग से सोच सकते हैं कि गुरुजी तो पैसे की ही बातें करते हैं। मेरे कानों तक ऐसी कई बातें आती हैं कि गुरुजी तो पैसे वालों का बहुत रखते हैं, उन्हें ज्यादा *attend* करते हैं। दरअसल तो उन्हें किसी से क्या लेना है? ये सब किसके लिए है? भीखूभाई, मुकुल या पिन्नी पैसे वाले हैं? पर, गुरुजी अपने साथ दुबई ले गए। हम साथ में रहते हुए इन चीजों की *calculations* क्यों करें? ऐसे मायिकभाव के स्पंदन यदि फेंकते ही रहेंगे, साधु को उसी दृष्टि से देखते रहेंगे, तो हम साधु से क्या पाएंगे? मैंने अगले दिन प्रमोद को फोन करके पूछा कि गुरुजी से भेंट की क्या बात हुई थी? वो इतनी महिमा से बोला कि दीदी, गुरुजी को अपने लिए क्या चाहिए? गुरुजी को हम क्या दे सकते हैं? वो तो हमें आनंद कराने, स्मृतियाँ देने के लिए ये *gestures* करते हैं। उसकी बात सुन कर मैंने सोचा कि सत्संग को इस तरह से लेना चाहिए। हमारी गाड़ी कहीं न कहीं अपेक्षा के कारण भी ज़रूर अटक जाती है।

- * जैसे गुरुजी पहले कइयों को उनके *birthday* या *anniversary wish* करने के लिए सुबह ही फोन करके जय खामिनारायण कहते या कहलवाते थे। इस बार 28 जून को हम बहनों के भागवती दीक्षा दिन पर सेवक द्वारा गुरुजी का कोई *message* नहीं आया। खाभाविक ही ऐसे दिन पर मन में होता है कि गुरुजी का कोई *message* आए। मैंने मन में सोचा कि भले गुरुजी का *message* नहीं आया, पर हमें उनसे आशीर्वाद लेने हैं। तो, मैंने ही अभिषेक को फोन करके गुरुजी को जय खामिनारायण कहलवाया। पहले तो सुबह ही सबसे पहले गुरुजी फोन करते थे। तब *husband* या *wife* कह देते कि पहले मैं *wish* कर दूँ,



88

वर्ना कहेंगे कि देखो गुरुजी का फोन आ गया, लेकिन आपने अभी तक *wish* नहीं किया। पर, गुरुजी की *age* देखते हुए अब हमें खुद फोन करके आशीर्वाद लेने चाहिएँ। वर्ना ऐसी छपी अपेक्षाएँ हमारी प्रगति रोक देती हैं।

गुरुजी का जीवन देखें तो ख्याल पड़ता है कि हम कैसे गुरु से जुड़े हैं! काकाजी अपने जीवन दौरान खुद और अपने साथ कहायों को कितनी बार *foreign* ले गए, लेकिन गुरुजी को एक भी बार अपने साथ नहीं ले गए। लेकिन, काकाजी के प्रति गुरुजी के *attachment* में कभी कोई फ़र्क नहीं पड़ा। मानो कोई *function* में किसी मुक्त को बुलाना रह गया; *out of sight* हो गया, तो बुरा क्यों मान जाते हैं? मंदिर आप लोगों का ही तो है, पता चलने पर आप खुद आ जाओ। छोटी चीज़ों में हमें बुरा लग जाए, ऐसा सत्संग हमें नहीं करना है, अलग कक्षा का सत्संग करना है। किस खानदान से हम जुड़े हैं, हमें मंदिर से कुछ पाना है! गुरुजी को हमारी तरफ से ठंडक हो, ऐसा सत्संग करना है।

- * जूनागढ़ के पास एक जगह पर **नीलकंठ वर्णी** के रूप में महाराज भोजन करने बैठे थे, तो द्वेष के कारण उन्हें 18 बार उठाया कि यहाँ नहीं, वहाँ बैठो। यह सब देख कर किसी ने पूछा कि आप कुछ कह क्यों नहीं रहे? तब महाराज बोले पूर्ठ का क्या सम्मान करना? हमें तो मान के कारण कितना बुरा लग जाता है। भले ही थोड़ा सत्संग करें, पर *solid* करें। अकसर काकाजी की गाड़ी कांति काका चला कर ले जाते थे। एक बार काकाजी किसी के यहाँ गए और कांति काका बाहर गाड़ी में बैठे रहे। तब उन्हें *driver* समझा कर बेकार से *cup* में चाय दी। पर, उन्हें इससे ज़रा भी फ़र्क नहीं पड़ा। जबकि देखा जाए तो ताङ्देव का सारा ऊर्चक चलाते थे।

रोज शाम को सहृदयी पुस्तक पढ़ते हैं और गुरुजी हिन्दी में समझाते हैं। कुछ दिन पहले 140 पेज नंबर पर प्रसंग आया कि हरिप्रसादस्वामीजी ने योगी बापा से कहा कि बापा, अपने जीवन का कोई प्रसंग बताइये कि कभी किसी ने आपका अपमान किया हो। तब बापा हँसते हुए बोले— इस योगी के जीवन का एक भी दिन ऐसा नहीं गया कि जिस दिन अपमान न हुआ हो। तो, ऐसे खानदान के हम हैं। हठ, मान, ईर्ष्या के भागों और तुलनाएँ छोड़ कर अब हम आगे बढ़ कर ये भूमिकाएँ छोड़ें। इसे देखा-इसे नहीं देखा, इसे प्रसाद दिया-इसे नहीं दिया। इन सारी चीज़ों में फ़ैसे रहेंगे, तो प्राप्ति कब करेंगे? गुरुजी से हमें जो पाना है, वो कब पायेंगे?

- * मैं तो कहती हूँ कि अध्यात्म की ज्यादा बातें भले समझ भी न आएँ, लेकिन *young* लड़के-लड़कियाँ *mobile* की गंदगी या शराब, सिगरेट, नॉन वेज इत्यादि छोड़ कर अपने



career पर ध्यान दें। हमने स्वामिनारायण की कंठी पहनी है। हम मंदिर आते हैं, गुरुजी से जुड़े हैं। सोचें कि अगर मैं ऐसा व्यवहार करूँगा या करूँगी, तो गुरुजी का नाम खराब होगा... ऐसा ही मानें कि मेरे भीतर गुरुजी देख रहे हैं, उन्हें बहुत दुःख होगा। *Young generation* सबसे ज्यादा अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे। गुरुजी बहुत राजी होंगे, अगर हम पढ़ाई अच्छी करेंगे। अपनी बहु-बेटियाँ घर में अपनी सास-ससुर का आदर करके घर में शांति का अच्छा माहौल बनाएँ। हमारे वर्तन ही पता लग जाए कि हम कौन से सत्संग में जाते हैं। बाकी महाराज तो प्रगट हैं, हम दिल की सच्चाई से भजन करके मांगेंगे, तो वे ज़रूर देते हैं।

- * अपना अभी का प्रसंग बताती हूँ। जैसे कि मैंने कहा कि जन्मदिन नजदीक आता है, तो मैं अपने आप में ढूँढ़ कर काकाजी-गुरुजी से प्रार्थना करती हूँ कि मेरी गाड़ी जहाँ अटकी हो, वहाँ से मुझे आगे ले जाना। मार्च में गुरुजी के प्राकृत्य पर्व की date set करने के लिए हम 3 जनवरी को meeting कर रहे थे। तो, मार्च में साहेबजी के आने के बारे में पूछने के लिए मैंने अश्विन दादा को ब्रह्मज्योति फोन किया। बात सुन कर वे सामने से बोले—उससे पहले तो 13 जनवरी आयेगा ना? यह सुन कर मैं हँस पड़ी और अश्विन दादा से कहा—आप आशीर्वाद देना, हमारी गाड़ी तो आप स्वरूपों के आशीर्वाद से ही चल रही है। तब दादा किस reference से बोले वो तो ख्याल नहीं पड़ा, लेकिन मैंने ऐसा ही सोचा कि उनमें से महाराज बोल गए। अश्विन दादा बोले— सामान से भरी बैलगाड़ी के नीचे कुत्ता चल रहा हो, तो वो सोचता है कि बोझ उठा कर मैं चल रहा हूँ। उस समय तो मैं मार्च बाली बात के विचार में थी, पर यह वाक्य याद रह गया। मैंने सोचा कि कहीं न कहीं मेरे सूक्ष्म में ज़रूर ऐसी बात होगी कि मैं सत्संग का कुछ ज्यादा काम करती हूँ। मेरे अंतर में ज़रूर कहीं होगा, जो उनके द्वारा प्रभु ने मुझे बताया। उस दिन तो मैंने वो बात नोट कर ली। फिर 7 तारीख को पवर्झ में भजन संध्या हुई। भजन संध्या में वशीभाई बीच-बीच में भजन समझाते भी हैं। 8 तारीख को मैंने फ़ोन खोला, तो उसका link आया हुआ था। मैंने उसे खोला, तो उसमें महाराज के समय का पहला ही भजन समझाते हुए वशीभाई यही बैलगाड़ी के नीचे कुत्ते बाली बात कर रहे थे। कहाँ 3 जनवरी की बात और कहाँ ये 8 तारीख की। फिर मुझे पक्का हो गया कि अबकी बार ये ज़रूर मेरे सूक्ष्म में कहीं होगा। जबकि ये सब तो काकाजी ही चला रहे हैं। उनके और गुरुजी के संकल्प से सब हो रहा है। उनके सामने हम कुछ भी नहीं हैं। पूरे साल यही बात मुझे याद रखनी है। आप सब मेरे लिए प्रार्थना करना कि कहीं भी मेरे mind में



88

વો હૈ, તો નિકલ જાએ। યે જો કુછ મી હો રહા હૈ, વો કાકાજી-ગુરુજી હી કર રહે હૈનું, ઐસી ભાવના સે જિયેં। ગુરુજી ને અબકી બાર 31 દિસંબર કો 20 મિનિટ કી જો *fixed time* ધૂન કરને કી આજ્ઞા દી હૈ। તો, હમસે ઔર જ્યાદા કુછ હો પાએ યા ન હો, લેકિન યે જરૂર કરોં। ઇસ બાર 13-14 કો હોલી વ ધૂલેંઢી સાહેબજી કી પ્રાકટ્ય તિથિ હોને કે કારણ ગુરુજી કા પ્રાકટ્ય દિન 8 માર્ચ કો મનાએં�gે। ગુરુજી કા જો મી વચન હો ઉસકે લિએ મેં ઔર આપ સબ ‘હાઁજી’ હી કહ કર, બહુત સુખ વ આનંદ સે અપને મન-બુદ્ધિ કે *platform* છોડ કર જિએં, યહી પ્રાર્થના!

પ્રાકટ્ય પર્વ નિમિત્ત મુક્ત અપની ભાવનાઓં કો કર્ઝ રૂપ મેં પ.પૂ. દીદી કો અર્પણ કરતે હૈનું – અક્ષરજ્યોતિ કી બહનોં ને સભી મુક્તોં કી ઓર સે જો હાર બનાયા થા, ઉસે પૂ. ગૌરવ ગર્જાજી ને ચિદાકાશ હોલ મેં વિરાજમાન પ.પૂ. ગુરુજી કો અર્પણ કિયા। ફિર પ્રસાદી કા વહ હાર અક્ષરજ્યોતિ કી સાધક પૂ. કેસર એવં પૂ. ડૉ. જે.પી. શર્માજી કી સુપુત્રી પૂ. બબીતા દીદી ને પ.પૂ. દીદી કો અર્પણ કિયા।

મુંબઈ સે પૂ. ડૉલી દીદી દ્વારા બનાયા વિશિષ્ટ હાર સભી ભાભિયોં કી ઓર સે – પૂ. ઇંદૂ ગુપ્તાજી ઔર પૂ. રેખા દ્વિવેદેંજી ને પ.પૂ. દીદી કો અર્પણ કિયા।

પૂ. સુરેશ-પૂ. સંધ્યા મેહરાજી કે બડે બેટે પૂ. અભિમન્યુ કાફી બીમાર હો ગા થે। શ્રી ઠાકુરજી કી કૃપા એવં પ.પૂ. ગુરુજી વ પ.પૂ. દીદી કે આશીર્વાદ સે વે સ્વસ્થ હો ગા। સો, ધન્યવાદ કે રૂપ મેં ઉનકે પરિવાર કી મહિલાઓં ને મિલ કર પ.પૂ. દીદી કો હાર અર્પણ કિયા।

લુધિયાના કી પૂ. રણજીત ભટ્ટીજી દ્વારા લાયા ગાયા હાર પંજાબ કે મુક્તોં કી ઓર સે – પૂ. મનદીપ ભાભી (લુધિયાના) એવં પૂ. પ્રિયા શર્મા (જગરાંવ) ને અર્પણ કિયા।

હારવિધિ કે પશ્ચાત્ અનુપમ મિશન કે સદગુરુ સંત પ.પૂ. મનોજદાસજી દ્વારા રચિત ‘જગ આખામાં શોધી રહ્યો એ આનંદ તારી પાસ છે...’ ગુજરાતી ભજન પર અક્ષરજ્યોતિ કી સાધક પૂ. કંકુ એવં પૂ. બાતી ને ભાવનૃત્ય પ્રસ્તુત કરકે શ્રી ઠાકુરજી કે પ્રતિ ભવિત અદા કી ઔર ઉત્સવ કા સમાપન હુઅા।

‘લોહડી’ કા ત્યોહાર હમેં જોશ, ઊર્જા ઔર સકારાત્મકતા કા સંદેશ દેતા હૈ। હમેં મિલે સાક્ષાત્ ગુણાતીત સ્વરૂપોં સે હી જીવન ઉજિયારા હૈ। સો, પંજાબ ઔર દિલ્હી કે સ્થાનિક મુક્તોં કો આનંદ કરાને - લોહડી કી વિશેષ સ્મૃતિયાઁ દેને કે લિએ મંદિર કે પ્રવેશ દ્વાર કે નિકટ કે પ્રાંગણ મેં ગોલ ઘેરા બના કર લકડિયાઁ એકત્ર કી ગર્ઝ થી। પ્રસાદ લેને કે પશ્ચાત્ પ.પૂ. દીદી કી નિશા મેં ઉસમેં અહિન પ્રજ્વલિત કરકે, ઉસકે સમક્ષ બોલિયાઁ ગાતે હુએ - ભજનોં પર સબને ભાંગડા કિયા ઔર મૂંગફલી-રેવડી વ ફુલિયોં કા પ્રસાદ લેકર પ્રસ્થાન કિયા।

प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी के जनन से बने
‘आत्मीय संस्कार धाम’ सूरत में मूर्ति ग्रातिष्ठा...





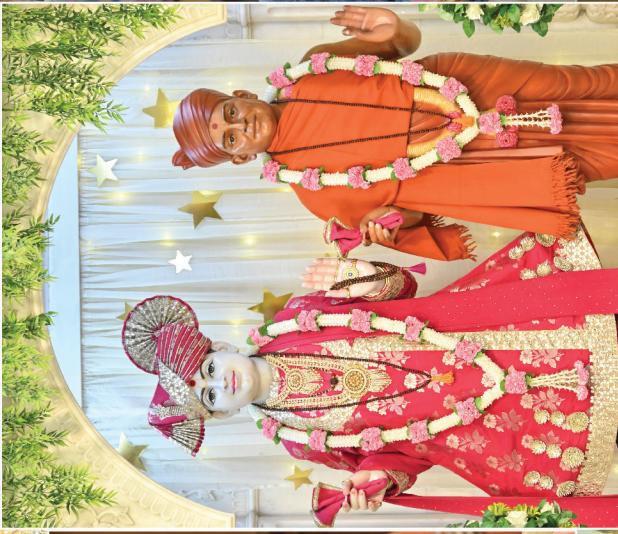
27 दिसंबर 2024
सूरत में
प्रगट ब्रह्मस्वरूप
प्रेमस्वरूपस्वामीजी का
79वां प्राकट्योत्सव...



- प.पू.गुरुजी

31 दिसंबर 2024— महापूजा....

हमें सदा सर्वथा कुछी-संपन्ना और आत्मिक रूप से सबल होने के लिए, भगवान् स्वामीनारायण ने स्वयं करेण करके स्वामीनारायण मंत्र दिया। कोई परेशानी, दुःख आए या परेशानी न भी हो, ये मंत्र रटते रहेंगे तो कभी दुःख की छाया प्रभावित नहीं करेगी।
मेरी इच्छा-भावना, आज्ञा और आशीर्वद है कि रोज़ 20 मिनिट एक fix time पर इस मंत्र का जाप करें...





સૂરત કે સણીયા કણદે મેં મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા કે અંતર્ગત પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ પ્રેમસ્વરૂપસ્વામીજી કા 79વો પ્રાકટ્રયોત્સવ

જબ કભી પ્રામાણિકતા કી બાત આતી હૈ, તો પ.પૂ. ગુરુજી ગુજરાતી મેં કહતે હૈને—
સાચા દેવથે ધંટ વાગે... અર્થાત् સચ્ચાઈ કી હમેશા જય - જયકાર હોતી હૈ!

ઇસકા દર્શન સૂરત કે ‘સણીયા કણદે’ મેં પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ પ્રેમસ્વરૂપસ્વામીજી કી પ્રેરણ સે નવનિર્મિત ‘આત્મીય સંસ્કાર ધામ’ મેં હુઝી મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા કે દૌરાન હુએ ‘આત્મીય યુવા મહોત્સવ’ મેં હુઆ। 19-20 અક્ટુબર 2024 કો સૂરત મેં મનાએ ગए પ.પૂ. દિનકર અંકલ કે 80વેં પ્રાકટ્રયોત્સવ કે સમય પ.પૂ. ગુરુજી, પ.પૂ. દિનકર અંકલ, પ.પૂ. ભરતભાઈ, પ.પૂ. વશીભાઈ એવં સભી ભક્તજન નિર્માણથીન કેન્દ્ર મેં ધુન - ભજન કરને ગાએ થે ઔર... દો મહીને મેં તો યુદ્ધ સ્તર પર યાં પૂરા હો ગયા!

બ્રહ્મસ્વરૂપ હરિપ્રસાદસ્વામીજી કે પ્રતિ ભક્તિ અદા કરને હેતુ પ.પૂ. ગુરુજી ને ઇસ મહોત્સવ મેં આને કા તય કિયા થા। પરંતુ, 14 નવંબર 2024 કો ઉનકા pacemaker લગાને કા operation હુઆ ઔર 15 નવંબર - દેવ દીવાલી કી સાયં વે મંદિર લૌટે। તથી પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ પ્રેમસ્વામીજી ભી પંજાબ કે દૌરે સે લૌટતે હુએ પ.પૂ. ગુરુજી કા દર્શન કરને આએ ઔર ઉનસે પ્રાર્થના કરી કિ વે અપને સ્વાસ્થ્ય કા ધ્યાન રખતે હુએ સૂરત કે મહોત્સવ મેં ન આએં, યહોં સે આશીર્વદ દે દેં। અતઃ પ.પૂ. ગુરુજી કા પ્રતિનિધિત્વ કરતે હુએ પૂ. સુહૃદસ્વરૂપસ્વામીજી - પૂ. અક્ષરસ્વરૂપસ્વામી, સેવક એવં પ.પૂ. આનંદી દીદી કે સાથ કુછ બહનેં ઇસ મહોત્સવ કા દર્શન કરને કે લિએ 27 દિસંબર કો સૂરત પહુંચે। પૂ. સુહૃદસ્વામીજી એવં મુક્ત ઉત્સવ કે નજાદીક ડાંભા ગાંબ મેં પૂ. કિશોરભાઈ કે ઘર ઠહરને ગાએ। પ.પૂ. દીદી કે સાથ બહનેં સૂરત કી ગુણાતીત જ્યોત મેં ઠહરને ગાએ।

‘આત્મીય સંસ્કાર ધામ’ મેં 23 દિસંબર કો વિશ્વશાંતિ વિષ્ણુ મહાયજ્ઞ, 24 દિસંબર કો મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા હોને કે બાદ, ઉસી કે સામને વિશાળ પંડાલ મેં 27 દિસંબર કી સાયં ‘આત્મીય યુવા મહોત્સવ’ કે અંતર્ગત પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ પ્રેમસ્વરૂપસ્વામીજી કા પ્રાકટ્રય દિન મનાને કે લિએ સભી 5:00 બજે એકત્ર હુએ। મહાપ્રસાદ લેને કે પશ્ચાત્ કરીબ 7:00 બજે મહોત્સવ આરંભ હુ�आ। મહોત્સવ કે સૂત્ર – ‘મન કો મંદિર બનાને કા અવસર’ કે અનુરૂપ બ્રહ્મસ્વરૂપ હરિપ્રસાદસ્વામીજી કી પાલકી કે પીછે, મંદિર કે આકાર કે રથ પર હાથ મેં માલા લિએ પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ પ્રેમસ્વરૂપસ્વામીજી ને વિરાજમાન હોકર સભા મંડપ મેં પ્રવેશ કિયા। ઇસ દૌરાન મંચ પર લગી Screen પર, સુસજ્જિત ગજરાજોં પર વિરાજમાન ભગવાન સ્વામિનારાયણ એવં ગુણાતીત પરંપરા



के स्वरूपों का भी दर्शन हो रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी उन सभी के संग प्रविष्ट हुए। मंच के करीब रथ के पहुँचने पर सर्वप्रथम श्रीहरि प्रदेश के छोटे बालकों ने ‘नानुं हैयुं आ मारुं... मंदिर बने हुरि तारुं...’ भजन पर जब भाववृत्त्य प्रस्तुत किया, तब प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी भी एक बालक की अदा से उन्हें निहारते रहे और अंत में अपने गातरिये से अश्रुओं को पौछ कर इनकी भक्ति को सराहा। इसके तुरंत बाद श्रीहरि प्रदेश के ही युवकों ने ‘प्रागट्यनुं नजराणुं...’ भजन पर भक्तिनृत्य प्रस्तुत किया। युवकों का नृत्य जैसे ही समाप्त हुआ कि प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने आश्चर्यभरी हस्तमुद्रा से उन पर प्रसन्नता व्यक्त की। तत्पश्चात् प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी के संग केन्द्रों से आए स्वरूपों एवं महानुभावों ने मंच पर स्थान ग्रहण किया।

ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी को पल-पल धार कर जीते, उनके युगकार्य को बढ़ाने हेतु प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी किस प्रकार आत्मीय समाज व युवकों का सिंचन कर रहे हैं, उसका उल्लेख करते हुए पू. श्रुतिप्रकाशस्वामी, पू. मितेशभाई, गुजरात सरकार के प्रतिनिधि के रूप में पधारे केबिनेट मंत्री श्री कुवंरभाई बावरिया, श्री सुधीरभाई नाणावटी, पद्मश्री सवजीभाई ढोलकिया, My India Foundation के Founder और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पूर्व प्रचारक श्री सुनील देवधरजी ने इस भव्य आयोजन में अपना भाव व्यक्त किया। कणोरी मठ के पूज्यश्री अदृश्य काडसिद्धेश्वर महाराज ने सभा को मार्गदर्शन दिया तथा विडियो द्वारा आचार्य श्री गोविंददेव गिरिजी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त किया।

शिकागो के प.पू. दिनकर अंकल ने प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी की सेवाओं को याद करके उनके स्मृति प्रसंगों द्वारा निम्न माहात्म्यगान किया—

...आज सूरत की भूमि पर प्रेमस्वरूपस्वामीजी का 79वाँ प्राकट्य दिन मना रहे हैं। अगले साल बड़ा भव्य उत्सव होगा और उसके बाद भी जैसे सबने प्रार्थना की, वैसे उनकी शताब्दी भी मनानी है। स्वामीजी के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि प्रेमस्वरूपस्वामीजी की तबीयत अच्छी रहे...

स्वामिनारायण धर्म में महाराज ने शिक्षापत्री में सभी धर्मों का समन्वय करके हमें सर्वदेशीयता की सूझा दी है। ऐसे ही प्रेमस्वामीजी का जीवन भी सर्वदेशीय है। सभी स्वरूपों को उन्होंने राजी किया है। एक बड़े उत्सव पर गुजरात के कोई माननीय पधार रहे हैं, तो red carpet से उनका स्वागत करने के लिए काकाजी ने सिर्फ एक बार उन्हें सूचन किया। तो, प्रेमस्वामीजी ने रातभर में लकड़ी का बुरादा लाल रंगवा कर सुबह तक तैयार करवा दिया। उससे काकाजी बहुत राजी हुए। हरेक के लिए क्या न हो सके ऐसा प्रेमस्वामीजी का जीवन है।

दिल्ली में शुरुआत के दिनों में मुकुंदजीवनस्वामी (गुरुजी) के साथ प्रेमस्वामीजी सर्दियों में जाते थे। वहाँ गर्म पानी की कोई व्यवस्था नहीं थी, तो गुरुजी को स्नान कराने के लिए प्रेमस्वामीजी ने पुस्तकें जला कर पानी गर्म किया। गुरुजी ने प्रेमस्वामीजी से पूछा भी कि पानी कैसे गर्म किया? वे बोले कि पुस्तक में से जो ज्ञान लेना है, उसे जीवन में उतार कर आपको राजी करना है, वही तो किया। ऐसा करना बहुत बड़ी बात है। किसी को शायद लगे कि भला ऐसा कैसे कर सकते हैं? मगर जिसकी समझ ऊँची हो, उसी को ऐसा विचार आयेगा। आज हम सब इकट्ठे हुए हैं। हर एक की भावना है कि प्रेमस्वामीजी को कैसे राजी करें?

गुणातीतानंदस्वामीजी के निजी सेवक भगतजी महाराज ने स्वामी का ऐसा सेवन किया कि स्वामी ने उन्हें ब्रह्मस्वरूप बना दिया, स्वामी ने उन्हें समाधि करवा कर महाराज के दर्शन करवाये। हम भी अगर ऐसी तत्परता रखें, तो प्रेमस्वामीजी हमें भी भगतजी महाराज जैसी रिथाति कराने के लिए तैयार हैं, पर हमारी तैयारी कितनी है? हमें सच में दिल से प्रार्थना करनी है कि आपने जैसे हरिप्रसादस्वामीजी को खूब राजी कर लिया, वैसे हम भी आपको सच में अंतर से राजी कर सकें। उनके वचन को आत्मसात् करके, अक्षरशः उसका पालन करेंगे, तो हमारे भीतर भी अक्षरपुरुषोत्तम महाराज विराजमान होंगे। हमें भी ऐसा साक्षात्कार होगा।

हे प्रेमस्वामीजी! आप हम पर खूब बरसाना। किसी ने कहा कि आपके भव्य उत्सव में सवा लाख नहीं, बल्कि उससे भी अधिक भक्तों का दर्शन हो और हम सब में ऐसी भावना जागे कि भगतजी महाराज जैसा जीवन जीकर प्रेमस्वामीजी को राजी कर लें...

प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने आत्मीय युवा महोत्सव में आए युवकों को अध्यात्म पथ पर चलने के लिए प्रेरित करते हुए निम्न आशीष वर्षा की—

दिनकर अंकल, रतिकाका, निर्मलस्वामी, बापुस्वामी, सुहृदस्वामी और धाम के सभी मुक्तों को आज के दिन के खास जय स्वामिनारायण। भगवान श्री स्वामिनारायण धरती पर आए। मानव जाति पर अकारण कृपा बरसायी। कृष्ण भगवान ने गीता में कहा—संभवामी युगे-युगे। इस आशीर्वाद को *review* करने सर्वावतारी पुरुषोत्तम नारायण भगवान श्री स्वामिनारायण पधारे। सहजभाव से ये आशीष बरसाए कि मैं इस धरती पर से जाऊँगा नहीं। कीर्ति, कंचन और कामिनी के रस और राग रहित, ऐसे गुणातीत भावना वाले संत द्वारा पृथ्वी पर अखंड प्रगट रहूँगा। ये सामान्य बात नहीं है। प्रभु धरती पर आए-अखंड रहे, गुणातीत पुरुषों द्वारा हमें उनकी प्राप्ति हुई। हरिप्रसादस्वामी द्वारा हमें उनकी प्राप्ति हुई, हम बड़े भाव्यशाली हैं।



हम विचार करें कि महाराज ने धरती पर आकर अपने जीवन से कैसा दर्शन कराया!

स्वयं पुलषोत्तम नारायण होते हुए भी, हर पल उनके जीवन में अपने गुरु रामानंदस्वामी और भगवान का ही दर्शन कराया। छोटे बड़े प्रसंगों पर सहज अवस्था का दर्शन कराया। ये बात आज हमें पकड़नी है कि स्वयं प्रभु होते हुए महाराज कैसा जीवन जिए और किसके लिए? मुझे और हम सबको अद्भुत दर्शन कराने के लिए वर्णी स्वरूप में विचरण करते हुए जब जूनागढ़ में हाटकेश्वर महादेव के दर्शन के लिए पधारे, तब अट्ठारह साल की उम्र में सूखी लकड़ी के समान शरीर में सिर पर जटा धारण किए एक कोपीन पहनी थी और कन्तान लपेटा था। अलमस्त चाल और आँखों में खूब दिव्य तेज धारण किया हुआ था। मुखारविंद पर एक अनोखी आभा का दर्शन हो रहा था। उनको देख कर वहाँ उपस्थित भक्त उनमें खिंचे जा रहे थे। नागर ब्राह्मणों का समाज वहाँ शिव के दर्शन करके वहीं उनके पास बैठ जाता। पुजारी को हुआ कि ये कल के आये हुए बच्चे से लोग ऐसे आकर्षित होंगे, फिर हमारा क्या होगा? देखो! हठ, मान और ईर्ष्या के ऐसे भाव उत्पन्न हो गए। वहाँ सदाब्रत में महाराज को खाना खाने के लिए बिठाया, तो पुजारी बोले—इधर बैठो। फिर बोले— नहीं, ऐसे करो यहाँ आ जाओ। नहीं, ये जगह ठीक नहीं है। उधर जा कर बैठो। यूँ 16 बार उन्हें उठाया। नागर ब्राह्मण बड़े बुद्धिशाली, सौराष्ट्र के सौ राज्यों में नागर ब्राह्मण ही दीवान थे, उनसे खाने-पीने की तो पड़ी नहीं और दिव्यता के भी दर्शन हो रहे हैं। 16 बारी उठाने पर भी उसकी मरती गई नहीं और 17वीं बार भी दूसरों का कल्याण करने के लिए ही प्रसाद ग्रहण किया। तो उन्हें जाकर किसी ने पूछा कि आपको कुछ नहीं हुआ कि 16 बार जगह बदलवाई। महाराज मरती से बोले— ये पूठ का क्या सम्मान? इस बात का विचार करें। इससे आगे उन्होंने कहा कि समग्र ब्रह्मांड जिसका आसन है, उसे आसन की क्या ज़रूरत है? हम मंडल, सत्संग या सभा में जाते हों और किसी कार्यकर्ता ने शायद हमें पूछा न हो, तो भी हमें बुरा लग जाता है। पर, हम महाराज के बच्चे हैं, हमें ये कभी नहीं भूलना है। अभी बड़े industrialist सवजीभाई ने अपनी बातों में कहा— भगवान मेरे साथ है, सफलता मेरे लिए है। इस बात की उन्हें कैसी मरती है! हमारी कितनी अद्भुत उपासना, कैसी अद्भुत प्राप्ति है! तो हमारी मरती कैसी होनी चाहिए? हम इस बात को सोचें।

भगवान स्वामिनारायण ने दो अद्भुत सूत्र दिए, जो स्वामीजी दोहराते—

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् ।

विभाव्य तेन कर्तव्या भवितः कृष्णस्य सर्वदा ॥



88

यह कठिन है, समझ में आये ऐसा नहीं है। इसलिए महाराज ने अकारण करणा बरसायी। उन्हें हमारे साथ अखंड रहना है, उनका संकल्प है।

दूसरा सूत्र दिया—

दास का दास होकर रहे जो सत्संग में, भक्ति उसकी भली मान कर, नाचूँगा उसकी ताल में। स्वामी कहते— पता है नाचूँगा उसकी ताल में का मतलब क्या? इसका मतलब है कि जैसे हम बोलेंगे, वैसे महाराज करेंगे। हमारी आज्ञा प्रभु मानेंगे! हमारी मरजी के मुताबिक़ वो बरतेंगे! पर, ऐसा संबंध करने के लिए स्वामीजी दास का दास, दास का दास कहते ही रहते थे। ये बात हमें कभी भूलनी नहीं। इसे निरंतर परका करते रहना है। गुणातीत पुरुषों को हम से ये कराना है।

दिनकर अंकल यहाँ विराजमान हैं, वे दासत्व की मूरत हैं। साहेब नहीं पथारे, पर उनके आशीष लेकर रति काका आये हैं। वे भी दासत्व और महिमा की अद्भुत मूर्ति हैं। हमें जो प्राप्ति हुई है, बस इसी विचार में ढूबे रहना है। स्वामीजी अकसर कहते— हम बापा के पास आये, तो हमने कुछ भी किया नहीं है। पर, बापा ने अपने जैसा सुखी कर दिया।

वे कहते पहला— हमने केवल बापा की पसंद का करने की सुलचि रखी।

दूसरा— वरचनामृत प्रथम 16 और 18 के अनुसार पहले दिन से निर्णय कर लिया था, किसी का भी अभाव नहीं लेना। हमें उस ओर देखना ही नहीं है। सिर्फ संबंध और गुण देखने हैं। बाकी मेरा, आपका, सबका हिसाब तो महाराज, स्वामी और सभी स्वरूप करने ही वाले हैं। हमें किसी का काजी नहीं बनना है। **आँख-कान इत्यादि पवित्र रखने हैं।**

स्वामीजी की सभा में एक पादरी आए थे। उन्होंने पूछा कि ‘योगी डिवाइन सोसाईटी’ का कार्य क्या है? स्वामीजी ने एक ही वाक्य में समझा दिया— मुख्यारविंद पर हाथ रख के बोले— हम यहाँ पर इसे repair करते हैं। आँख, कान, नाक, जीभ और होंठ को पवित्र करते हैं। हम उनके बच्चे हैं। हमें इस बात की दृढ़ता करनी है... किसी की तरफ नज़र जाने नहीं देनी, सिर्फ अपनी आत्मा, भगवान स्वामिनारायण और गुरुहरि स्वामीश्री की तरफ नज़र रखनी है और शिक्षापत्री के अनुसार खूब स्वधर्म से जीना है...

संप सुहृदभाव और एकता बापा की रीति थी। हर एक के पास हाथ जोड़ कर दासत्व से वर्ते। बापा की साधुता और भोलेपन क बात करते हुए काकाजी और स्वामीजी कहते कि 5 लपये का किराने का सामान वे गिन न पाते। हमें बातें पता हैं कि शास्रीजी महाराज का अंतिम संस्कार चल रहा था। तो 5-7 बुजुर्ग भक्त आपस में बात कर रहे थे कि शास्रीजी महाराज ने इतनी



कसनी सह के इतनी बड़ी संख्या खड़ी की है। अब पीछे से ये कैसे चलेगी? वे तो चले गए। इस जोगी में तो दो आने नमक जितनी बरकत नहीं है। हम सबको ध्यान रखना होगा। बापा बोले— शास्त्रीजी महाराज जायें, ऐसे पुरुष नहीं हैं। वे कभी नहीं जा सकते। गुणातीत स्वरूपों धरती से जाते ही नहीं। फिर बापा दूसरा वाक्य बोले— आप सब हो, इसलिए शास्त्रीजी महाराज की संख्या बहुत बढ़िया चलने वाली है। बाद में हमने देखा कि आध्यात्मिक इतिहास में वे ज्ञानदर्शक क्रांति लाये। उस वक्त सभी को स्वामिनारायण की *allergy* थी, ऐसे में 51 graduate लड़कों को साधु बनाने का अद्भुत कार्य करके, संप-सुहृदभाव-एकता का मन्त्र दिया।

तीसरी बात स्वामीजी बोले— हम बापा के बल से जिये। गुणातीत पुरुषों के जीवन में यदि देखें, छोटे-बड़े प्रसंग बनने पर प्रभु का ही आधार-बल लिया। कुछ भी होता, तो बापा धून कराते। काकाजी तो धून का स्वरूप थे। 2 मिनट कह कर आधा घंटा धून करवाते। स्वामीजी भी छोटे-बड़े प्रसंगों पर खूब भजन कराते। तो हमें स्वामीजी की इन तीन बातों को पकड़ना है। घर, मंडल या सत्संग में प्रसंग बनें, तो बुद्धि का आधार लेना छोड़ कर भगवान का आधार लें। स्वामीजी कहते हैं कि हमने इन तीन चीजों में सुरचि रखी, तो बापा ने हमें अपने जैसा सुखी कर दिया। स्वामीजी को साधु बनाते समय बापा ने आशीष दिए थे कि ये हजारों को एकांतिक करेंगे। हम सबका इसमें नंबर लग गया।

स्वामीजी का स्वर्धर्म कैसा होगा कि बापा ने राजकोट के गिर्धुभाई सेठ से कहा कि प्रभुदासभाई के स्वर्धर्म के तो शास्त्रीजी महाराज अनादि के ज्ञानती हैं। गिर्धुभाई और नारणभाई सेठ ने शास्त्रीजी महाराज की खूब सेवा की थी। बापा उन्हें खूब प्यार करते और उनके घर ही रहते। वे खूब सेवा खूब करते, मगर उन्हें सत्संग का ख्याल नहीं था। सौराष्ट्र के घरों में तीन तरफ कमरे, बीच में चौक और आगे चबूतरा होता था। बापा side के कमरे में रहते हुए स्वयं रसोई बनाते। इसलिए कुछ सामान लाने के लिए 22-23 साल के प्रभुदासभाई को भेजते। सेठ के घर में उनकी लड़कियाँ भी थीं, इसलिए सेठ को ऐसा होता कि ये लड़का घर में घूमता रहता है। जिसके हृदय में ली भरी हो, उसे औरों के बारे भी वैसा ही संकल्प उठेगा ही। सेठ को हुआ कि लड़के ग़लत झरादे से घर में जाया करते हैं। एक शाम बापा fresh होने गए थे। तब स्वामीजी बाहर बैठे थे कि बापा बाहर आएँगे तो उन्हें नहलाने की सेवा करेंगे। साथ में जोड़ के संत भी बैठे थे। इतने में गिर्धुभाई सेठ आए और प्रभुदासभाई को *out of the way* जाकर डाँटा। बापा अंदर *toilet* में सब बातें सुन रहे थे। बाहर आने पर संत उनके हाथ धुलवा रहे थे, तब हाथ



88

धोते हुए सेठ से बापा ने कहा— हमारे प्रभुदासभाई का स्वधर्म खूब अच्छा है।

उनके स्वधर्म के तो शास्त्रीजी महाराज अनादि के ज्ञानती हैं। उनके बारे और कुछ मत सोचना। स्वामीजी बापा के पास कैसा जीवन जिए होंगे!

...स्वामीजी ने वचनामृत मध्य 28 और 41 के मुताबिक जो सेवा की, हमे ये बातें पकड़ के जीव में उतारनी हैं। जब तक नहीं पकड़ेंगे, तब तक सत्संग की शुलआत नहीं होगी। फिर चाहे सेवा करते हों, मंडल चलाते हों या कथा-वार्ता करते हों। यदि ये बात पकड़ी नहीं गई, तो जीवन में बहुत बड़ा प्रश्न चिह्न लग जाएगा। इसलिए इतने भक्तों के बीच में ये बात कर रहा हूँ...

अगले साल शिक्षापत्री द्विशताब्दी महोत्सव मनाने वाले हैं, तब तक में ये पक्का करके आना है। मुझे तो वो हीरे के व्यापारी सवजीभाई बड़े याद आते हैं, उनकी बात में कितनी मस्ती थी कि भगवान अखंड मेरे साथ हैं। हमे जो माँगना है, वो उनमें से महाराज, स्वामीजी बोल रहे थे, वे खुद नहीं बोल रहे थे... सबने मिल कर एक-दूजे के सहकार से, आत्मीय बन कर ये उत्सव मनाया इसलिए आनंद हुआ। प्रसंग ज़रूर बने होंगे, हमारे यहाँ भगवान प्रगट हैं इसलिए प्रसंग बनते हैं। हमारे विकास के लिए बनते हैं। तब हमें स्वामीजी का सूत्र पकड़ कर रखना है कि कोई आत्मीय बने या न बने और दास का दास... जिस उमंग से सब आज यहाँ पधारे हैं, तो महाराज, स्वामी और सभी गुणातीत स्वरूप हमें ऐसा बल, बुद्धि और शक्ति दें कि हम सबका जीवन केवल स्वलक्षी और स्वरूपलक्षी हो। आत्मीय संस्कार धाम में राकुरजी पथराये हैं। इसमें जिस किसी ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सेवा की हो, चाहे सिर्फ इतना गुण ही लिया हो कि बहुत बढ़िया हुआ, उन सबको हर तरह से सुखी करके उनका जीवन धन्य और कृतार्थ करें— यही प्रार्थना।

दिव्य आशीष की प्राप्ति के उपरांत केन्द्रों के मुक्तों एवं कई महानुभावों ने प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी को हार एवं स्मृति भेंट अर्पण करके अभिवादन किया। पूरे महोत्सव के दौरान मंच पर लगी विशाल Screen पर श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज सहित गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों का विभिन्न रूप में दर्शन होता रहा। ऐसा प्रतीत होता था कि वे सभी साक्षात् विराजमान हैं। महोत्सव का समापन करते हुए, मंच के मध्य में स्थापित अपने आसन से उठ कर प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी, प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई, प.पू. त्यागवल्लभस्वामीजी, प.पू. संतवल्लभस्वामीजी इत्यादि ने Screen की ओर मुख करके महाआरती आंरभ की। साथ ही सभा स्थल में बैठे या इसके आस-पास खड़े करीब डेढ़ लाख मुक्तों ने हाथ में दीपक लेकर समूह आरती करके प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी के प्रति अपना भाव अर्पण किया।



सोफे पर आसीन न रह कर प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी का खड़े रह कर आरती करना एक गहरा संदेश-सीख देता है—

पूर्ण पुरुषोत्तम परब्रह्म भारत में मानव स्वरूप में भगवान् स्वामिनारायण के रूप में प्रकट हुए और अपने साथ अक्षरधाम को गुणातीतानंदस्वामीजी के रूप में साथ लाये। मानव समाज पर अपार करुणा और अनुग्रह करके उन्होंने वरदान दिया कि गुणातीत संतों द्वारा मैं धरा पर अखंड प्रकट रहूँगा। ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज ने श्री अक्षरपुरुषोत्तम उपासना का प्रवर्तन करने अत्यधिक कसनी सह कर श्री अक्षरपुरुषोत्तम के कई मंदिर बनाये। गुणातीतभाव को पाए ऐसे संतों ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज, काकाजी महाराज, पप्पाजी महाराज, हरिप्रसादस्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, संतभगवंत साहेबजी, गुरुजी, प्रेमस्वरूपस्वामीजी, निर्मलस्वामीजी, दिनकर अंकल, भरतभाई, वशीभाई द्वारा हमें भगवान् स्वामिनारायण की सेरेछाया, संबंध और आसरा मिला है; हमारे प्रभु प्रकट हैं, साकार हैं। ऐसे गुणातीत संत तो पुरुषोत्तम परब्रह्म को अखंड धार कर जीते हैं, फिर भी वे सदा दासभाव से उनकी उपासना और भवित करते हैं।

गुरुहरि काकाजी महाराज तो अकसर कहते—

आदम खुदा नहीं है, पर खुदा के नूर से आदम जुदा नहीं...

भगवान् स्वामिनारायण के नूर से युक्त ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी द्वारा भले ही आश्रितों को अलौकिक-दिव्य प्रतीति हुई; लाखों का कल्याण हुआ, लेकिन श्री ठाकुरजी के प्रति दासत्वभाव वे कभी भी चूके नहीं हैं। इसीलिए उत्सवों में महाआरती के समय सोफे पर आसीन रहते हुए वे अपने हस्त में श्री ठाकुरजी को विराजमान करके स्तुति-वंदना करते। इसी प्रकार, श्री ठाकुरजी एवं प.पू. स्वामीजी के प्रति अपना स्वामी-सेवकभाव बरकरार रखते हुए और उन्हें प्रत्यक्ष मानते हुए, महाआरती के समय आसन पर विराजमान न रह कर संतों के साथ श्री ठाकुरजी की आरती करते हुए प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी भावविभोर हो गए। महाआरती के पश्चात् देर रात्रि तक वे हार व स्मृति भेंट द्वारा मुक्तों का भाव ग्रहण करते रहे... ऐसी अनेकी स्मृतियाँ प्राप्त करके सभी अपने गंतव्य स्थान पर गए।

प.पू. गुरुजी के पूर्वाश्रम की बुआ के बेटे पू. किशोरभाई देसाई 27 नवंबर को अक्षरनिवासी हुए थे, सो 28 दिसंबर की सुबह 11:00 बजे पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी-पू. अक्षरस्वरूपस्वामी, सेवक, प.पू. दीदी एवं बहनें उनकी पत्नी पू. रागिनी भाभी एवं बेटी पू. तराना से मिलने उनके घर गए। संयोगवश इसी दिन पू. रागिनी भाभी का जन्मदिन भी था। धुन-भजन करके दोपहर को गुणातीत ज्योत में गए। यहाँ पू. मीना बहन के सान्निध्य में भगवान् भजती बहनों द्वारा प्रेमभाव से बनाया प्रसाद लेकर Flight तथा train से दिल्ली लौटे।



88

दो दिन बाद नए वर्ष 2025 के आगमन हेतु 'कल्पवृक्ष' हॉल में प.पू. गुरुजी की निशा में 31 दिसंबर को 'मध्यरात्रि महापूजा' का आयोजन हुआ। श्री ठाकुरजी के सिंहासन पर निम्न सूत्र लिखा था—

Happy New Year 2025... अब सुनो नहीं- सोचो नहीं- स्वीकारो!

प.पू. गुरुजी के आसन के पीछे की पृष्ठभूमि पर गुरुहरि काकाजी महाराज की मनोहर मूर्ति लगाई थी और आशीष रूप निम्न सूत्र लिखा था—

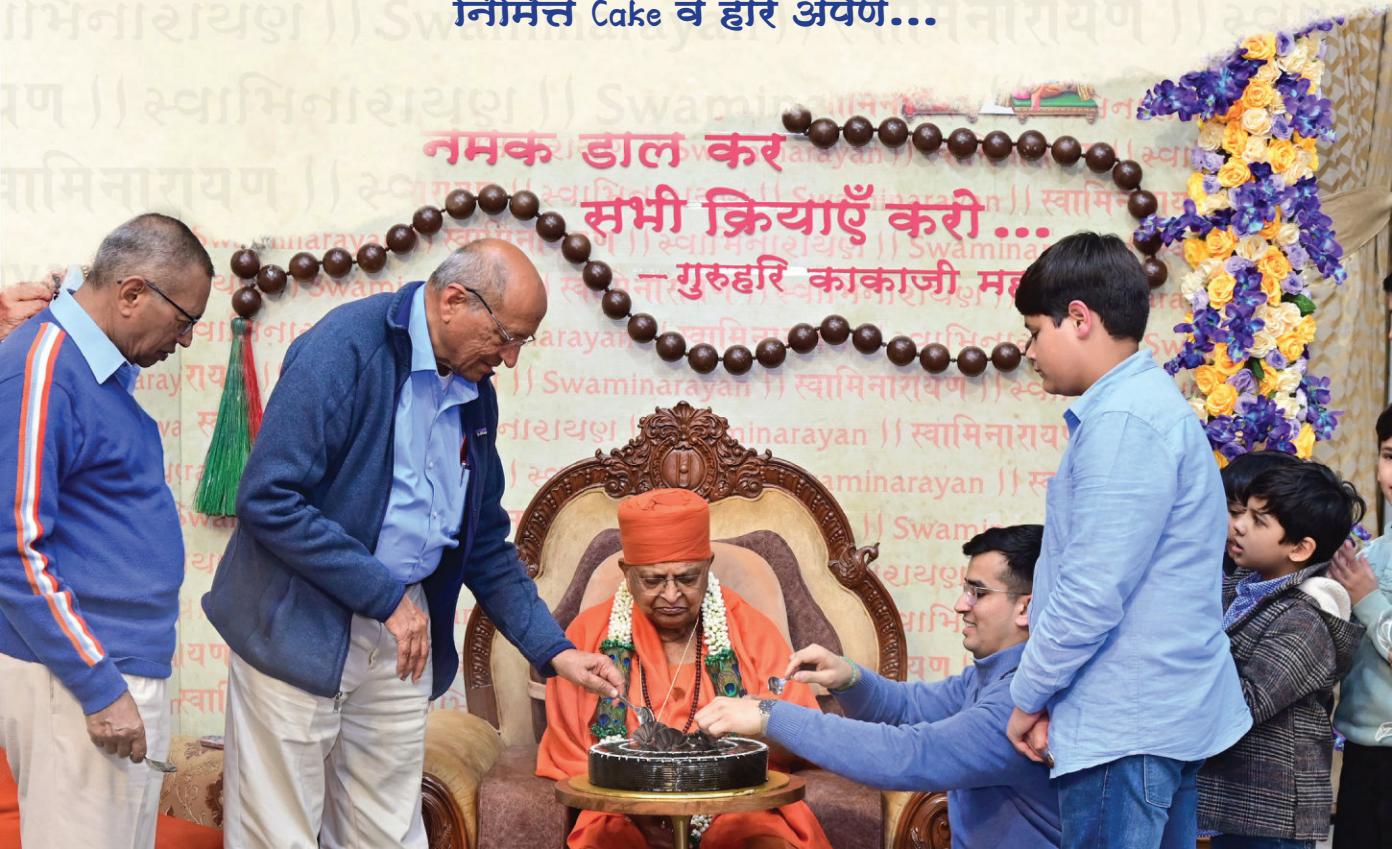
मन में कोई विचार उठे

तो, उस पर अमल करने से पहले
सर्वप्रथम प्रार्थना करके प्रतीक्षा करें
फिर साक्षीभाव से स्मृति करें
और उसके बाद ही कदम बढ़ाएँ!

31 दिसंबर 1801 को गुजरात के 'फरेणी' गाँव में आयोजित सभा में भगवान खामिनारायण ने 'खामिनारायण महामंत्र' का उद्घोष किया था। उसकी स्मृति करते हुए महापूजा संपन्न होने के उपरांत 'खामिनारायण महामंत्र का जग में जय जयकार है...' भजन प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने नए वर्ष में प्रवेश करते हुए ठीक 12:00 बजे निम्न आशीर्वाद दिया—
हमें सदा सर्वथा सुखी-संपन्न और आत्मिक रूप से सबल होने के लिए, भगवान खामिनारायण ने स्वयं करुणा-दया करके मंत्र दिया। कई मंत्र हैं, लेकिन अन्यों मंत्रों में देखें तो जिस देवी-देवता या इष्टदेव के नाम से जो मंत्र दिया जाता है, वो कई ऋषि-मुनियों ने देवी-देवताओं के प्रकटीकरण के बाद कई सालों के बाद दिए हुए हैं। जबकि खामिनारायण मंत्र स्वयं भगवान खामिनारायण ने अपने जीवनकाल दौरान सुद बोला और कहा कि ये मेरा मंत्र है, मेरा मूर्तस्वरूप है। जब भी कोई परेशानी आए, दुःख आए और परेशानी न भी हो, यदि ये मंत्र रटते रहेंगे, तो कभी किसी दुःख की छाया-आभा हमें प्रभावित करेगी नहीं। इसीलिए हम ये मंत्र का रटण करते हैं। मेरी इच्छा-भावना और आज्ञा यह है कि regular रोज़ 20 मिनिट हमें जब भी समय मिले, लेकिन एक fix time पर भले हुए एक का अलग-अलग समय हो, पर fix time पर हम ये मंत्र का जाप करते रहें और हर एक प्रकार से विपदाओं से हम protected बने रहें, इसी भावना से हम ये मंत्रजाप निरंतर करते रहें—यही भावना, इच्छा, आशीर्वाद। हम सारे साल और जो आगे भी आएँगे, इन दौरान सुखी रहने के लिए मंत्र जाप करते रहें, यही भावना, इच्छा और आज्ञा है।
प.पू. गुरुजी से आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, आरती का दर्शन और बादाम-पिस्ते का प्रसाद लेकर सबने प्रस्थान किया।



13 दिसंबर 2024 — य.पू. गुरुजी के त्रैमासिक ग्राकट्टोत्सव
निमित्त Cake व हार अर्पण...



गुरुजी के अंतर में यही भावना अखंड रहती है कि
कैसे चैतन्य को प्रभु में - काकाजी में जोड़ना...



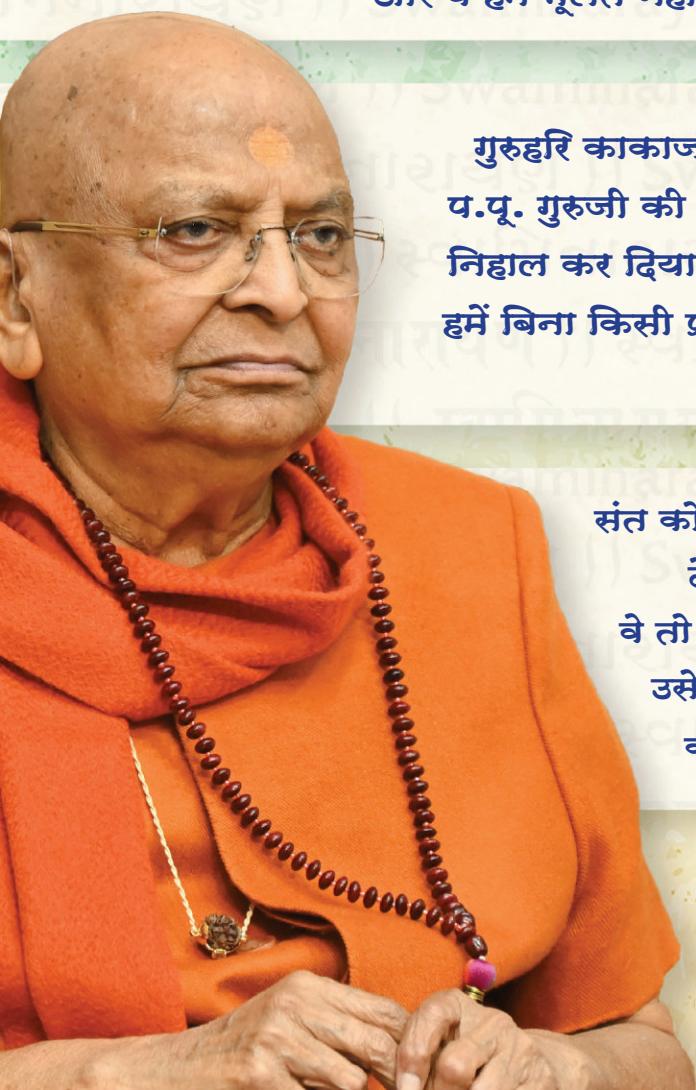
हम ऐसे संत के साथ हेत से जुड़ते हैं,
तो वे हमारी कोई भी मुश्किल में मदद करने और
हमारा कोई भी स्वभाव छुड़ाने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।
गुरुजी को धन्यवाद कि उन्होंने हमारे साथ ऐसा लगाव किया
और वे हमें भूलते नहीं...



गुरुहरि काकाजी महाराज ने हमें
प.पू. गुरुजी की अनमोल भेंट देकर
निहाल कर दिया। ऐसा दुर्लभ संबंध
हमें बिना किसी प्रयास मिल गया...



संत को सिर्फ चमत्कारी के रूप से
देखें, वो सही नहीं है।
वे तो हमारी soul में झाँक कर,
उसे shake करके fix करने
की ताक़त रखते हैं...



ॐ दास का दास होकर, रहे जो सत्यला में, भवित उसको नेक जानु में, नापूरा उसकी तत्व वे ॐ ॐ

17 दिसंबर 2024— संतभगवंत साहेबजी के आगमन पर सभा...



18 दिसंबर — संतभगवंत साहेबजी द्वारा आशीर्वान...

सब कहते हैं भवित करनी है! पर, महाराज ने एक शब्द जोड़ा—माहात्म्य सहित क्या प्रकृत है इसमें? भवित यानी भगवान को राजी करने के लिए किया हुआ ‘कर्म’। उसमें माहात्म्य वाली भवित यानी क्या?

तो बापा इसका दृष्टांत देते—रोटी को मुलायम बनाने के लिए उसमें थोड़ा-सा मोयन डाला जाता है। मोयन के बिना बनाई रोटी को दो हाथ से तोड़नी पड़ती है और लाढ़त होती है। मोयन डाली हुई रोटी खाने में मजा आता है। ऐसे ही माहात्म्य रहित भक्ति बिना मोयन की रोटी जैसी है। माहात्म्य की भक्ति यानी कुछे महाराज, गुरुजी, दीदी की प्रसन्नता प्राप्त करने का मौका मिला! भगिमा के ऐसे विचारों के साथ सेवा करेंगे, तो बोरियत नहीं होंगी, थकान-भूख नहीं लगेंगी, नीद नहीं आयेंगी... उत्साह, उमंग, नित नया ताजी सलाम!

बापा कहते—हमें ताजी सलाम करना।
जब भी सेवा करें, तो दैड़ना।

जब भी बुलाएँ, तो तुरंत जाना।
ये नहीं कि अदे! जाना हूँ थोड़ा

लक कर, क्या जल्दी है?
ये ताजी सलाम कब रख पाएगा?

अगर माहात्म्य होगा!

अंदर से भगवान को राजी करने का भाव हो,

तो नित नया-नौतन दर्शन हो—
तो ऐसा माहात्म्य रखना...





13 दिसंबर 2024 – प.पू. गुरुजी का त्रैमासिक प्राकट्य दिन छुंवं

17 दिसंबर—संतभगवंत साहेबजी का दिल्ली मंदिर में आगमन...

13 मार्च को प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन होता है, यह सभी जानते हैं। इसके अतिरिक्त School Certificate में उनके जन्म की तारीख 13 जून लिखी है तथा उनके प्रति अपना भाव व्यक्त करते हुए भक्त 13 सितंबर को उनका प्राकट्य पर्व मनाते हैं और... 13 दिसंबर की स्मृति करते हुए सालों पहले प.पू. गुरुजी ने बताया था कि जब वे सांकरदा रहते थे, तब गुरुहरि काकाजी ने उन्हें गुलाब का फूल देते हुए कहा था— **जाओ, आज से तुम्हारा नया जन्म!**

पूरे वर्ष में हर तीन महीने पर 13 तारीख तथा फाल्गुन शुक्ल एकम् तिथि के अनुसार, यूँ पूरे वर्ष में **पाँच बार** मनाए जाते उनके प्राकट्य पर्व प्रगट प्रभु की मूर्ति में निमग्न रहने के साधन हैं।

13 दिसंबर की सायं 7:00 बजे प्राकट्य पर्व मनाने के लिए सभी कल्पवृक्ष हॉल में एकत्र हुए। इस बार तो यह पर्व और भी विशेष बन गया कि pacemaker operation के बाद प.पू. गुरुजी का स्वास्थ्य देखने तथा इस प्राकट्योत्सव निमित्त प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्स, पू. संकेतभाई, पू. कृपा बहन व पू. एंजी बहन को साथ लेकर आए। भगवान स्वामिनारायण को सुंदर पीली पोशाक एवं पाघ पहनाई थी। सिंहासन और पृष्ठभूमि को पीले और जामुनी रंग के फूलों से सुसज्जित किया था। पृष्ठभूमि पर माला फेरती स्वरूपों की हस्तमुद्राएँ लगाई थीं और एक बड़ी माला लगा कर, उसके अंदर गुरुहरि काकाजी महाराज का निम्न सूत्र लिखा था—

‘प्रभु’ के नाम का नमक डाल कर सारी क्रियाएँ करो...

इस सूत्र को क्रियान्वित करते हुए सभा के आरंभ में पू. राकेशभाई शाह, पू. ऋषभ गोयल एवं सेवक पू. विश्वास ने ‘सर्वोपरि श्री सहजानंद...’ धुन प्रस्तुत की। फिर पू. ऋषभ गोयल ने ‘गुणातीत अस्मिता जगा रहे हो...’ भजन गाकर प.पू. गुरुजी के प्रति अपना भाव अर्पण किया। तत्पश्चात् पू. राकेशभाई ने त्रैमासिक प्राकट्य पर्व के विषय में बताया और प.पू. दिनकर अंकल एवं प.पू. भरतभाई का शब्द पुष्पों से स्वागत किया। पू. भद्रायुभाई जानी के बड़े सुपुत्र पू. आशिष जानी ने बचपन से लेकर अब तक प.पू. गुरुजी की जो स्मृतियाँ संजोई, उसका संक्षिप्त वर्णन करते हुए निम्न प्रार्थना की—

गुरुजी के साथ बहुत सारे प्रसंग हैं... बचपन से उन्होंने मुझे कैसे mould किया और साथ



88

दिया, उसके बारे में बताता हूँ। 1994 में मैं 12 साल का था और तब मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा के बाद गुरुजी पहली बार हमारे घर आने वाले थे। मेरे माँ-बाप बड़े आतुर थे, उन्होंने banner लगवाया—**धन्य दुआ ये धाम, आपके चरण पद्मारो!** ये सब देख कर मैं सोचता था कि घर पर ऐसा कौन आ रहा है? हाँलाकि गुरुजी से मैं पहले एक या दो बार मिला था। गुरुजी घर पर आए, तो सबने आनंद किया और फिर उन्होंने धुन कराई। मुझे समझ ही नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है? फिर गुरुजी ने कहा—**धुन सब काम करती है।** यह बात मेरे दिमाग़ में fit हो गई। अगले दिन मेरा exam था, जिसकी कोई तैयारी नहीं थी। मैंने सोचा कि गुरुजी ने धुन के बारे में कहा है, तो try करते हैं। तो बेमन से रात को 10 मिनट **स्वामिनारायण धुन** की और 3-4 बजे का alarm लगा कर सो गया कि उठ कर थोड़ा पढ़ लूँगा। पर, सीधा 5 बजे के करीब मेरी आँख खुली और लम की लाइट जली हुई थी। बाद में माँ से इस बारे में पूछा, तो उन्हें भी नहीं पता था कि किसने जलाई थी। फिर 2 घंटे में 12 में से 5 चैप्टर पढ़ पाया था और पेपर में 80 प्रतिशत सवाल उन 5 में से ही आए। तो मुझे fit हो गया कि हाँ, ‘धुन’ में दम तो है, चमत्कारी तो है।

बाद में हम जब मंदिर आते थे तो सभा में न बैठ कर हम खेलते थे। बच्चों के लिए गुरुजी का एक बार message आया कि सभा में बैठना चाहिए। तब मैं गुरुजी से आँखें चुराता था। जैसे वे सामने बैठे हों और मुझे देख रहे हों, तो मैं कहीं और यहाँ-वहाँ देखने लगता। फिर एक बार गुरुजी ने सभा में बात की कि संत जब आपको देखते हैं, तो आपके अंदर का काम चल रहा होता है। फिर मैंने अभिषेक को नोट किया कि कोई भी सेवा से free होने के बाद उसकी नज़र constant गुरुजी की तरफ रही है। यह मुझे impressive लगा और सोचा कि मैं भी try करता हूँ। तो, एक बार मैं गुरुजी की तरफ ही देखता रहा और उनकी नज़र मेरी आँखों में पड़ीं, तो मैं एक टक उन्हें देखता रहा। करीब 15 second हम दोनों आँखें मिला कर मानो Nonverbal communication करते रहे और मुझे ऐसा एहसास हो रहा था कि मानो एक current सा मेरी body में जा रहा हो। तब मुझे लगा कि संत को सिर्फ चमत्कारी के रूप से देखें, वो सही नहीं है। वे तो आपकी soul में झांक कर, उसे shake करके fix करने की ताकत रखते हैं। उस समय कई नई families गुरुजी से जुड़ती थीं। मेरा nature है कि emotionally attach हो जाता हूँ। तो, कई नयों को जुड़ता देख कर मुझे innocence way में jealousy होती थी कि अब गुरुजी मुझसे दूर जा रहे हैं। वे नए लोगों में ज्यादा ध्यान दे रहे हैं, हमारे प्रति अब



उनका पहले जैसा *attention* हो पाएगा कि नहीं, वगैरह। एक बार मैं सभा में बैठा था। तब मैं चश्मा पहनता था। गुरुजी ने मुझे नज़दीक बुलाया और बोले— मेरे School में Maths का एक टीचर था, उससे तेरी शक्ति मिलती है। उसने मुझे बहुत डाँठा है, ऐसा कह कर आनंद कराया। फिर जब मैं मंदिर आता, तो कहते कि मेरा, Maths का टीचर आ गया! अंतर्यामी रूप से उनका ये बताने का तरीका था कि ऐसा नहीं होता कि नए लोगों के कारण पुरानों को भूल जाएँ।

गुरुजी के प्राकृत्य दिन का एक *function* था, जिसमें *stage* पर *ship* की *theme* थी। मुझे मन में ऐसा था कि सेवा ऐसी करें कि जो सबको दिखाई दे। मुझे *thermocol* का *gate* बनवाने की *duty* थी। वह सेवा करते हुए मैं *relax mood* में चाय पी रहा था कि रात को 2 बजे सबको *message* मिला कि गुरुजी तैयारियाँ देखने के लिए आ रहे हैं। मुझे हुआ कि उन्हें *impress* करें। मैं दिखावा करने के लिए फटाफट सीढ़ी पर चढ़ कर काम करने लग गया। *Guruji has eye for detail*, वे गाड़ी में आए और *gate* पर देखे बिना आगे *stage* पर चले गए। मैं सीढ़ी पर छड़ा-छड़ा देखता रह गया कि ये क्या हो गया? अगले दिन बारिश हुई, तो बाकी सब ठीक रहा लेकिन जिस *gate* पर मैं काम कर रहा था, वो पूरा झराब हो गया। तब *realise* हुआ कि गुरुजी जो कई बार कहते हैं कि ये धंधे करने हम मंदिर नहीं आते। *Office environment* में अपने को आगे दिखाने के लिए *promote* करना पड़ता है। पर, सत्संग में जितना पीछे रहेंगे, उतना अच्छा और तभी हमें गुरुजी का *certificate* मिलेगा कि भाव से सेवा की न कि दिखावे के लिए।

2012 के *function* के बाद जब मैं वापिस शिकागो गया, तो वहाँ मंदिर में *park* की गई मेरी car लेने गया। वहाँ से मेरा घर 3 घंटे की *drive* पर है। पिंटूभाई ने मुझे 3-4 बार पूछा— तेरे पास गाड़ी का *insurance* है? मैंने कहा— नहीं। देर रात होने के कारण वे बोले कि यहीं मंदिर में रुक जा, सुबह चले जाना। पर, मैं उनकी बात माना ही नहीं और उन्होंने *insurance policy* का पेपर पर *print* निकाल कर दिया। उस समय बहुत बर्फ गिरी थी और मेरी गाड़ी बहुत बड़ा *accident* हो गया। *Road* पर जमी *black ice* दिखती नहीं है, पर स्लिपरी होती है। उससे *accident* हुआ और गाड़ी पलट गई *Highway* पर *side* में *snow* में जा अटकी। मेरा रियर गाड़ी की छत से *touch* हो रहा था। पुलिस आई, पर उन्हें मेरी गाड़ी दिख ही नहीं रही थी। फिर बड़ी मुश्किल से मुझे बाहर निकाला। जब गाड़ी पलटी तो *air bags* वगैरह सब खुले, पर



88

काकाजी-गुरुजी की मूर्ति गाला गोल लटकन खुल कर मेरे सिर के पास गिरा।

आँखों के नज़दीक मूर्ति बहुत बड़ी दिख रही थी। अभी भी ये बात करते हुए मेरे रोंगटे छड़े हो रहे हैं। मेरी body पर एक भी खरोंच नहीं थी और Ambulance वाले यही बोले कि पता नहीं, आप जीवित कैसे हैं? संभलने पर मैंने सबसे पहले माँ-बाप को नहीं, गुरुजी को फोन किया। गुरुजी भी इतना concerned थे कि बोले तू ठीक तो है न? कुछ हुआ तो नहीं? सच बता। तो, ऐसे रक्षा करते हैं।

अभी मम्मी-पापा 4 महीने के लिए मेरे पास अमेरिका आए थे। मेरे दोस्तों के माँ बाप आते हैं, तो उन्हें देखा है कि वे वहाँ ज्यादातर bore होते हैं। पर, रोज़ रात को 3 घंटे India वालों के साथ मम्मी-पापा के फोन चलते थे। उनमें से 90 प्रतिशत सत्संगी ही थे। गुरुजी ने ये जो familyhood create किया है, यह बहुत बड़ी बात है। *We are very blessed and lucky.* आज मांगने का दिन है, गुरुजी ने अब तक हमारे लिए जो किया, इसे हल्के में न लें। धुन प्रार्थना में मैं हमेशा आपसे मांगता हूँ और आज सामने कहने का मौका मिला है, तो एक 'भुलके' की निर्देष जिद समझिए कि आप अपनी health खूब अच्छी रखें। आपकी शताब्दी खूब आनंद से हम सब दिनकर दादा और भरतभाई के सान्निध्य में मनायें...

तदोपरांत प.पू. भरतभाई ने आशीर्वाद दिया—

...मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी को 'वचनामृत' की जयंती आई। भगवान् स्वामिनारायण द्वारा इस दिन पहला वचनामृत हुआ था। उसमें महाराज ने कहा कि भगवान् और उनके धारक संत में अखंड वृत्ति रखना कठिन से कठिन साधन है। चांद्रायण ब्रत, तप, कई मन्त्रों मानने से बढ़ कर ये साधन हैं। क्यों? क्योंकि अगर ऐसे कहें कि ब्रत-तप कर रहे हैं, तो उसका मान आ जाता है। ये हमें निर्मानी नहीं रहने देते। मन में ऐसा हो जाता है कि मैं ऐसा great हूँ, वैसा हूँ। मगर संत में अखंड वृत्ति रखेंगे, तो संत हम में हठ, मान या ईर्ष्या का भाव कुछ आने नहीं देते। बल्कि इन सबसे हमें आगे ले जाते हैं। इसलिए उनमें अखंड वृत्ति रखना बहुत ज़रूरी है। हम सबको गुरुजी और ऐसे स्वरूपों के साथ बहुत लगाव हो गया है। हम जब काकाजी के संबंध में आए, तो उनके साथ भी ऐसा लगाव हो गया कि सहज ही कोई भी प्रसंग हो या कुछ भी हो तो वे ही याद आते हैं। सहज ही हमें पूरा दिन यही रहता है कि उन्हें राजी करना है। वे जो कहते हैं, वो करना है, उनकी मरजी के मुताबिक़ करना है। उनकी हम पर बहुत बड़ी कृपा-करणा है कि हमारे साथ उन्होंने ऐसा प्रेमभाव-हेत का संबंध किया। हम ऐसे संत के साथ हेत से जुड़ते हैं, तो वे हमारी कोई भी मुश्किल में मदद करने और हमारा कोई भी स्वभाव छुड़ाने के लिए हमेशा



तत्पर रहते हैं। हमें जाग्रत करते रहते हैं। गुरुजी को इसके लिए धन्यवाद कि उन्होंने हमारे साथ ऐसा लगाव किया और वे हमें भूलते नहीं...

बापा, काका और खलपों के साथ गुरुजी का विशिष्ट संबंध है। गुरुजी ने उस समय दिल्ली से ऐसी *setting* कर रखी थी कि खत लिख कर आज *speed post* करते, तो अगले दिन सुबह काकाजी के हाथ में वो पहुँच जाता। उसमें वे खुले दिल से बहुत अच्छी-अच्छी बातें लिखते थे... ऐसे ही रात को बापा सो रहे हों, तो डेढ़ बजे गुरुजी उनके कमरे में जाकर बैठते। बापा ने भी सेवक को *special instruction* दे रखी थी कि मुकुंद आए तो उसे अंदर बैठने देना। कैसा संबंध होगा! वर्ना तो ऐसा हो कि नहीं-नहीं, *disturb* होगा। **निर्दोषभाव, दिव्यभाव, खुलेपन का ऐसा संबंध हमारा इन खलपों के साथ हो यही प्रार्थना।**

सालों पहले गुरुजी के साथ छपिया में महाराज के जन्म स्थान का दर्शन करने जाना हुआ। वहाँ किसी के नाम की एक तस्ती लगाई थी। उसे देख कर गुरुजी को यही विचार आया कि यहाँ काकाजी के नाम की तस्ती लगवानी है... आज दिल्ली में देखें तो सब कुछ काकाजी से जुड़ा हुआ है। काकाजी लेन, तीन फरवरी पार्क और इस परिसर का नाम 'ताड़देव' इसलिए रखा है क्योंकि काकाजी 40 साल वहाँ रहे। उनको अखंड यही विचार आता है। काकाजी की *postal stamp* का भी विचार सबसे पहले गुरुजी को आया। तब वो खूब मुश्किल था, मगर किसी तरह *stamp* निकली... मुंबई में बहुत लोग कहते हैं कि गुरुजी काकाजी के कितने सारे प्रसंग बताते हैं।

गुरुजी भजनीक हैं। गुरुजी रात को दो-ढाई बजे बैठ कर माला फिराते-धुन करते। किसी भक्त ने उनसे वो माला माँगी, तो रात को ढाई बजे उसे आवाज सुनाई पड़ती— उठो, भजन करो, माला फिराओ। उसे हुआ कि ये कौन बोल रहा है? फिर उसने गुरुजी से पूछा तो उन्होंने बताया— मैं रात को 2 बजे से 4-4:30 बजे तक भजन करता हूँ। उसे आदत पड़ी है कि मेरा मालिक मुझे फिराए। **जिनकी माला भी बोलती है, तो उनका कैसा भजन होगा!** काकाजी अकसर कहते कि मेरा एक स्वामिनारायण मंत्र और आप के एक लाख माला, दोनों बराबर हैं। इतना फँक है मेरे और आपके भजन करने में, ऐसा गुरुजी का भजन है।

भगवान को किसी ने प्रश्न किया कि आपके और हमारे प्रेम में क्या फँक है? भगवान बोले— आकाश में जो पंछी उड़ रहे हैं, वो मेरा प्रेम है और उसे जिसने अपने पिंजरे में बंद किया है, वो आपका प्रेम है। ये सबसे बड़ी बात है कि वे हमें स्वतंत्र बनाना चाहते हैं। **हम स्वतंत्र बनें**



88

और भगवान को धारण करते हो जाएँ, गुरुजी की ये भावना हमेशा रहती है। वे हमें सिखाते हैं कि ऐसा सच्चा प्रेम करो।

किसी बहन ने मुझे बताया था कि आनंदी दीकी जब पुरानी अक्षरज्योति में रहती थीं, तब उन्होंने कमरे की टेबल पर रखी गुरुजी की photo frame की ओर इशारा करते हुए बताया कि गुरुजी को कितनी बातें पूछवाऊँ? तो, ये फोटो से पूछ लेती हूँ और उससे वे जवाब देते हैं कि ऐसा करो। तो, गुरुजी ये *training* दे रहे हैं कि प्रभु से हम ऐसे जुड़ें।

एक बार काकाजी ने हम सबसे पूछा—*Who is the great liberator?* किसी ने तुरंत कहा—*Abraham Lincoln.* यह सुन कर काकाजी खुश हो गए कि हाँ, उसने गुलामी की प्रथा का अंत किया था। तो, भगवान को धारण करते हो जायें, ऐसी स्वतंत्रता जो सिखायें वो सच्चे संत-सच्चे प्रेमी हैं। वे हमें यही देना चाहते हैं।

एक वचनामृत में लिखा है कि भागवत धर्म का स्थापन-प्रवर्तन करने वाला कौन? वैसे तो संत में 64 विशेषताएँ होनी चाहिएँ। भागवत के अनुसार 39 या 30 होनी चाहिए। भक्तचिंतामणि में भी कई बतायी हैं। लेकिन, सूतपुराणी ने इस वचनामृत में एक ही जवाब दिया कि ऐसे निर्मत्सर संत ही भागवत धर्म का प्रवर्तन कर सकते हैं। तो, ऐसों का संबंध हमें हुआ और वे हमें वैसी स्थिति प्राप्त करवायेंगे। मत्सर में मान-ईर्ष्या ये सब है। जैसे कर्ण इतना दानवीर कि कोई बोले कि दान में अपनी जान दे दो, तो वो भी दे दे। इतना powerful था। लेकिन, उसका मक्कराद क्या था कि ये दान में तब तक कलंगा, जब तक अर्जुन को मालंगा नहीं। अर्जुन की मौत की जो intention वही मत्सर है।

गुरुजी चाहते हैं कि छोटे-बड़े हम सब गुणातीतभाव वाले साधु हों। दिनकर अंकल हमेशा एक ही बात कहते हैं कि ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की भक्ति करने वाले बनो। ये गुणातीत संतों की एक ही भावना है। उन्हें ऐसा कुछ नहीं कि मंदिर बड़ा हो जाए, बहुत भक्त हो जाएँ। लेकिन, जो भी आए, वे ऐसे भाव से तैयार हों, वो ही एकमात्र लक्ष्य है। इसी कारण वे हमें भाव से बुलाते हैं। गुरुजी के चरणों में प्रार्थना कि उनकी जो भावना है, उसके अनुसार हम जल्द से जल्द ये रूप बन जाएँ और आपकी प्रसन्नता हमेशा हम पर बनी रहे।

प.पू. भरतभाई से आध्यात्मिक सूझ़ा प्राप्त करने के बाद, पू. उज्ज्वल अग्रवाल ने ‘अहो, काकाश्रीना प्यारा लाडीला मुकुंद...’ भजन प्रस्तुत करके भक्ति अदा की।

13 दिसंबर के अनुसार पूरे गुणातीत समाज के आत्मीय अक्षरनिवासी पू. मल्कानी अंकल का भी जन्मदिन था। उन्हें याद करते हुए और प.पू. गुरुजी के निरामय स्वारथ्य व दीर्घायु की



शुभकामना के साथ प.पू. दिनकर अंकल ने निम्न आशीष वर्षा की—

...हमारे आशीष जानी ने भी बड़ी अच्छी बात की कि गुरुजी की आँख से आँख मिली, तब से बड़ा परिवर्तन आ गया। गुरुजी सब के लिए *decide* करते हैं कि कैसे चैतन्य को प्रभु में-काकाजी में जोड़ना। उनके अंतर में वही अखंड रहता है... राकेशभाई ने गुरुजी के *quaterly birthday* का इतिहास सुनाया। 13 मार्च *real birthday*, विक्रम संवत् 1994 के अनुसार फागुन शुक्ल एकम्, *school certificate* में 13 जून और 12 जून को काकाजी का प्रागट्य दिन। तो, 12 के बगल में ही तेरह आता है। यूँ काकाजी को धारण करते हुए *school certificate* में उनका 13 जून और 13 दिसंबर को काकाजी ने सांकरदा मंदिर में शायद 1968 में आशीष दिए थे कि आपका ये नया जन्म। उस दिन शुक्रवार था और आज भी शुक्रवार है। वो ही हम आज मना रहे हैं। फिर भक्तों को भाव हुआ कि 13 सितंबर को भी मनाया जाए। तो, 13 सितंबर भी खूब अनोखा दिन। इस दिन महंतस्वामी महाराज का प्रागट्य दिन है। जब सब दादर मंदिर में रहते थे, तब गुरुजी और संत उनकी *guidance* में रहते थे और महंतस्वामी का गुरुजी के प्रति अनोखा संबंध था... 1 सितंबर को पृष्ठाजी का भी प्रागट्य दिन आता है, तो पृष्ठाजी के साथ भी गुरुजी का उसी तरह से एक संबंध हमें दिखाई देता है...

...जब भी भक्त को जलरत होती है, तो भगवान् प्रगट हो ही जाते हैं। ऐसे ही ओ.पी. अग्रवालजी सुबह बोले कि गुरुजी का हर रोज़ *birthday* है। आज मल्कानी अंकल का भी *birthday* है, अगर वे होते तो गुरुजी के बारे में यही कहते। काकाजी और गुरुजी के आशीर्वाद से *Multi Millionaire* मल्कानी अंकल स्वामिनारायण धन के *Multi Millionaire* बन गए। वे *constant* इतनी धन करते थे। वे अपने मित्र के जरिए काकाजी के संबंध में आए थे। खाना खाने के बाद उनके पेट में *pain* रहता था। कई *Doctors* को दिखाया, पर *pain* नहीं गया। क्यों नहीं गया? क्योंकि काकाजी वो *pain* मिटाने वाले थे। काकाजी से मिलने के लिए वे ए-103 में आए और सारी बात बताई। तो, काका बोले— ये तो बहुत आसान है। उन्होंने बापू से कहा— मेरे *bag* में से वसंतमालती दवाई की गोलियाँ ले आओ। बापू तो आयुर्वेदिक के आधे *expert*, वे सोचने लगे कि वसंतमालती का पेट के दर्द से कोई *connection* नहीं है। काकाजी ऐसे कैसे ठीक करेंगे? मगर बड़े पुरुष किसी पदार्थ या प्रसंग को निमित्त बनाते हैं। दरअसल उनके आशीर्वाद ही काम करते हैं। उन्होंने वो गोली उन्हें दी और परेशानी मिट गई, अंकल खुश हो गए। ये बात शायद 83 की है। फिर 84-85 में भी काकाजी जब अमेरिका आए थे, तो *business* के काम से अंकल भी *New York* आते रहते थे। काकाजी *waukegan* में हमारे घर से फोन पर अंकल



88

से बात करते थे। मगर किसी कारणवश काकाजी से उनकी मुलाक़ात नहीं हुई।

सिर्फ एक बार दिल्ली में ही दर्शन हुए थे। फिर 1986 में तो काकाजी स्वधाम सिधारे। गुरजी के लिए तो मानो पैरों तले ज़मीन खिसक गई। हम सब और बापु भी बेहाल हो गए थे। अंकल काकाजी की प्रार्थना सभा में यहाँ आए थे। अंकल ने गुरजी से कहा कि मैं जानता हूँ कि काकाजी आपके लिए सर्वरच थे। मगर मुझसे जैसा हो सकेगा वैसा आपको मंदिर बनाने के लिए support करूँगा। उन्होंने तुरंत ही बड़ी रकम देने की बात की, लेकिन गुरजी ने कहा कि जब भी मंदिर शुरू करना होगा, तो आपसे कहूँगा। गुरजी को धन से कोई लेना-देना नहीं, काकाजी के साथ उनका संबंध कैसे जारी रहे, वो ही एक तान...

अंकल ने इस मंदिर की सेवा में खूब योगदान दिया। 1994 में यहाँ मूर्ति प्रतिष्ठा हुई। पहले 1993 में होने वाली थी। तब मैं अंकल के ऑफिस में गया था। वे मुझे बोले—मैं गुरजी के लिए कुछ भी कर सकता हूँ। आप बताओ मैं क्या करूँ? मैंने कहा—मैं क्या कहूँ, आप करते ही हो। तो बोले मैं गुरजी के इस प्रागट्य दिन पर उन्हें गाड़ी भेंट देना चाहता हूँ। मैंने कहा—ये तो बढ़िया बात है। अंकल एकदेशस्थ नहीं थे, broad minded-सर्वदिशीय थे। पप्पाजी, स्वामीजी, साहेबजी के साथ भी खूब ही जुड़ाव। यह चीज़ काकाजी को बहुत पसंद थी। आज हम प्रार्थना करें कि काकाजी को जो पसंद है, वे हमें जिस कक्षा पर ले जाना चाहते हैं वहाँ पहुँचें।

सुबह अद्वितीय गए थे। वहाँ गुरजी की जो मूर्ति है, वो बहुत निराली-personalise दिखती है। मैं तब सोच रहा था कि मूर्ति कहीं भी लगाएँ, पर भक्तों की जितनी भावना होगी, उननी मूर्ति में से vibrations आती रहेंगी। तो, हम अपने दिल में वो मूर्ति बिना और गुरजी को राजी करें।

विद्यानगर में 1967 में पोषी पूर्णिमा के दिन साहेब के साथ सब ब्रतधारी भाई रामकृष्ण मिशन के हॉल में बैठे थे। काकाजी, पप्पाजी और सोनाबा प्रभुकृपा में थे। काकाजी ने सहज पूछा कि सब माझ्यों कहाँ हैं? सोनाबा बोलीं कि पोषी पूर्णिमा के लिए रामकृष्ण मिशन गए हैं। काकाजी बोले—चलो, हम भी वहाँ जायें। काकाजी ने साथ में गुलाब के कुछ फूल लिए और वहाँ जाकर कहा कि गुणातीतानंदस्वामी को महाराज ने डभाण में जो दीक्षा दी थी, वो ही दीक्षा हम आज आपको दे रहे हैं। ऐसा कहकर हर एक को फूल दिया। तब से वो दिन साहेब के लिए खूब महत्वपूर्ण हो गया।

इस बार दीदी के प्रागट्य दिन पर पोषी पूर्णिमा है, हम जहाँ होंगे वहाँ से प्रार्थना करेंगे... 2003 में पोषी पूर्णिमा के दिन ही हम दिल्ली में थे। तब गुरजी ने भी भरतभाई, वशीभाई, बापु, मुझे



ये कपड़ों की दीक्षा दी। तो, हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण दिन है। मैं कई सालों से प्रार्थना करता रहता कि काकाजी के जो लाडले गुरुजी, वे ही हमारे गुरुजी और उन्हीं ने हमें दीक्षा दी। इसलिए वे हमारे सद्गुरु-परम गुरु हैं। तो, ऐसे गुरुजी के प्रागट्य दिन पर आशीष याचना करें कि वे हम पर खूब बरसें। उनका स्वास्थ्य खूब अच्छा रहे। आशीष जानी ने मांगा कि गुरुजी की शताब्दी हम मनायें। मैं तो कहता हूँ कि मेरी mother 108 साल तक जीकर गई, तो गुरुजी भी 108 वर्ष पूरे करें।

तत्पश्चात् पू. राकेशभाई एवं पू. पंकज रियाज़जी ने 'काकाजी को साक्षात् प्रगटाया है...', 'गुणातीत-सी छवि कमाल...' 'एक गुरु का साथ हमको तीन लोक से प्यारा...' भजनों द्वारा महिमागान किया।

तदोपरांत प.पू. गुरुजी ने निम्न आशीर्दान दिया—

...जब भी आशीर्वाद देने की बात आती है, तो मुझे याद आता है कि मेरा जन्मदिन या काकाजी का साक्षात्कार दिन का कोई शुभ दिन था। तब मैंने काकाजी से प्रार्थना की कि आशीर्वाद दें। वे तुरंत बोले—अब क्या आशीर्वाद देने? आप खुद आशीर्वाद लय हो गए। ऐसे ही पण्याजी से एक बार बात हुई थी। उन्होंने भी यही बात दोहराई—क्या आशीर्वाद देने? आप तो काका को अखंड धार के बैठे हो। बस अब सबको आशीर्वाद देने लगो। ऐसा कह कर थापा दिया।

मेरा कहने का मक्कसद ये कि दिनकरभाई, भरतभाई, वशीभाई, राजू, राजू भट, हरखचंद, सब हमें काकाजी के आशीर्वाद पाई हुई विभूतियाँ मिली हैं। तो कोई नया आशीर्वाद न देना है, न माँगना है। बस एक ही बात करनी है कि इनकी दिव्यता को भीतर में तनिक भी भंग न होने दें। दिल में पक्का रहे कि ये काकाजी की विभूतियाँ दिव्य हैं। ये बरकरार रहे, यही आशीर्वाद की याचना-प्रार्थना और आशीर्वाद।

आज के मंगलकारी दिन स्वरूपों से आशीष प्राप्त करने के पश्चात् सभी की ओर से अभिवादन करते हुए पू. पुण्यम् मल्होत्रा ने प.पू. भरतभाई को एवं पू. नैवेद्य अग्रवाल ने प.पू. दिनकर अंकल को हार अर्पण किया। पू. युग भास्कर का भी आज जन्मदिन था, सो उसने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण करके आशीर्वाद लिया और पू. राजकुमार गोयलजी ने प.पू. गुरुजी को शॉल की भेंट दी। केक अर्पण से सभा का समापन हुआ।

14 दिसंबर की दोपहर को प.पू. दिनकर अंकल मुक्तों के साथ संभाजीनगर गए और प.पू. भरतभाई तथा पू. कृपा बहन मुंबई गए। प.पू. गुरुजी के त्रैमासिक प्राकट्य पर्व की स्मृतियाँ में सब निमग्न थे कि साल का यह अंतिम माह मानो आशीर्वाद की बौछार से युक्त बना। अनुपम

मिशन से जुड़े लंदन के निजी कुटुंब के अक्षरनिवासी पू. रौनक ठक्कर के अस्थि विसर्जन हेतु मोगरी से संतभगवंत साहेबजी हरिद्वार आए हुए थे। अस्थि विसर्जन का कार्यक्रम पूरा होने के पश्चात् 17 दिसंबर को सीधा मोगरी जाने वाले थे। परंतु, सदगुरु संत प.पू. अश्विन दादा से फोन पर प.पू. आनंदी दीदी ने सहज प्रार्थना की— साहेबजी यहाँ तक आए हैं, तो दिल्ली हमें दर्शन देने आएँगे? प.पू. दीदी की प्रार्थना स्वीकार कर एक दिन के लिए 17 दिसंबर की सायं 6:00 संतभगवंत साहेबजी दिल्ली मंदिर आए। 85 वर्ष की आयु में भी संतभगवंत साहेबजी का भक्तों के लिए दिन-रात इतना परिश्रम देखते हुए बड़ी सभा का आयोजन नहीं किया था। लेकिन, ये गुणातीत स्वरूप तो भक्तों के प्रति भक्ति अदा करने हेतु अपनी देह को तनिक भी नहीं गिनते। संतभगवंत साहेबजी तो सहजता से चिदाकाश में सोफे पर विराजमान हो गए। उनके चेहरे पर झलकती अतिशय थकान को देखते हुए उनसे विनती की कि वे थोड़ी देर आराम कर लें, फिर सबको दर्शन-आशीर्वाद देने के लिए आएँ। पर भीड़ भक्ति को ही आधार बना कर जीते संतभगवंत साहेबजी ने मना किया, लेकिन फिर भक्तों की भावना के वश वे आराम में गए और करीब 8:00 बजे आए। तब तक रोज सायं आते स्थानिक मुक्त दर्शन हेतु आ गए थे। पू. राकेशभाई शाह एवं सेवक पू. विश्वास ने भजन प्रस्तुत किया। तब पू. पुण्यम् मल्होत्रा को तबला बजाने की सेवा करता देख, राजी होकर संतभगवंत साहेबजी ने उसे अपने नज़दीक बुलाकर आशीष दी। अत्यधिक थके होने के बावजूद भी संतभगवंत साहेबजी ने लगभग एक घंटा निम्न आशीर्वाद देकर सबको निहाल किया—

गुणातीत ज्योत में शांता बहन पोपट जिन्हें 'बेन' कहते थे, उनके बेटे कांतिभाई की लंदन निवासी बेटी दर्शना-विजय कुमार का बड़ा बेटा रौनक 36 साल की उम्र में पिछले साल अक्षरनिवासी हुआ। रौनक बड़ा होनहार, सबके प्रति प्रेम और भक्तिभाव वाला लड़का था। उसके अस्थि विसर्जन के लिए हरिद्वार में कार्यक्रम रखा था। इंग्लैंड, ब्रह्मज्योति वर्गेरह से 135 जने आए थे।

अभी पप्पाजी का 108वाँ प्रागट्य पर्व पप्पाजी तीर्थ पर मनाया था, तब गुरुजी, संत, भक्त, आनंदी दीदी, बहनों सब वहाँ आए थे। गुरुजी को वहाँ *health* में थोड़ी *trouble* हुई और दिल्ली आकर *pacemaker* लगवाया। उस बात को एक महीना हो गया। तब से गुरुजी का दर्शन करने आने का सोच रहा था। तो, ये कार्यक्रम बन गया कि एक रात गुरुजी के साथ रहेंगे। आते ही जेतलपुर कॉबिन में गुरुजी का दर्शन किया, तो उनकी तबीयत बहुत अच्छी देख कर खुशी हुई। पप्पाजी तीर्थ पर जब देखा था, तब बहुत कमज़ोर लग रहे थे। ये सबकी प्रार्थना और सेवा



की फलश्रुति है। हमें सेवा देने के लिए ही वे ये सब ग्रहण करते हैं। महाराज, स्वामी, भगतजी, शास्त्रीजी महाराज और बापा के तो हमने दर्शन किए हैं। इन सबका एक उद्यम हैं कि सबको भजन करवा कर उनकी मूर्ति में लीन रखना है। उनमें खींचे रखने के लिए बीमारी का श्रेष्ठ उपाय लेते हैं।

एक बार शास्त्रीजी महाराज अटलादरा में विराजमान थे, तो 104 बुखार था। तब सब घबरा गए और ठंडे पानी की पट्टी रखी जा रही थी। लेकिन बुखार उतर ही नहीं रहा था। किसी को उनके दर्शन करने के लिए जाने नहीं देते थे। दरवाजे पर दो पहरेदार खड़े कर दिए थे। शास्त्रीजी महाराज के पास सेवक उनकी सेवा करते रहते थे। पाँच दिन तक किसी को दर्शन नहीं हुए। भक्तों को गुरु के प्रति इतना प्रेम कि दर्शन के बिना रह नहीं सकते। वे कहते— हम कुछ बोलेंगे नहीं, खाली अंदर जाकर उन्हें देख कर आ जाएँगे। फिर प्रमुखस्वामी ने विनती खीकार की। शास्त्रीजी महाराज ने आँखें खोलीं, तो सब खड़े थे। सबको पास बुला कर नजदीक बिठाया और बैठ कर अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना की गातें करने लगे। तकरीबन पौना घंटा लगातार उन्होंने गात की। उसके बाद सेवक को बुला के *temperature* नापा, तो *normal* हो गया था। सुन कर सब चौंक गए। तब शास्त्रीजी महाराज बोले—आप सब मेरे पास बैठते नहीं हैं; कथा नहीं सुनते हैं, इसलिए मैंने बीमारी ग्रहण कर ली। इस तरह ऐसे पुरुषों का बीमारी ग्रहण करने का हेतु अलग-अलग होता है। वे हमें अपनी मूर्ति में लय-लीन करना चाहते हैं। जाग्रत बनाते हैं कि उनके बिना हम कोई सोच में न जायें। उनकी देह का पूरा नियंत्रण उनके हाथ में है, वे जो चाहे कर सकते हैं। गुरुजी की तबीयत अच्छी दिखाई देती है, इसका मतलब कि आप सब दिल से भजन करते हो और उनका होकर जीते हो। संत, युवक, भक्त, बहनें ही उनका जीवन हैं और वे हमारा जीवन हैं।

हमारी आध्यात्मिक प्रगति कराने के लिए प्रभु ने हमें गुरुजी दिए हैं। वचनामृत गढ़ा प्रथम में महाराज कहते हैं—मन की वृत्ति प्रभु में अखंड रहना, वो सबसे कठिन साधन है। जिसके मन की वृत्ति प्रभु के स्वरूप में अखंड रहे, तो उससे बड़ी कोई प्राप्ति नहीं है। क्योंकि जो मूर्ति सिद्ध हो गया, वो जो चाहे कर सकता है, जो सोचे वो बन सकता है। तो, गुरुजी की हमेशा यही एक इच्छा होती है कि हमारा मन अखंड उनकी मूर्ति में रहे। ये सब मंदिर, सत्संग का विकास तो उनके संकल्प से होता रहेगा। मगर हम जो उनके हैं, उन्होंने जिन्हें दीक्षा दी है, खीकार किया है ऐसे भक्तों पर उनकी बहुत बड़ी दृष्टि है। इन सबको प्रभु में अखंड लय-लीन करना है। चाहे गृहस्थ हो या त्यागी, उसमें कोई फँक नहीं है। भीतर का संसार छूटना चाहिए। संन्यासी भी



संसारी होता है और संसारी भी सन्यासी होता है। संन्यासी प्रभु की मूर्ति के बिना, गुरु की आज्ञा के बिना जीवन जीता हो तो वो संसारी है और जो गुरु की आज्ञा में रह कर संसार की सभी क्रियाएं करता हो वो सन्यासी है। भीतर में सन्यास प्रगटाना है। बापा भी खूब बीमारियाँ ग्रहण करते थे और ऐसा लगता कि वे बीमार हैं तो बाहर नहीं जाएँगे। पर, दो दिन बाद तो विचरण में चले जाते थे। आप सबकी भक्ति को सच में खूब अभिनंदन। गुरुजी को जो पसंद है, वे जिससे राजी हैं ऐसे नियम-धर्म की मर्यादा में रह कर संप, सुहृदभाव, एकता से आप सब जो काम कर रहे हैं, इससे गुरुजी अच्छे रहते हैं। गुरुजी का दर्शन करके मुझे बहुत आनंद आया। बापा और काका ने दिल्ली को दी हुई भेंट हैं गुरुजी। वे यहाँ आने को नहीं मंजूर थे। काकाजी के प्रति उन्हें अप्रतिम प्रेम। ‘रसघन मूर्ति, तुझमां वृति’ भजन में गाते हैं कि प्रियतम जो कि गुरुजी हैं, उनका जो प्यारा है, उसे अपना प्यारा बना लें और अपना जो प्यारा हो उसे छोड़ दें। यही साधना है और कोई साधना नहीं करनी है।

शास्त्रीजी योगीजी महाराज ने अक्षरपुरषोत्तम उपासना का प्रवर्तन करके हम पर खूब कृपा की। राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर आए, वे प्रभु स्वरूप थे। राम की हाजिरी में हनुमान ने उन्हें भगवान के रूप में स्वीकारा और उनकी आज्ञा में रह कर पूरी वानर सेना को रावण के विलङ्घ कार्य में लगा दी। राम उन पर प्रसन्न हो गए। हम देखते हैं बंदर को तो सब भगाते हैं, क्योंकि तोड़-फोड़ करना ही उनकी प्रकृति है। ऐसे ही हनुमानजी रामचंद्र भगवान के योग और आज्ञा से पूरे जोश से साथीदारों को लेकर भगवान के कार्य में समर्पित हो गए। तो, बंदर में से भगवान बन गए। कहा जाता है कि दुनिया में सबसे ज्यादा मंदिर हनुमानजी के हैं, इतने बड़े बन गए। पर, राम के जाने के बाद कोई हनुमान नहीं बना, इसलिए वे परोक्ष हो गए। कृष्ण के समय में वृद्धावन की चरवाहे-गोपियाँ दूध-माखन बेचने वाले थे। उनको कोई शास्त्र का ज्ञान नहीं था, नहाने-धोने की भी सूझ नहीं थी। लेकिन कृष्ण से इतना प्रेम हो गया कि उन्हें भगवान का स्वरूप माना। जबकि ऋषि-मुनि संसार छोड़ कर, नदी के किनारे आश्रम बसा कर, सुबह से शाम स्वाहा-स्वाहा यज्ञ करने के बावजूद कृष्ण भगवान को पहचान नहीं पाए। बापा कहते थे कि वे सब ऋषि मथुरा में चौबे बन गए और गोप-गोपियाँ गोलोकवासी बन गए। वे जो बोले वही शास्त्र बन गया। क्योंकि उन्होंने प्रभु की पहचान की और उनकी आज्ञा-पसंद के अनुसार एकरूप होकर कार्य करने लगे। तो, भगवान की प्रसन्नता प्राप्त हो गई। अर्जुन ने भगवान की आज्ञा से हज़ारों लोगों का नाश किया-मार डाला, लेकिन वो कर्म उसे बंधनरूप नहीं हुआ। क्योंकि उसने कृष्ण को



88

भगवान के रूप में स्वीकार करके, उनकी आङ्गा से किया। यह उसका कर्मयोग बन गया और कर्म से जुड़े न रह कर निर्लेप रहा।

ऐसे ही स्वामिनारायण भगवान आए, तो उन्होंने सोचा कि राम-कृष्ण ने अपनी हाजिरी में खूब काम किया, लेकिन follow up नहीं हुआ। क्योंकि ऐसा कोई प्रगटीकरण नहीं था। स्वामिनारायण भगवान खुद अक्षरधाम लेकर आये। जिनके द्वारा खुद प्रगट रहने वाले हैं; ऐसे साधु को लेकर आए, जो गुणातीतानंदस्वामी थे। अपनी हयाती में महाराज ने कई जगह बताया कि गुणातीतानंदस्वामी हमारे रहने का अक्षरधाम है। एक जगह राठोड़ धाधल के यहाँ महाराज संतों के साथ डांडिया रास खेल रहे थे और संत भजन गा रहे थे—जहाँ सद्गुरु खेले वसंत... तो, महाराज ने मुक्तानंदस्वामी से पूछा कि ये भजन गा रहे हो, तो ऐसे सद्गुरु आज कौन हैं? वे बोले—आप हैं। तो महाराज बोले—हम तो स्वयं प्रभु हैं। फिर गुणातीतानंदस्वामी के तरफ छड़ी दिखा कर बोले ऐसे सद्गुरु तो ये ‘गुणातीतानंदस्वामी’ है। गोपालानंदस्वामी ने खुद बोला है कि महाराज ने कई जगह गुणातीतानंदस्वामी को मूल अक्षरब्रह्म का अवतार कह कर निर्देश किया था और कहा था कि हमारे रहने का अक्षरधाम हैं। महाराज ने यह भी कहा है कि ऐसे साधुओं के द्वारा पृथकी पर वे अखंड प्रगट रहेंगे।

श्रीमद् भागवत में कृष्ण भगवान ने अर्जुन से कहा— हे अर्जुन! भरतखण्ड में जब आत्मा को मानव देह मिलेगा, तब हम प्रगट होंगे, होंगे और होंगे ही। उनकी पहचान करना ही मानव का श्रेष्ठ कर्तव्य है। वो जब पहचान करेगा तब भवत बनेगा और कल्याण होगा। जीता में ऐसी बात बताइ। 500 परमहंस और 2000 संत थे, लेकिन उनमें गुणातीत अलग थे जिन्होंने सिर्फ प्रभु को रखा। संबंध में आने वालों को प्रभु में जोड़ा। प्रभु राजी हों ऐसी सूझ देते हुए बताया कि महाराज की आङ्गा में रहें। गुणातीतभाव जब मानव में प्रगटे, तो उसमें प्रभु प्रगट रहते हैं। इस सिद्धांत को अक्षरपुरुषोत्तम कहते हैं। राधाकृष्ण—राधा और कृष्ण, लक्ष्मीनारायण—लक्ष्मी और नारायण, इस तरह स्वामिनारायण—स्वामी और नारायण। अक्षरपुरुषोत्तम की यह बात भगतजी महाराज ने शास्रीजी महाराज से की और उन्होंने इसे विश्वव्यापी बनाया।

मानव जब से प्रगट हुआ है, तब से सुख की खोज में दौड़ रहा है। बापा दृष्टांत देते थे— गधा कभी दौड़ता नहीं है, चलता भी नहीं है। वह भार वाहक है, उस पर सब माल लाद कर ले जाते हैं। दस कदम चल कर वह खड़ा हो जाता है। फिर पीछे से दो डंडे मारो तब चलता है, इतना आलसी होता है। एक आदमी ने सोचा कि मैं गधों की दौड़ लगवाऊँ। तो, उसने घोषणा की कि कल 10 गधों को दौड़ायेंगे। गाँव वाले सोच में पड़ गए कि कैसे दौड़ायेंगे? गधा तो चलता भी



नहीं है, तो दौड़ेगा कैसे? पूरा गाँव यह देखने के लिए आया। 10 गधों को लाइन में खड़ा कर दिया। हर एक के सिर पर दांड़ी लगाई थी, जिसके आगे के सिरे पर गाजर लटका दी। गधे को गाजर परसंद होती है। 1, 2, 3 बोलने पर सब चलने लगे। दो फुट की दूरी पर गधे को गाजर दिखती, तो वह सोचता कि सामने गाजर है। उसे खाने के लिए दौड़ता। लेकिन लकड़ी के कारण दूरी तो उतनी ही रही। ऐसे दौड़ते हुए दौड़ पूरी हो गई। पर, गधे के मुँह में गाजर आई नहीं। इसी तरह वानर में से मानव हुए तब से सुख की खोज में दौड़ रहे हैं। *Science* की *technology* द्वारा इतनी सुख सुविधा प्राप्त की, पर अभी भी गाजर नहीं खाई, यानी सुख नहीं मिला। अभी भी मानव दौड़ ही रहा है। कितनी *research* करके दुनिया की शक्ल बदल डाली, लेकिन तब भी व्यक्ति वहीं का वहीं है, उसे सुख नहीं मिला। गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम उपासना द्वारा सुख की खोज समाप्त कर दी।

मानव यानी *physical body* तो है, पर एक *inner body* है। *Physical* की बहुत साज-सजावट करते हैं। *Soap-Shampoo* सब लगा कर साफ़ सुथरा रखते हैं। पर, भीतर एक *inner body* और एक *cause body* है, ऐसे **तीन शरीर हैं**।

1. ***Cause body***-कारण देह, जो जन्म-मरण के चक्रवृह में ले जाता है। वित्तेषणा, लोकेषणा—ये सब एषणा हैं।
2. ***Inner body*** यानी हठ, मान, ईर्ष्या के भाव और काम, क्रोधादिक दोष हैं।
3. जो हम **स्थूल body** देखते हैं। इसके द्वारा गुरुजी के साथ आत्मबुद्धि व प्रीति हो गई, तो *cause body* खत्म हो गई, जन्म-मरण के चक्कर में से आप सब निकल गए। **कोई भी desire**-एषणा नहीं रही। आत्मा में जो वासना होती है, वही जन्म-मरण के चक्कर में ले जाती है। प्रभु धारक संत में जुड़ जाने से, उनके साथ प्रीति होने पर जब वे कहते हैं कि जा तू मेरा... तो हमारे भीतर का कारण देह छूट जाता है...

हठ, मान, ईर्ष्या के भाव और काम, क्रोधादिक दोष जब तक *inner body* में से नहीं जाएँगे, तब तक आदमी सुखी नहीं बनेगा, नहीं बनेगा, नहीं बनेगा। *America, Russia, China* सब क्यों लड़ते हैं? उनके पास क्या खाने-पीने की कमी है? सुख-सुविधा की कमी है? लेकिन हठ, मान, ईर्ष्या का भाव और काम-क्रोधादिक दोष ही उनसे सब कराते हैं, अशांत बनाते हैं। **इसमें से बाहर निकलने के लिए क्या करें?** तो, शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम उपासना द्वारा हमें एक रास्ता बताया कि ये पकड़ने से भीतर में सब *pure* हो जाएगा। जो सुख ढूँढ़ रहे हैं,



वो अपने आप भीतर से प्रगट हो जाएगा। कहीं छूँढ़ने की ज़रूरत नहीं है, अपने अंदर ही है। **अक्षरपुरुषोत्तम उपासना यानी क्या?**

पहली बात— भगवान् सदा साकार हैं। जिस तरह हमारा मानव देह है, वैसे ही भगवान् भी मानव देह में हैं। मीन्स 'स' आकार है, आकार सहित हैं।

दूसरी बात— वे कर्ता-हर्ता हैं। मेरा जो कुछ हुआ है, हो रहा है और होगा वो मेरे इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान् कर रहे हैं। क्यों कर रहे हैं? क्योंकि भगवान् सदा हितकारी हैं। उन्हें हमसे लगाव है, इसलिए सदा हमारा हित चाहते हैं। हमारे लिए जो अच्छा होगा वही वे करेंगे। कोई लड़का पढ़ाई करता हो और फेल हो जाए। तब वो लड़का क्या बोलेगा कि मुझ पर भगवान् ने कृपा की कि मैं fail हो गया। किसी को व्यापार में बुक़सान हो, तो वो ये नहीं कहेगा कि मुझ पर भगवान् ने कृपा की। हमारी बुद्धि तर्क-निर्णय करती है कि fail, बुक़सान और बीमार होना यानी खराब। खूब मुनाफा, first class result आया यानी अच्छा हुआ। ये सब बुद्धि के ढंद हैं। वो ही pass-fail, पाप- पुण्य, मेरा-तेरा, धर्म- अधर्म तय करती है। पर, कर्ता-हर्ता प्रभु हैं। वे जो करते हैं, मेरे हित में ही करते हैं। सो जो होगा अच्छा ही होगा, ऐसा जो मानता है उसे कभी दुःख नहीं होता।

First Step प्रभु साकार हैं, फिर कर्ता-हर्ता और प्रगट व प्रत्यक्ष हैं। 'प्रति' और 'अक्ष' यानी आँखों के सामने कौन बिराजमान हैं? गुरुजी। जिन भगवान् को हमें पाना है, जिनकी प्रसन्नता प्राप्त करनी है, वे आज मेरे सामने विराजमान हैं। ये 'प्रगट' माना कहा जाए।

चौथा— उनके प्रति आत्मबुद्धि और प्रीति हो। मैं आपका और आप मेरे, ये भाव होना ही चाहिए। कहियों को Love at first sight हो जाता है, प्यार में पड़ जाते हैं, पर कहियों को नहीं होता। जो बुद्धिशाली हो, उसे ऐसा होता है कि इनमें भगवान् कैसे देखें? क्योंकि ये हैं तो इंसान। कृष्ण भगवान् के समय की बात सुनी होगी कि राजकुमारी रुक्मणी ने दासियों से बात सुनी कि आज वृद्धावन में कृष्ण स्वयं भगवान् हैं। ऐसी बातें सुनते-सुनते उनके भीतर हो गया कि कृष्ण प्रगट हैं-भगवान् है। तो, उन्होंने सोच लिया कि भगवान् मानव स्वरूप में प्रगट हैं, तो मैं शादी उन्हीं के साथ करूँगी, दूसरे किसी के साथ नहीं करूँगी—प्रतिज्ञा ले ली। हजारों साल पहले वो लड़की कितनी bold और powerful होगी कि पिता ने शादी के लिए जब लड़के के प्रस्ताव बताए, तो उसने मना किया और कहा कि मैं शादी करूँगी तो कृष्ण के साथ। पिता ने पूछा— कौन कृष्ण? उसने बताया कि वृद्धावन में जो रहता है वो। पिता बोले—तू राजकुमारी है, तेरी शादी राजकुमार से ही हो सकती है। वृद्धावन में जो कृष्ण है वो तो ज्वाला है, गाय चराता है। उसके साथ मेरी



88

लङ्ककी की शादी नहीं कर सकता, मेरी प्रतिष्ठा खतम हो जाएगी। पिता के मना करने पर उन्होंने कमरे में बैठ कर प्रार्थना की—हे कृष्ण परमात्मा, आप अगर भगवान हो तो मेरी प्रार्थना ज़रुर सुनना। उस समय टेलीफोन या मोबाइल नहीं था, लेकिन उन्होंने संकल्प करके प्रार्थना की कि मुझे आपके साथ ही शादी करनी है। मैं नहीं आऊँगी, आप मुझे यहाँ आकर रात में नहीं, दिन में ले जाओ। इतने दिल के भाव से उन्होंने प्रार्थना की कि हम जानते हैं कि कृष्ण परमात्मा ने लकिमणीजी का अपहरण किया और वे पटरानी बनी। उन्होंने सिखाया कि मानव स्वरूप में यदि भगवान दिखाई नहीं देते, तो प्रार्थना करो। आदमी को पैसे की ज़रूरत है, तो इधर-उधर जाकर कितना तूफान मचाता है। अगर एक पैसा प्राप्त करने के लिए सब कुछ करते हैं, तो जन्मों जन्म के चक्कर में से निकलने के लिए, इसी देह में सुख पाने के लिए-गुरुजी के अंदर प्रभु का भाव लाने के लिए प्रार्थना नहीं कर सकते? बंद कमरे में पूरी निष्ठा से यदि प्रार्थना करेंगे, तो गुरुजी में प्रभु का रूप दिखाई पड़ेगा, नज़रिया बदल जाएगा। वो कैरे? तो ये निमिषा सिंह को आगे आनंदी दीदी के पास बिठाया है। सबको लगा होगा कि अच्छी लङ्ककी होगी, इसलिए बिठाया है। पर, जब बताया कि ये Income Tax Commissioner हैं तो अब उसे अलग नज़रिए से देखेंगे। नरेंद्र मोदी ऐसे ही चलते जा रहे हों, तो कोई पहचानेगा नहीं कि कौन हैं? पर, जब बताएँगे कि भारत के प्रधानमंत्री हैं, तो 15 फुट की दूरी पर चलने लगेंगे! व्यक्ति की जब पहचान होती है, तो उनके प्रति का भाव बदल जाता है। जब तक पहचान नहीं होती है, तब उनके साथ आराम से बैठते-उठते हैं। यदि गुरुजी के प्रति भगवान का भाव हो जाए, तो वे वैसा दर्शन देंगे। तो, ऐसे सत्पुरुष से आत्मबुद्धि-प्रीति करना मानव जीवन का सर्वप्रथम ध्येय होना चाहिए और फिर सुख पाने की साधना शुरू होती है।

स्वामिनारायण भगवान ने वचनामृत प्रथम के 54 में बताया है कि सत्पुरुष मोक्ष का द्वार है। गुरुजी के साथ आत्मबुद्धि-प्रीति हो जाएगी, तो फिर हम मोक्ष के दरवाजे में घुस जाएँगे। फिर भीतर का purification कराने के लिए उनके पास दो हाथ जोड़ें और वे जो कहें वो करें। काकाजी ‘सत्यकाम जाबाल’ का दृष्टांत बहुत बार देते थे। सत्यकाम की माता ने उनसे कहा कि तेरे दादा-पिता सब ऐसे ही साधारण जीवन जीकर चले गए, अपनी आत्मा के लिए उन्होंने कुछ नहीं किया। पर तू अपनी आत्मा के कल्याण के लिए जीवन जीना। वो बोले कि क्या और कैसे करूँ? वो बोलीं कि एक संत ब्रह्मस्वरूप हैं, वो यदि तुझे स्वीकार कर लें, तो तू उनसे जुड़ जा और वो जो आझ्ञा करें उसके मुताबिक़ रहना। तेरा भीतर का बदलाव आ जाएगा, तू सुखी हो जाएगा। सत्यकाम जाबाल उस आश्रम में गया। 2-3 दिन तो गुरु ने उसकी ओर देखा ही नहीं।



इस तरह उसकी परीक्षा ले ली। फिर वो संत से बोला—मैं आपके पास आया हूँ, आप जो भी कहोगे वैसा करूँगा, मुझे आपके साथ रहना ही है। ऐसा दृढ़ निश्चय करके बैठा था। 5-6 दिन के बाद गुरु ने देखा के सच में इस लड़के को पाना है, तो उसे स्वीकार किया। उससे पूछा कि तुझे क्या करना है? वह बोला—मुझे अपनी आत्मा का कल्याण करना है और इसी जन्म में सुख, शांति और आनंद पाना है। संत ने गोशाला के संचालक को बुला कर कहा—इसे 400 गाय दे दो। फिर जाबाल से कहा—जब 1000 गाय हो जाए, फिर आना। हम हों तो बोलेंगे कि मैं यहाँ गाय चराने नहीं, ब्रह्मविद्या पढ़ने आया हूँ। **हमारी सोच में ब्रह्मविद्या यानी संस्कृत पढ़ना-कीर्तन गाना।** ये तो करना है ही, मगर सच्ची ब्रह्मविद्या तो ब्रह्मस्वरूप अवस्था के संत से जुड़ कर उनकी आङ्ग भी रहना है। 5-7 साल के बाद 1000 गाय होने पर आश्रम में प्रवेश करने से पहले ही उसके भीतर ज्ञान के अकूंठ फूट गए और सत्यकाम, सत्यकाम नहीं रहा। भीतर में सब कुछ बदल गया, वो उसे भी महसूस हुआ। गुरु की आङ्ग की फलश्रुति रूप *inner body change* हो गया। तो, गुरुजी की आङ्ग के रहने से ऐसा ही होगा। वे जो आङ्ग करें, उसके लिए हमें उन्होंने मना नहीं करना। महंतस्वामीजी, हरिप्रसादस्वामीजी, गुरुजी को देखो तो इन्होंने यही किया। हम इनका जन्मदिन मनाते हैं, तो उनका माहात्म्य बढ़ता है, लेकिन उन्होंने जो किया वो सामान्य लोग न कर सकें ऐसा किया।

गुरुजी को साधु बनने की इच्छा नहीं थी, उन्होंने काकाजी को मना कर दिया था कि भगवे कपड़े तो मुझे पहनने ही नहीं हैं। लेकिन बा का प्रेम मिला और उन्होंने बताया कि बापा जो बोले वो करना, तो तेरा काम हो जाएगा। तो इनके इस वचन पर विश्वास रखा। फिर बापा ने कहा 51 संतों की पंक्ति में जुड़ जाओ। तो, वो आङ्ग मान ली। योगी बापा जैसे ब्रह्मस्वरूप अवस्था के संत की आङ्ग मानी, तो स्वयं ब्रह्मस्वरूप बन गए... वे बापा की आङ्ग में रहे और उन्होंने कहा कि महंतस्वामीजी की आङ्ग में रहो। तो, उनकी आङ्ग में रह कर इतनी प्रसन्नता प्राप्त की कि भीतर का सब निकल गया। इसके लिए कुछ साधना नहीं करनी पड़ी। 1967 में जब काकाजी ने कहा कि आप दिल्ली जाओ। तब यहाँ कोई भक्त ही नहीं था। लेकिन ये और प्रेमस्वरूप दोनों आते। हमारे ब्रतधारी संत में से वल्लभभाई और बैरिस्टर भी आए। कहीं जाना-आना नहीं होता था, पर काकाजी के कहने पर रहे तो कितना बड़ा समाज और मंदिर बन गया। ये ब्रह्मस्वरूप अवस्था के साधु का दर्शन है। ऐसे संत हमें मिले हैं, तो उनमें दिव्यभाव रख कर, संप, सुहृदभाव, एकता से उनकी आङ्ग में रहना।



88

कितनी भी सुख-सुविधा, सत्ता, पैसा, मान-मरतबा मिले, मगर भीतर का आनंद और शांति तो प्रभु प्रसन्नता के बिना मिलती ही नहीं और वो प्रसन्नता अक्षरपुरुषोत्तम उपासना की समझ के बिना नहीं आयेगी। शास्त्रीजी महाराज की इस उपासना की बात से हमारे जीवन में परिवर्तन हुआ। ये होनहार लड़के-लड़कियाँ क्यों साधु बन गए? क्योंकि भीतर से उनका संसार छूट गया। गुरुजी के द्वारा प्रभु प्रगट हैं, उसका *confirmatory test* क्या? तो, उनके साथ रहने वाले, उनकी दृष्टि में आने वाले, आज्ञा में रहने वाले सबको साधुता प्राप्त होती है। ये राकेशभाई, विजयपालजी वगैरह संसारी-गृहस्थ हैं। काम पर जाते भी हैं, लेकिन समय मिलते ही गुरुजी के सान्निध्य में आ जाते हैं। तो, कहाँ संसार है? ये गुरुजी प्रभु के स्वरूप हैं, उसका दर्शन है। अक्षरपुरुषोत्तम उपासना में यही कहा है कि सत्पुरुष में आत्मबुद्धि व प्रीति और उनके संबंध वालों की सम्यक् निर्देषभाव-दिव्यभाव से, मन, कर्म और वचन से सेवा करो, तो प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त होगी। हठ, मान, ईर्ष्या के भाव और काम, क्रोधादिक दोष से रहित हो जाएँगे। फिर भीतर में शांति-सुख होगा। मानव जिस दौड़ में निकला है, वो दौड़ पूरी हो जाएगी। यहाँ सब जो बैठे हैं या गुरुजी के साथ जुड़े हैं, सब प्रभु के कृपा पात्र हैं। हमारे लिए ही काकाजी ने गुरुजी को धूनी जमा कर बिठाया है। आप लोगों को धन्यवाद है कि ऐसा मान कर आप गुरुजी की सेवा करते हो। शिष्य और गुरु इतने ओत-प्रोत हैं कि देख कर हमें आनंद आता है, शांति होती है। गुरुजी के सान्निध्य में रहते सुहृदस्वामी रिथर पुरुष हैं। एक-एक का जितना माहात्म्य गायें उतना कम है। आनंदी दीदी कितनी होनहार संत हैं। इनमें ऋ-पुरुष का भाव ही नहीं है। कोई अपना-पराया नहीं, सब मेरा है। गुरुजी के प्रति जिन्हें प्रेम हैं, वे सब मेरे हैं। दिल से एक की ही नहीं, सबकी care करती हैं। उनके सान्निध्य में रहती लड़कियाँ भी ऐसी ही बन गई... गुरुजी जब सांकरदा थे, तो अश्विनभाई, शांतिभाई, सब उनके साथ इकट्ठे होकर आनंद किलोल करते। गुरुजी वैसे बड़े *Jolly and very Genius* हैं। आदमी को देख कर पहचान जाए, फिर भी गुणातीत अवस्था में रहते हुए हमसे प्रेम करते हैं। ये उनका बड़प्पन है। उनमें दिव्यभाव रखेंगे, तभी हम पुण्यशाली बनेंगे और उनकी आज्ञा में रह कर जीवन जियें। उनकी प्रसन्नता द्वारा प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त करके सुख शांति, समृद्धि, आनंद के भोक्ता बनें, ऐसी हम पर सदा कृपा बरसायें यही प्रार्थना...

अगले दिन 18 दिसंबर की सुबह नाश्ता इत्यादि करने के पश्चात् 11:30 बजे के करीब चिदाकाश हॉल में विराजमान हुए। आज अक्षरज्योति की साधक पू. तुलसी का जन्मदिन था और दूसरे दिन यानि 19 दिसंबर को पू. नक्षत्र का 18वाँ जन्मदिन था। सो, पू. नक्षत्र ने बालिंग



होकर जीवन के नाए पङ्गाव में प्रवेश करते हुए संतभगवंत साहेबजी से आशीष याचना की। तब संतभगवंत साहेबजी ने उसकी डायरी में निम्न आशीर्वाद लिख कर पढ़े और साथ ही साधकों के लिए खूब उपयोगी मार्गदर्शन भी दिया—

परम पूज्य गुरुजी का अत्यंत लाङ्गला और दिव्य पुत्र परम पूज्य नक्षत्र...

तेरे 18वें प्रागट्य पर्व के हम सब अनुपम मिशन के संतों के अभिनंदन, जय श्री स्वामिनारायण। इस डायरी में तुझे परम पूज्य गुरुजी, परम पूज्य दीदी और संतों के जो आशीर्वाद मिले हैं, वो पढ़ते ही हरेक को महसूस होगा कि ये लड़का कितना भाग्यशाली है, पूर्व का साधु है। तेरे दादा नवीनभाई के कुटुंब ने शुरू से ही काकाजी के वचन से महिमा से सेवा की है, कसनी सह कर निर्दोषभाव से गुरुजी का समागम किया है। स्वामिनारायण भगवान ने अक्षरधाम से अपने प्रिय साधु को इस धरती पर नक्षत्र के रूप में भेजा। इसीलिए तो तू गुरुजी, दीदी और सभी संतों का लाङ्गला बना हुआ है। तू भी गुरुजी द्वारा श्री स्वामिनारायण भगवान का रहस्यमय शुद्ध अक्षरपुल्षोत्तम उपासना के कार्य में अपने जीवन को समर्पित करके अब तो समग्र सत्संग समाज का लाङ्गला बना हुआ है। काकाजी, गुरुजी, दीदी और संतों के आशीर्वाद हमेशा तेरे पर बरसते रहें और तू गुरुजी रूप बन कर अक्षरधाम के सुख से सुखी होकर वो सुख सबको बाँटे ऐसी तेरे जन्मदिन पर गुरुचरणों में- प्रभु चरणों में प्रार्थना।

तेरे ही अश्विनभाई, मनोजभाई, सभी संतों की ओर से साहेब के अभिनंदन, जय स्वामिनारायण।

हमें ख्याल नहीं आता पर इन संतों की सेवा का खूब परिणाम मिलता है। जगत में क्या है कि भगवान राजी हों तो पैसा, सत्ता और समाज में मान दें। हमारी परसंद का सब दें। भगवान बोलते हैं कि हाथ छूटी बला है (मतलब आशीर्वाद फिसल गए) ये सब चीज़ तो अपने आश्रितों को वे बिन माँगे भी देंगे ही। पर, प्रभु की प्रसन्नता हो तो ऐसा होता है। नवीनभाई को मैं शुरू से देखता हूँ। आज सुबह गुरुजी से कह रहा था कि अपने नवीनभाई दिख नहीं रहे। उतने में वो आ गए। गुरुजी यहाँ आए तब शुरूआत में नवीनभाई और कपड़े का व्यापारी वच्चराज ऐसे कुछ ही सेवक थे। उसमें नवीनभाई मुकितजीवनस्वामीजी के मंदिर में रेलवे की टिकिटों का काम करते थे। काकाजी ने इनको कहा कि गुरुजी की सेवा करना। गुरुजी जहाँ किराए पर रहते थे, वहाँ महेमानों को ठहराने की व्यवस्था नहीं थी। कोई भी महेमान आता, तो गुरुजी नवीनभाई को कहते। काकाजी के वचन से गुरुजी का वचन स्वीकार करके महेमानों को अपने यहाँ ठहराते। नाश्ता-पानी सब और निर्दोषभाव से गुरुजी की सेवा करते। तब इतने सारे भक्त नहीं थे। कसनी का कोई पार नहीं था। तकलीफें थी, काकाजी भी रिक्षा में घूमते थे। उस वक्त नवीनभाई



88

काकाजी को तो प्रभु का स्वरूप मानते ही थे, पर गुरुजी को भी प्रभु का स्वरूप मान कर जो उनकी आङ्गी में जिए, तो महाराज राजी हो गए और अक्षरधाम में से इस साधु को भेजा। महाराज की दी हुई भेंट है। जो ऐसा हो, वो गुरुजी का लाडला बन ही जाए ना, उसमें कहाँ प्रश्न है? नक्त्र भी भूले नहीं है कि महाराज ने उसे भेजा है। महाराज ने जो भी कार्य करने के लिए भेजा है, तो वही करे। फिर यहाँ की झँझट में न पड़ जाए। नवीनभाई के घर में गुरुजी केंद्र में हैं। उनके अतिरिक्त और कोई बात नहीं। ये पाठ मूल में से नक्श पढ़ा और गुरुजी के साथ लगाव हुआ। संसार तो था ही नहीं, गुरुजी को समर्पित होकर भगवान के कार्य में जुड़ गया। इसलिए जीवन धन्य हो गया। माँ-बाप की तरफ से *physical* देह मिला है। देह के भाव को भी *pure* करना हमारी साधना है। मैं नक्त्र जितना 17-18 साल का था, तब बापा का हाथ पकड़ के चल रहा था। बापा ने मेरे गाल पर हाथ फेरा। तब मुझे दाना हुआ था। उन्होंने पूछा—ये क्या हुआ है? मैंने कहा—दाना हुआ है। वे बोले—दाना नहीं है, जवानी फूटी है—ध्यान रखना। मैंने कहा—ध्यान आपको रखना है। तो बोले—आङ्गी पालना, महाराज रक्षा करेंगे। ऐसे तुझे जवानी फूटी है। गुरुजी को राजी करने का ही अनुसंधान रखेणा, तो जवानी जीत जाएगा। रजो गुण, तमो गुण और सत्त्व गुण में से रजो गुण *Young age* में *maximum* होता है। भजन-प्रार्थना करने का मन हो यानी सात्त्विक भाव है। अच्छा-अच्छा खाने, देखने, पहनने का मन हो तो रजो गुण प्रधान होता है। बस सोए रहना है, कुछ करना नहीं है—वो तमो गुण। 16 से 25 की उम्र को गधा पच्चीसी कहते हैं।

रजो गुण कैसे निकले? तो बापा 1951 में संस्था की गद्दी पर आए। उस वक्त माहौल ऐसा था कि बापा ब्रह्मस्वरूप साधु हैं, ऐसी किसी को समझदारी नहीं थी। एक ही गद्दी या रजाई बिछा कर उसी आसन पर बापा, मोटास्वामी, प्रमुखस्वामी एक-दूसरे से सट कर बैठ जाते। बापा के कपड़े भी देखें तो अगर पधारवनी में जाना हो, तो सिर पर कपड़ा लपेट कर तुरंत पाघ बना देते। पुरानी तस्वीरें देखें तो ऐसा हो कि बापा ऐसी परिस्थिति में खाना खाते थे? सारे पतीले आगे रख दिए और नीचे बैठ कर खुद लेकर खाते। जिसे अनुशासन कहा जाए, ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी। 1961 में जब संत बनाये, तो पूरा ढाँचा बदल गया। बापा के आसन पर इतना सुंदर ग़ालिचा बिछाया। पहली ही बार अलग से उनका आसन बनाया। पर, बापा वहाँ नहीं बैठे। बोले—हमको ये सब नहीं चाहिए, *simple* रखो, ग़ालिचा निकाल दो। फिर संतों ने उनसे प्रार्थना की कि आपने हमको साधु बना दिया, हम जवान हैं। सब 20-27 साल की उम्र की *range* के *College* में पढ़ कर आये थे। संत बोले—हम में पूरा रजो गुण है। महाराज ने कहा



है कि जो अच्छा है, वो गुरु के लिए उपयोग करो। गुरु की सेवा में समर्पित करो। तो आपके द्वारा वो निकल जाएगा। हमें बढ़िया से बढ़िया कपड़े, बढ़िया चीज़ें पसंद हैं। तो हम आपके लिए यदि इस रजो गुण का उपयोग करेंगे, तो हमारा रजो गुण निकल जाएगा या नहीं? बापा बोले—निकल जाएगा। फिर बापा आसन पर बैठे। तो, बेरस्ट में बेरस्ट जो तुम्हें पसंद हो, वो गुरुजी को देना। जो भी है वो मेरे गुरुजी के लिए है, ऐसा विचार यदि *youth* करें, तो रजो गुण टल जाए। रजो गुण का विशेष अपना आकर्षण-प्रलोभन है। वो रजो गुण छूट जाए, तो सब छूट जाए। नक्षत्र अब 18 साल का हुआ, तो संभलना। गुरुजी के सिवा कुछ पसंद नहीं आना चाहिए। पसंद आ जाए तो गुरुजी को बताना, उनके पास निष्कपट रहना कि मुझे ऐसा हुआ। फिर गुरुजी तेरे लिए प्रार्थना करेंगे। जितना निष्कपट होगा, उतना जल्दी *pure* हो जाएगा। किसी लड़की का विचार हो, तो भी गुरुजी को बता देना। ये हम अनुभव से कहते हैं। हम बापा को सब लिख कर दे देते थे, तो अंदर से निकल गया। समझा? गुरुजी के पास निष्कपट हों, तो अपने में से निकल जाए, उनसे कभी कुछ छुपाना नहीं। उनके पास *pure-clean* रहेंगे, तो जवानी जीती जाएगी।

साथ ही देह से थके बिना माहात्म्य से सेवा करना कि धन्य भाग, धन्य घड़ी कि मुझे ये सेवा मिली। सब कहते हैं भवित करनी है। पर, महाराज ने एक शब्द जोड़ा—माहात्म्य सहित। क्या फ़र्क है इससे? भवित यानी भगवान को राजी करने के लिए किया हुआ ‘कर्म’। उसमें माहात्म्य गाली भवित यानी क्या? तो बापा इसका दृष्टांत देते—

रोटी को मुलायम बनाने के लिए उसमें थोड़ा-सा मोयन डाला जाता है। मोयन के बिना बनाई रोटी को दो हाथ से तोड़नी पड़ती है और सख्त होती है। मोयन डाली हुई रोटी खाने में मज़ा आता है। ऐसे ही माहात्म्य रहित भवित बिना मोयन की रोटी जैसी है। माहात्म्य की भवित यानी मुझे महाराज, गुरुजी, दीदी की प्रसन्नता प्राप्त करने का मौका मिला! महिमा के ऐसे विचारों के साथ सेवा करोगे, तो बोरियत नहीं होगी, थकान-भूख नहीं लगेगी, नींद नहीं आयेगी। उत्साह, उमंग, नित नया ताजी सलाम! इसका दृष्टांत बताता हूँ। गोड़ल मंदिर बन रहा था, तो शाल्वीजी महाराज ने बापा को वहाँ का महंत बनाया। तब भारत आज़ाद नहीं हुआ था। गोड़ल स्टेट था और राजा का Head Quarter था। तो, उन्हें मिलने जाना पड़ता था, क्योंकि उन्होंने ही ज़मीन दी थी। राजा को ये ज़रूर था कि बहुत अच्छा साधु है, पर बापा की इतनी महिमा नहीं थी। तो, बापा उनसे मिलने जाएँ और वे meeting कर रहे हों, तो बापा को बाहर waiting Lounge में बैठना पड़ता। तब electricity भी नहीं थी, तो बड़ा घंट जब बजता, तो चपरासी



88

अंदर जाता और राजा को सबसे पहले *salute* करके पूछता कि क्या काम है साहब? फिर राजा उसे कहता कि जाओ, ये काग़ज़ ले आओ। फिर वो दोबारा सलाम करके काग़ज़ देता। बापा *observer* थे, वे देखते कि सुबह-शाम या रात भी चपरासी एकदम *tight* होकर *salute* मारता है। वर्ना हम *traffic police* को देखते हैं कि सुबह के समय तो एकदम जोरदार हाथ से झशारे करेगा। फिर दोपहर तक ढीला ढाला और दो बजे बाद में तो सिर से ही करेगा, ऐसा थक जाएगा कि हाथ भी नहीं हिलाएगा और फिर शाम को पैरों से करेगा और 6 बजे के बाद तो नीचे ही उतर जाता है। पर बापा कहते—वो राजा के पास जो चपरासी था, उसकी पूरे दिन वैसी की वैसी सलाम। क्यों? क्योंकि राजा अगर देखे कि ये ठीक सलाम नहीं मारता, तो उसे निकाल देगा, वेतन नहीं मिले। इसलिए बापा कहते—हमें ताजी सलाम करना। जब भी सेवा करें, तो दौड़ना। जब भी बुलाएँ, तो तुरंत जाना। ये नहीं कि अरे! जाता हूँ थोड़ा रुक कर, क्या जल्दी है? ये ताजी सलाम कब रख पाएगा? अगर माहात्म्य होगा! जैसे ताजी सलाम से राजा को राजी करने का माहात्म्य चपरासी को था। पुलिस को तो तनख्वाह के साथ लेना-देना, इसलिए उसकी ताजी सलाम नहीं थी। ऐसे ही अंदर भगवान को राजी करने का भाव हो तो नित नया-नौतम दर्शन हो। तो ऐसा माहात्म्य रखना। पूर्व के हैं, साधु हैं, भगवान ने गुरुजी के पास कार्य करने के लिए भेजा है। पर, माँ बाप से *Physical Body* मिला है, उसका *transformation* करना है। देहभाव से परे होना ही साधना है। तो गुरुजी को छोड़ कर, उनको जो नापसंद हो ऐसी कोई बात में *interest* नहीं लेना। कहीं जाना है, तो गुरुजी को बोल कर जाना। गुरुजी ‘हाँ’ बोलें, तो जाना। कुछ खाना है, तो गुरुजी को बोल के खाना। केन्द्र में वे होने चाहिए। उनके बिना मुझे कुछ भी नहीं करना, ऐसा होगा तो तू देहभाव से परे हो जाएगा। तेरे पर गुरुजी खूब प्रसन्न हैं। तो अब जाग्रत रहना। जाग्रत तू है ही और माहोल भी ऐसा है कि जाग्रत रहने में तुझे कष्ट नहीं होगा। सहजता से रह पाएगा। क्योंकि हर तरफ से तुझे बल-प्यार मिलता है। तो, हँसते-खेलते हुए गुरु रूप बन जाएगा। गुरुजी के कार्य को *continue* करने आए हैं, ऐसी समझ से जीना।

दोपहर को भोजन करने के पश्चात् संतभगवंत साहेबजी ने पू. राकेशभाई एवं सेवक पू. विश्वास से भजन सुने और फिर गुरुहरि योगीजी महाराज की निम्न स्मृति करते हुए निमंत्रण दिया—

2 फरवरी को वसंतपंचमी पर बड़ोदा का उत्सव मनायेंगे। 1965 में अटलादरा में 5-6 फरवरी दो दिन शास्त्रीजी महाराज का शताब्दी पर्व मनाया था, तब गुरुजी भी आए थे। तब में M.Sc.



में पढ़ता था। बापा की आज्ञा से पहली बार youth convention और बहुत बड़ा उत्सव हुआ था। फिर संस्था का पहला organised जो उत्सव हुआ, उसमें महंतस्वामी और कई संत involved थे। बापा की आज्ञा से 250 youth as volunteer आए थे। सबने बहुत अच्छी व्यवस्था की थी। 4 फरवरी को बापा बड़ौदा में पथरावनी के लिए निकल रहे थे। बापा के दर्शन करने के लिए हम विद्यानगर के youth line में खड़े हो गए। मैं आखिर में खड़ा था। बापा की गाड़ी निकल रही थी कि गाड़ी रुकवा कर उन्होंने मुझसे कहा कि पीछे की गाड़ी में तू बैठ जा, मेरे साथ चलना है। 3-4 पथरावनी करने के बाद पूरा क्राफिला बड़ौदा मांडवी रोड से गुज़र रहा था। मांडवी गेट स्टंभों पर खड़ा है और ऊपर घड़ी लगी है। बापा बोले—सब गाड़ियाँ वहाँ ले लो। सारी गाड़ियाँ गेट के अंदर खड़ी रखी। बापा बाहर निकल कर आए, तो सब उतर गए। प्रमुखस्वामी और महंतस्वामी भी साथ थे। फिर स्तंभ गिनते-गिनते बापा एक पिलर के पास खड़े रहे और बोले कि महाराज नीलकंठ वर्णी के रूप में जब निकले थे, तब बड़ौदा होकर लोज गए थे। इस पिलर के नीचे एक रात रहे थे। तब वर्णी किसी के घर में नहीं रहते थे। पेड़ के नीचे या ऐसे ही रहते थे। तो वे इस खंभे के नीचे पद्मासन में बैठे थे और सोए भी नहीं थे। तब बड़ौदा में इतनी population नहीं थी। इस पिलर के सामने एक ब्राह्मण का घर था। महाराज इतने तप की मूर्ति थे कि उनका तेज देखकर ब्राह्मण की पत्नी को हुआ कि ये कोई बड़े साधु हैं। उसने सोचा कि शाम से बैठे हैं, कुछ खाया-पिया नहीं है। तो उसने महाराज को फल दिए। महाराज ने फल लेकर उसे आशीर्वाद दिया। तो उनके घर नक्षत्र जैसा लड़का हुआ। वो आगे जाकर 'शुक मुनि' बने।

गोपाळानंदस्वामीजी द्वारा बड़ौदा के राजा को सत्संग हुआ था। तो राजा ने महाराज को बुला कर, उनके स्वागत में भव्य शोभायात्रा निकाली थी। शोभायात्रा से पहले महाराज उस स्तंभ के पास दोबारा बैठे थे। सो, बापा ने बोला कि आगे जाकर इन सब स्तंभों में किसी को पता नहीं चलेगा कि प्रसादी का वो स्तंभ कौन-सा है। तो, महंतस्वामीजी को बोला कि इस पिलर पर लिखने का कोई साधन नहीं था, इसलिए महंतस्वामीजी ने पेंसिल से बापा के कहे वही शब्द लिख दिए। फिर गाड़ी में बैठे कर हम सब निकले। गाड़ी में आगे बैठे ईश्वरभाई देसाई को बापा ने दूसरी गाड़ी में भेज दिया और कहा कि जसु मेरी गाड़ी में आएगा। ऐसा कह कर मुझे अपनी गाड़ी में बिठा लिया।

आगे जाकर अटलादरा के नज़दीक रेलवे फाटक पर गाड़ी रुकवाई और बापा नीचे उतरे। वहाँ



88

अचानक उन्होंने दंडवत् किया और उन्हें देख कर सबने दंडवत् किया। फिर बापा

बोले—गोपालानंदस्वामीजी जब अष्टांग योग की साधना करते थे, तब उमरेठ और कलाली इन दो गाँवों में आते थे। भगतजी महाराज के तो वे गुरु थे। तो, भगतजी महुआ से पैदल चल कर कलाली आते और स्वामी के पास सत्संग करके फिर रात को यहाँ आकर महादेव के सामने सो जाते, यह वो प्रसादी का स्थान है। बापा ने दूसरी बात यह बताई कि (विक्रम संवत् महा शुक्ल 5) (3 फरवरी) 1949 में शास्त्रीजी महाराज का 85वाँ प्राकट्य दिन मनाया, तब भक्तों ने उनकी स्वर्ण तुला की थी। मणिभाई सलाह वाले महाराजा का हाथी ले आए थे। उस पर शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज और निर्गुणस्वामीजी को बिठा कर गाँव में घुमाने का सोचा, लेकिन जगह ऐसी नहीं थी कि उसे घुमाया जा सके। तब शास्त्रीजी महाराज ने कहा—चलो, मैं जो रास्ता दिखाता हूँ वहाँ ले लो। अटलादरा मंदिर से घूम कर शोभायात्रा इस स्थान पर पहुँची थी। शास्त्रीजी महाराज और सबने यहाँ उतर कर दंडवत् किया-प्रार्थना करके फिर हाथी पर बैठ कर वापिस मंदिर गए। यह सब बता कर बापा ने कहा कि ये महाप्रसादी का स्थान है। फिर मुझे कहा कि स्तंभ पर तो महंत स्वामी ने पेंसिल से लिखा था, वो मिट जाएगा। वहाँ मार्बल की तख्ती लगानी है और यहाँ पर ये सारी बात लिख कर एक चबूतरा बनाना ताकि सब दर्शन करें। ये दो काम करना। फिर उनके हाथ पर कलावा बंधा था, वो निकाल कर मुझे दिया और कहा कि इसे हमेशा अपनी जेब में रखना। (संतभगवंत साहेबजी ने तुरंत अपनी जेब में वह कलावा निकाल कर दिखाते हुए कहा) तब से यह मेरी जेब में है। ऐसी आङ्गा के पीछे सत्पुरुष बल भी देते हैं। 1966 में हम संस्था से विमुख हुए, पर मुझे याद था कि बापा ने ये दो आङ्गा की है। इसलिए अश्विनभाई, शांतिभाई से कहा कि भले ही हम विमुख हुए, लेकिन बापा की आङ्गा का पालन तो करना ही है। फिर उस जगह पर देखने के लिए हम दोबारा बड़ौदा गए। तो, वहाँ सब खेत ही थे। हम गाड़ी में जा रहे थे, तब मैंने देखा कि एक आदमी खड़ा है, वो विद्यानगर engineering college के ही student रहे चुके थे और हमारी गुरु सभा में आते थे। मैंने गाड़ी लकवा कर पूछा—कांतिमामा आप यहाँ क्यों खड़े हो? किसी को हूँढ़ रहे हो? वे बोले नहीं—पीछे Geb Colony-Staff Quarters बन रहे हैं। उसका contract मुझे मिला है। यहाँ से पाँच मिनिट की दूरी पर बापा की बताई जगह थी। तो मैंने कांतिमामा से कहा कि मेरे साथ चलो। फिर वहाँ जाकर बताया कि हमें यहाँ ऐसा बनाना है। आपका काम चल रहा है, आपके पास सब सामान है तो आप यह बना दो। जो क्रीमत होगी, हम दे देंगे। वे बोले—कैसी बात करते हो, बापा मेरे भी गुरु हैं, मैं बना दूँगा। फिर Architect ने जैसा plan दिया, वैसा



उन्होंने बना दिया। उसकी *opening* होने के बाद इतनी बारिश हुई कि चबूतरा गिर गया, ऐसी हमें खबर मिली। फिर से *plan* बनाया और बड़ौदा के *Commissioner* पहचान वाले थे। वे बोले— हमारी सम्मति है, आप इसे बनाओ। तब भी गुरुसभा में आने वाला एक लड़का वहाँ *industry* बना रहा था। उसने कहा कि मैं चबूतरा बना दूँगा। अच्छे *design* का बना उसकी *opening* भी *Commissioner Saheb* की हाज़री में बहुत बड़ी सभा करके की। थोड़े साल बाद वहाँ *over bridge* बनाने के कारण वह निकाल दिया। बड़ौदा मंडल ने उसके बारे में बताया, तो फिर से हमने पहचान के नए *Commissioner* से बात की, तो उसने भी कहा कि आप बनाओ। फिर वंदे भारत ट्रेन के डिब्बे बनाने वाले कोलकता के शंकर-गोविंद ने कहा कि सब पैसा में दूँगा, पर इसे अच्छी तरह बनाओ। फिर हमारे एक *builder* उर्मिल को *contract* दिया। उन्होंने इतना अच्छा बनाया है कि सबको हुआ कि अब यहाँ संगमरमर की प्रतिमा स्थापित करनी है। उसे 'भगतजी तीर्थ' नाम दिया है। सबको उसका बहुत उत्साह है। तो, पहले ब्रह्मज्योति में 500 लोग यज्ञ करेंगे और 4 फरवरी को वहाँ मूर्ति स्थापित करेंगे। क्योंकि उसी दिन बापा ने आज्ञा की थी। 3 फरवरी को काकाजी का साक्षात्कार दिन भी मनायेंगे। क्रीब 3:30 बजे वे airport के लिए रवाना हुए। तब प.पू. गुरुजी भी उन्हें छोड़ने के लिए airport गए और रात को 8:00 बजे तक मंदिर लौटे। यूँ भले ही थोड़े समय के लिए संतभगवंत साहेबजी दिल्ली मंदिर आए, लेकिन मुक्तों के अंतर को दिव्याशिष से खूब भर कर गए!

ब्रतेत्सवसूची

- (1) दि. 26.3.'25, बुधवार — एकादशी, ब्रत
- (2) दि. 30.3.'25, रविवार — चैत्र नूतन वर्षार्ंभ, गुड़ी पड़वा
- (3) **दि. 6.4.'25, रविवार** — **श्री राम नवमी, भगवान खामिनारायण जयंती**
- (4) दि. 8.4.'25, मंगलवार — एकादशी, ब्रत
- (5) दि. 12.4.'25, शनिवार** — **पूर्णिमा, हनुमान जयंती**
- (6) दि. 13.4.'25, रविवार** — **बैसाखी, दिल्ली-अशोकविहार मंदिर का शिलान्यास दिन**
पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी के भागवती दीक्षा दिन की
40वीं वर्षगांठ
- (7) दि. 24.4.'25, गुरुवार — एकादशी, ब्रत
- (8) दि. 30.4.'25, सोमवार — अखात्रीज



Bhaav Samadhi



APSM

Install Our Mobile Applications

Bhaav Samadhi - APSM

This app contains...

Arti, Bhajan, Swaroop Dhun
Mahapooja Shlok
Vachanamrut, Swamini Vato
H.D. Kakaji Maharaj's Blessings
P.P. Guruji's Blessings



This app contains...

Calender, Murti Darshan,
Function Photo & Video
Mandir Books
Patrika - Delhi (Bhagwat Kripa)
Powai (Snehal Sindhu)



Most of you must be getting Mandir Information Messages about Functions, Events And Sabha, on **WhatsApp**.

Those who are not getting please save this number
7011521488

Save the above number by name –
Our Temple Updates

After saving, please send Jay Swaminarayan message on the above number and mention your name also.
Thanks!

आप में से अधिकांश मुक्त WhatsApp द्वारा मंदिर में हीते उत्सवों, कार्यक्रमों एवं सत्संग सभाओं की सूचना प्राप्त करते होंगे।

यदि किसी को ये सूचनायें नहीं मिलतीं, तो कृपया **7011521488**

नंबर को **Our Temple Updates** के नाम से save कर लें और एक बार अपने नाम के साथ इस नंबर पर जय स्वामिनारायण का संदेश भेज दें।
धन्यवाद!



मन में कोई विचार उठे
तो, उस पर अमल करने से पहले
सर्वप्रथम प्रार्थना करके प्रतीक्षा करें
फिर साक्षीभाव से स्मृति करें
और उसके बाद ही कदम बढ़ाएँ!

